INDIAN HISTORY & CULTURE

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति

Preface of the book

भारत की समृद्ध विरासत, संस्कृति और इतिहास के जीवंत टेपेस्ट्री में एक अनन्वेषित खजाना निहित है जिसने हमारे राष्ट्र के सार को आकार दिया है। जैसा कि हम प्रगति और परंपरा के चौराहे पर खड़े हैं, उन बहुआयामी आयामों को समझना अनिवार्य हो जाता है जिन्होंने हमारे अतीत को आकार दिया है और हमारे वर्तमान को प्रभावित करना जारी रखा है। कोठारी संस्थान इंदौर द्वारा सावधानीपूर्वक तैयार और संपादित "भारतीय कला, संस्कृति और इतिहास" पुस्तक, मिशन टॉप क्लास रोजगार के इच्छुक उम्मीदवारों के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में उभरती है, जो "**संविधान को जाना, भारत को पहचानो**" के दूरदर्शी लक्ष्य के साथ संरेखित है।

राष्ट्र के लिए एक कुशल और सूचित कार्यबल के निर्माण की खोज में, यह पुस्तक ज्ञान और अंतर्दृष्टि के एक प्रकाश स्तंभ के रूप में खड़ी है। इसका उद्देश्य "मेगा प्रतियोगिता **बने भारत भाग्य निर्माण**" के भव्य दृष्टिकोण से मेल खाता है, जो हमारे महान राष्ट्र के भाग्य को आकार देने में व्यापक शिक्षा के महत्व को रेखांकित करता है। **राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 के सिद्धांतों में गहराई से निहित, और एनसीईआरटी द्वारा निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रम के साथ सावधानीपूर्वक संरेखित यह पुस्तक हर महत्वाकांक्षी शिक्षार्थी के लिए एक अनिवार्य साथी बनने के लिए तैयार है।**

KOTHARI PUBLICATION LLP

अनुक्रमणिका

क्र.सं	अध्याय	पृष्ठ सं
1.	1 हड़प्पा सभ्यता	2 - 11
2.	वैदिक साहित्य के बारे में संक्षिप्त इतिहास-	12- 14
3	महाजनपदों की मुख्य विशेषताएं	14-22
4.	गुप्त काल: कला और संस्कृति	23-25
5.	दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश	26- 33
6.	एलीफेंटा और एलोरा की गुफाएँ	34-38
7.	बुद्ध के जन्म से संबंधित बौद्ध साहित्य और कहानियाँ	39-40
8.	8.नालंदा विश्वविद्यालय का ऐतिहासिक महत्व	41-45
9.	जैन धर्म और उसकी परिषद	46-49
10	भारत में ब्रिटिश शासन	50-59
11।	छोटा सा भूत 1857 के विद्रोह से जुड़े नेता	60 - 62
12.	राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी की भूमिका	62-72
13.	धन निष्कासन सिद्धांत - पृष्ठभूमि - दादाभाई नौरोजी	72-78
14	सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों का परिचय, राजा राम मोहन राय	78-86
15	नमक सत्याग्रह, 1930	87-90
16	भारत छोड़ो आंदोलन, 1942	91-98
17.	भारतीय राष्ट्रीय सेना और युद्धोपरांत राष्ट्रवादी विद्रोह	99-100
18.	महान स्वतंत्रता सेनानी	100-122

कोठारी प्रकाशन एलएलपी

1.हड़प्पा सभ्यता

हड़प्पा सभ्यता को **सिंधु घाटी सभ्यता के नाम से** भी जाना जाता था। सिंधु घाटी सभ्यता के महत्व का सबसे महत्वपूर्ण साक्ष्य हड़प्पा नामक स्थान पर खुदाई के दौरान मिला। तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व की दूसरी छमाही में सिंधु घाटी कला प्रमुखता के साथ उभरी।

हड़प्पा सभ्यता को उपमहाद्वीप में 4,700 साल पुरानी सभ्यता माना जाता है, जिसकी खोज 1920 में हुई थी। हड़प्पा, लोथल, धोलावीरा , मोहनजोदड़ो और कालीबंगन को हड़प्पा शहर के रूप में जाना जाता है और इनकी खोज सिंधु नदी के आसपास की गई थी, इसलिए इसका नाम सिंधु घाटी सभ्यता पड़ा।

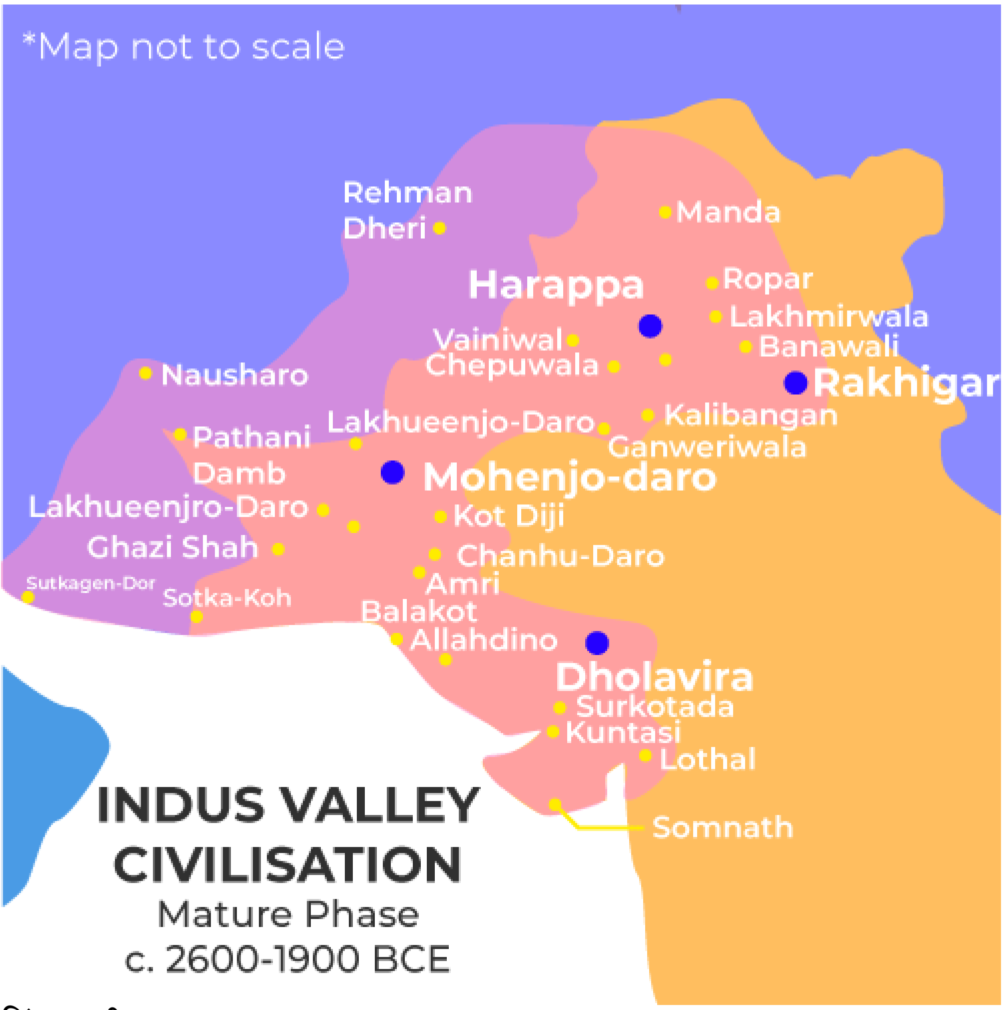

सिंधु घाटी सभ्यता

हड़प्पा की सभ्यता

- हड़प्पा सभ्यता सिंधु घाटी सभ्यता का पर्याय है, जो भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में उत्पन्न हुई थी।

- इसे हड़प्पा इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस सभ्यता की खोज सबसे पहले 1921 में पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) में स्थित हड़प्पा के आधुनिक स्थल पर हुई थी।
- हड़प्पा की खुदाई 1921 में दयाराम साहनी ने की थी जबकि मोहनजो-दारो की खोज 1922 में आर. दास बनर्जी ने सिंध के लरकाना जिले में की थी। कहा जाता है कि 12,99,600 वर्ग किमी में फैली इस सभ्यता का आकार त्रिकोणीय था।

सिंधु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

हड़प्पा सभ्यता के कुछ महत्वपूर्ण स्थलों में धोलावीरा , मोहनजोदड़ो , गनवेरीवाला , लोथल और सुरकोटदा शामिल हैं । हड़प्पा सहित कालीबगान आदि। कुछ महत्वपूर्ण और प्रमुख हड़प्पा स्थलों का उल्लेख नीचे दिया गया है:

1. **धोलावीरा और लोथल** गुजरात में स्थित हैं ।
2. **बालाथल और कालीबंगन** राजस्थान राज्य में स्थित हैं ।
3. **राखीगढ़ी** हरियाणा में स्थित है।
4. **रोपड़** एक अन्य स्थल है जो वर्तमान में पंजाब में स्थित है।

हड़प्पा सभ्यता: भौगोलिक विस्तार

इसमें पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान, जम्मू और कश्मीर के कुछ हिस्से और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किनारे शामिल हैं।

1. **पश्चिमी सीमा:** मकरान तट पर सोत्का- कोह और सुत्कागेन -डोर।
2. **पूर्वी सीमा:** यूपी में बड़गांव , मानपुर और आलमगीरपुर
3. **उत्तरी सीमा:** जम्मू में मांडा और पंजाब में रोपड़।
4. **दक्षिणी सीमा** : महाराष्ट्र में दैमाबाद और गुजरात में भगतराव ।

250 हड़प्पा स्थलों में से केवल **छह हड़प्पा स्थलों को** शहर माना जाता है।

1. हड़प्पा: **पंजाब**
2. मोहनजो-दारो: **सिंध** ।
3. चन्हु-दारो (**सिंध में मोहनजो-दारो से 130 किमी दक्षिण में)।**
4. लोथल: **गुजरात**
5. कालीबंगा **उत्तरी राजस्थान**
6. बनावली : **हिसार, हरियाणा**

टिप्पणी: बनावली और कालीबंगन में दो पूर्व-हड़प्पा और हड़प्पा सांस्कृतिक चरण देखे गए।

- सभ्यता की **राजधानी हड़प्पा और मोहनजो-दारो थी**
- **बंदरगाह शहर** लोथल, सुत्कागेंडोर , अल्लाहदीनो , बालाकोट और कुंतासी थे ।

हड़प्पा सभ्यता के चरण

सभ्यता को मूलतः तीन चरणों में विभाजित किया गया है:

- प्रारंभिक हड़प्पा चरण (3300 ईसा पूर्व से 2600 ईसा पूर्व)
- परिपक्व हड़प्पा चरण (2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व)
- उत्तर हड़प्पा चरण (1900 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व)
- काठियावाड़ प्रायद्वीप (गुजरात) के रंगपुर और रोजडी में पाया जाता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता की मूल विशेषताएँ

हड़प्पा सभ्यता की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं नीचे सूचीबद्ध हैं:

हड़प्पा सभ्यता: नगर नियोजन

नगर दो भागों में बँटा हुआ था। एक भाग ऊंचा **गढ़ था** जहां शासक रहते थे, निचले शहर के दूसरे भाग में शासित और गरीब रहते थे। मोहनजो-दारो और हड़प्पा का अपना गढ़ था:

1. शहरों में घर **ग्रिड पैटर्न का पालन करते थे।**
2. निर्माण में **पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया।**
3. भूमिगत **जल निकासी व्यवस्था (** धोलावीरा में विशाल जल भंडार पाए गए)

हड़प्पा सभ्यता: कृषि

निष्कर्षों के अनुसार, कृषि हड़प्पा सभ्यता की रीढ़ थी। नवंबर के समय में बुआई होती थी.

1. **कोई कुदाल या हल की** खोज नहीं की गई है, लेकिन कालीबंगन में खाल की खोज की गई है।
2. हड़प्पावासी **लकड़ी के फाल का प्रयोग करते थे।**
3. बलूचिस्तान और अफगानिस्तान के कुछ हिस्सों में बांधों से घिरे गबरबैंड या नाले मौजूद थे।
4. **नहर सिंचाई** अनुपस्थित प्रतीत होती है।
5. **गेहूँ, जौ, मटर, तिल और सरसों** उगाते थे।
6. **लोथल लोग चावल** उगाते थे।
7. मोहनजोदड़ो और हड़प्पा दोनों में और संभवतः विशाल अन्न भंडार पाए गए थे **कालीबंगन .**
8. ऐसा माना जाता है कि **सिंधु लोग** कपास का उत्पादन करने वाले सबसे पहले लोग थे।

हड़प्पा सभ्यता: जानवरों को पालतू बनाना

- वहाँ पशुपालन की उपस्थिति थी। **बैल, भैंस, बकरी, भेड़ और सूअर** ऐसे जानवर थे जिन्हें पालतू बनाया जाता था।
- हड़प्पावासी **कूबड़ वाले बैलों को पसंद करते थे।**
- **कुत्तों और बिल्लियों को** पालतू बनाया गया।
- **गधे और ऊँट** ऐसे जानवर थे जिनका उपयोग बोझ उठाने वाले जानवर के रूप में किया जाता था।
- घोड़ों को पालतू बनाने के साक्ष्य सतही तौर पर मोहनजोदड़ो और लोथल से मिलते हैं। घोड़े के अवशेष सुरकोटदा से प्राप्त हुए हैं। लेकिन हड़प्पावासियों के बीच घोड़ा नियमित उपयोग में नहीं था।
- हड़प्पावासी **हाथियों** और **गैंडों को भी जानते थे।**

नोट: गुजरात में हड़प्पा के लोग चावल का उत्पादन करते थे और हाथियों को पालते थे।

हड़प्पा सभ्यता: प्रौद्योगिकी और शिल्प

1. हड़प्पा संस्कृति कांस्य युग की थी।
2. हड़प्पावासी **तांबे के बारे में जानते थे** और इसे राजस्थान की खेतड़ी तांबे की खदानों द्वारा लाया गया था।
3. हड़प्पा समाज में कांस्य लोहार कारीगरों का एक महत्वपूर्ण समूह थे।
4. बर्तन और चित्र बनाये गये।
5. कुल्हाड़ी, आरी, चाकू और भाले जैसे उपकरण और हथियार तैयार किए गए।
6. मोहनजो-दारो से **बुने हुए कपास** का एक टुकड़ा बरामद किया गया था और कई वस्तुओं पर कपड़े के निशान भी पाए गए थे।
7. कताई के लिए स्पिंडल व्होरल का उपयोग किया जाता था।
8. ईंटों की विशाल संरचनाएँ पाई गईं, जिनसे पता चलता है कि ईंट बनाना एक महत्वपूर्ण शिल्प था।
9. **नाव बनाने का** भी अभ्यास किया जाता था।
10. **सील बनाना** और टेराकोटा निर्माण शिल्प के लिए महत्वपूर्ण थे।
11. आभूषण बनाने के लिए चाँदी, सोना और बहुमूल्य वस्तुओं का उपयोग किया जाता था, मनके बनाना भी वहाँ मौजूद था।
12. कुम्हार के चाक द्वारा बनाये गये मिट्टी के बर्तन

हड़प्पा सभ्यता: व्यापार और वाणिज्य

1. मोहनजो-दारो, हड़प्पा और लोथल धातु विज्ञान और औजारों और हथियारों के उत्पादन के साथ-साथ बरतन के महत्वपूर्ण केंद्र थे।
2. अरब सागर के तट पर नौवहन का अभ्यास किया जाता था।
3. हड़प्पावासियों के राजस्थान, अफगानिस्तान और ईरान के साथ अच्छे व्यापारिक संबंध पाए गए हैं
4. मेसोपोटामिया में विदेशी व्यापार फल-फूल रहा था।

हड़प्पा सभ्यता: राजनीतिक और धार्मिक प्रथाएँ

- हड़प्पा स्थल पर मंदिर के कोई चिन्ह नहीं मिले हैं। महान स्नानागार को छोड़कर, कोई धार्मिक संरचना नहीं मिली है।
- लोथल गुजरात में अग्नि पंथ प्रथाओं का संकेत मिला है।
- अनेक टेराकोटा मूर्तियाँ मिली हैं। (एक मूर्ति में एक महिला के भ्रूण से पौधा उगता हुआ दिखाया गया है, जिसे पृथ्वी की देवी माना गया था।)
- एक मुहर पर पुरुष देवता का प्रतिनिधित्व किया गया था। इस देवता के तीन हाथ और सींग हैं। इस देवता को एक योगी की बैठी हुई मुद्रा में, एक पैर दूसरे पैर पर रखकर दर्शाया गया है।
- वह अपने सिंहासन के नीचे एक हाथी, एक बाघ, एक गैंडे और एक भैंस से घिरा हुआ है। उनके चरणों में दो हिरण दिखाई देते हैं। इसका स्वरूप पशुपति महादेव से मिलता जुलता है।

- हड़प्पा में पूजा से संबंधित पत्थर से बने लिंग और स्त्री यौन अंगों के अनेक चिह्न मिले हैं।
- पीपल के पेड़ की भी पूजा होती थी.
- पशुपति महादेव के आसपास कूबड़ वाले बैलों और जानवरों की पूजा की जाती थी
- हड़प्पा संस्कृति में मन्दिर प्रथा नहीं थी।
- बड़ी संख्या में ताबीजों का पाया जाना यह दर्शाता है कि हड़प्पावासी भूतों और बुरी शक्तियों में विश्वास करते थे।

हड़प्पा की मुहरें, लिपि और बाटें

- प्राचीन मेसोपोटामिया की तरह, हड़प्पावासी भी लिखने की कला जानते थे।
- सबसे पहली लिपि 1853 में देखी गई और पूरी लिपि 1923 में खोजी गई।
- इसे अभी तक समझा नहीं जा सका है.
- हड़प्पावासी चित्रात्मक लिपि का पालन करते थे, उनकी लिपि वर्णानुक्रमिक नहीं थी। यह लिपि दाएँ से बाएँ

  बाट और माप लिखी गई थी:
- वजन की कई वस्तुएं मिली हैं।
- तुलाई अधिकतर 16 या उसके गुणक में हुई।
- छड़ियाँ मिली हैं, जिन पर माप चिन्ह अंकित थे।
- लंबी दूरी की संचार सुविधा के लिए सील और सीलिंग का उपयोग किया गया।

सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल

साइटों	पुरातात्विक खोज	साइटों के खोजकर्ता	खोज का वर्ष
हड़प्पा	• 6 अन्न भंडार • मुहर (उस पर देवी की आकृति) • पुरुष और महिला यौन अंगों के पत्थर के प्रतीक। • चित्रित मिट्टी के बर्तन • वैनिटी बॉक्स • तांबे से बना दर्पण • पासा • देवी माँ की मिट्टी की मूर्ति • लकड़ी के ओखली में गेहूँ और जौ	दयाराम साहनी	1921

साइटों	पुरातात्विक खोज	साइटों के खोजकर्ता	खोज का वर्ष
मोहनजोदड़ो	• महान अन्न भण्डार • विशाल स्नानघर (हड़प्पा सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत) • विधानसभा हॉल • पशुपति महादेव • महिला नर्तक की कांस्य छवि • एक दाढ़ी वाले आदमी की स्टीटाइट छवि • मानव कंकाल एक दूसरे से लिपटे हुए थे • मिट्टी की आकृति वाली देवी माँ • चित्रित सील • बुने हुए कपास का टुकड़ा • ईंट भट्ठे • 2 मेसोपोटामिया की मुहरें • पासा • मुहरें (50% से अधिक मुहरें यहीं से मिली हैं)	राखल दास बनर्जी	1922
लोथल	• जहाज़ बनाने का स्थान • चावल का छिलका • शंख आभूषण निर्माता • मनका बनाने वालों की दुकान • अग्नि वेदियाँ • घोड़े की टेराकोटा मूर्ति • दोहरा दफ़न • जहाज का टेराकोटा मॉडल ईरानी और बहरीन सील • धातु कामगार	एस.आर.राव _	1957

साइटों	पुरातात्विक खोज	साइटों के खोजकर्ता	खोज का वर्ष
	• चित्रित जार		
कालीबंगा	• जोता हुआ खेत • 7 अग्नि वेदियाँ • सजी हुई ईंटें • **खिलौना गाड़ी** के पहिये • मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर	लुइगी पियो टेसिटोरी	1953
Chanhudaro	• कोई गढ़ नहीं • स्याही का बर्तन • लिपस्टिक • धातु कामगार • शंख आभूषण निर्माता • मनके बनाने वाले • ईंट पर कुत्ते के पंजे का निशान • बैल का टेराकोटा मॉडल • कांस्य खिलौना गाड़ी	एन जी मजूमदार	1931
बनावली	• ग्रिड पैटर्न टाउन प्लानिंग • खिलौना हल • देवी माँ की मिट्टी की आकृतियाँ। • व्यवस्थित जल निकासी पैटर्न का अभाव	रवीन्द्र सिंह भिश्त	1974
धोलावीरा	• जल संचयन प्रणाली • जल निकासी व्यवस्था • एक बड़ा कुआँ और स्नानघर • एकमात्र साइट को 3 भागों में विभाजित किया जाना है	रवीन्द्र सिंह भिश्त	1991

साइटों	पुरातात्विक खोज	साइटों के खोजकर्ता	खोज का वर्ष
	• सबसे बड़ा हड़प्पा शिलालेख • एक स्टेडियम		
सुरकोटदा	• घोड़े की हड्डी • अंडाकार कब्र • पॉट अंत्येष्टि	श्री जगत पति जोशी	1964-1968,
दैमाबाद	• रथ, बैल, हाथी और गैंडे के साथ सारथी की कांस्य छवियां।	बीपी बोपार्डिकर	1958

Harappan Civilization: Major Sites and Their Location

Main Sites	**Related Rivers**	**Locations**
Harappa	Ravi	Montgomery District, Pakistan
Mohenjo-Daro	Daro Sindhu	Larkana District of Sindh, Pakistan
Kalibanga	Ghaghara	Hanumangarh of Rajasthan
Lothal	Bhogwa	Ahmedabad of Gujarat
Ropar	Sutlej	Ropar district of Punjab
Manda	Chenab	Jammu and Kashmir
Daimabad	प्रवर	महाराष्ट्र का अहमदनगर जिला
आलमगीरपुर	हिंडोन	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला

Main Sites	Related Rivers	Locations
Sutkagendor	दश्त	बलूचिस्तान मकरान तट, पाकिस्तान
रंगपुर	मदार	गुजरात का काठियावाड़ी जिला

2. वैदिक साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

- वैदिक शब्द "वेद " से बना है। वेद शब्द का अर्थ ज्ञान है।
- आर्य वैदिक संस्कृति के निर्माता थे।
- आर्य शब्द का अर्थ श्रेष्ठ होता है। आर्य एक भाषा का शब्द है न कि कोई विशिष्ट शब्द।
- आर्यों को लिपि का ज्ञान नहीं था। इसलिए, वे अपना ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाते थे।
- इसलिए वैदिक साहित्य को "श्रुति साहित्य " भी कहा जाता है।
- वैदिक साहित्य को "संहिता " भी कहा जाता है।
- वैदिक साहित्य में चार वेदों, ब्राह्मण ग्रंथों, आरण्यक और उपनिषदों का उल्लेख है।
- वैदिक साहित्य को अपौरुषेय एवं नित्य भी कहा जाता है।
- ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद को वेदत्रयी कहा जाता है । इसमें अथर्ववेद सम्मिलित नहीं है।
- भारतीय साहित्य में वेद सबसे प्राचीन हैं, इनकी संख्या चार है- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।
- भारत में सिंधु सभ्यता के बाद जो नई सभ्यता विकसित हुई उसे वैदिक सभ्यता या आर्य सभ्यता के नाम से जाना जाता है। शास्त्रीय संस्कृत में 'आर्य' शब्द का अर्थ है - एक आदर्श व्यक्ति।
- आर्यों का इतिहास हमें मुख्यतः वेदों से ज्ञात होता है।
- सामान्यतः वैदिक साहित्य की रचना का श्रेय आर्यों को दिया जाता है।

वेद	पुजारी	पाठ	ब्राह्मण	उपनिषद	उपवेद
ऋग्वेद	होतरी	सकल, बालखिल्य , वाष्कल	ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकि ब्राह्मण	ऐतरेय उपनिषद कौषीतकि उपनिषद	आयुर्वेद
सामवेद	उद्गात्री	कौथुम , राणायनीय , जैमिनीय	ताण्ड्य ब्राह्मण, जैमिनीय ब्राह्मण	जैमिनीय उपनिषद, छान्दोग्य उपनिषद	गंधर्व वेद
यजुर्वेद	अध्वर्यु	शुक्ल यजुर्वेद, कृष्ण यजुर्वेद	शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय ब्राह्मण	कथा उपनिषद, ईशा उपनिषद , श्वेताश्वतर उपनिषद, मैत्रायण उपनिषद	धनुर्वेद
अथर्ववेद –	ब्रह्मा	शौनक, पिप्लाद	गोपथ ब्राह्मण	मुंडक उपनिषद, मांडूक्योपनिषद , प्रश्नोपनिषद	शिल्पवेद

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- पुरोहित का अर्थ है वह व्यक्ति जो मन्त्र पढ़कर विधिपूर्वक यज्ञ सम्पन्न कराता है।

- ऋग्वेद और सामवेद की तीन शाखाएँ क्रमशः सकल, बालखिल्य , वाष्कल और कौथुम , राणायनीय , जैमिनीय हैं।
- क्रमशः शुक्ल यजुर्वेद, कृष्ण यजुर्वेद और शौनक, पिप्लाद।
- **दो उपशाखाएँ हैं-** 1. कण्व
- 2. मध्यदीन
- **कृष्ण यजुर्वेद की चार उपशाखाएँ हैं**

  1. कथक कोड 2. कपिस्थल संहिता 3. मैत्रेयी कोड 4. तैत्तिरीय संहिता

1. ऐतरेय ब्राह्मण के संकलनकर्ता ऋषि महिदास थे।
2. तांड्य ब्राह्मण को महाब्रह्म और पंचविमशा ब्राह्मण के नाम से भी जाना जाता है।
3. शतपथ ब्राह्मण सबसे पुराना और सबसे बड़ा ब्राह्मण है।
4. अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथ है।
5. छांदोग्य उपनिषद उपनिषदों में सबसे पुराना है।

- उपवेद के रचयिता धन्वन्तरि हैं। इस उपवेद में चिकित्सा संबंधी ज्ञान है।
- धनुर्वेद के रचयिता उपवेद ऋषि विश्वामित्र हैं। इस उपवेद में युद्ध कला से संबंधित ज्ञान है।

3. महाजनपदों की प्रमुख विशेषताएँ

हड़प्पा या सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के बाद, छठी ईसा पूर्व और चौथी ईसा पूर्व शताब्दी के दौरान दूसरी सभ्यता के समय में महाजनपद अस्तित्व में थे। यह शहरी योजना न केवल सिंधु मैदान में बल्कि पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में भी उभरी। बेहतर वर्षा और नदी तंत्र के कारण यह क्षेत्र उपजाऊ था। इससे लोगों को हथियार और उपकरण बनाने में सुविधा हुई, जिनका उपयोग जंगल को काटकर भूमि को रहने के लिए उपयुक्त बनाने के लिए किया जाता था। इन स्थायी बस्तियों के कारण राजाओं के नियंत्रण में जनपदों या क्षेत्रीय राज्यों की स्थापना हुई। बेहतर हथियारों, लोहे के औज़ारों और हथियारों के इस्तेमाल से कुछ क्षेत्रीय राज्य बहुत बड़े हो गए और उन्हें महाजनपद कहा जाने लगा।

अधिकांश महाजनपद विंध्य के उत्तर में पूर्व में बिहार से लेकर उपमहाद्वीप की उत्तर-पश्चिमी सीमा तक स्थित थे। 600 ईसा पूर्व से, भारत का राजनीतिक इतिहास वर्चस्व के लिए अंतरराज्यीय संघर्ष का इतिहास है। बौद्ध ग्रंथ

अंगुत्तर निकाय के अनुसार, उत्तर भारत में हिमालय और नर्मदा के बीच की **भूमि को 16 स्वतंत्र राज्यों में विभाजित किया गया था जिन्हें** महाजनपद के नाम से जाना जाता था।
16 राज्य थे **मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पंचाल, मगध, काशी, कोसल, वज्जि , मत्स्य, सुरसेन, अस्सक , अवंती, गांधार और कम्बोज। इनमें अवंती, वत्स, कोसल और मगध बहुत शक्तिशाली थे।**
महाजनपदों की विशेषताएं :

1. स्थान:
मगध लाभप्रद स्थिति में था। इसकी राजधानी, राजगृह और पाटलिपुत्र , दोनों रणनीतिक रूप से स्थित थे। चूँकि गिरिव्रज और राजगृह पाँच पहाड़ियों से घिरे हुए थे, उन्होंने प्राकृतिक दुर्ग प्रदान किया और लगभग अभेद्य थे। पाटलिपुत्र गंगा और सोन नदियों के बीच स्थित होने के कारण पानी के किले जैसा था। कुछ महाजनपद वर्तमान में अंग (पूर्वी बिहार), मगध (दक्षिण बिहार), काशी (वाराणसी), कोसल (अयोध्या), वज्जि (उत्तर बिहार), मल्ला (गोरखपुर), चेदि (बुंदेलखंड) जैसे कुछ महत्वपूर्ण स्थानों पर स्थित हैं। वत्स (इलाहाबाद). अधिकतर महाजनपद उत्तरी भारत में स्थित थे और केवल अस्मक (गोदावरी घाटी) दक्कन में स्थित थी।

2. राजधानी शहर:
यह देखा गया कि प्रत्येक महाजनपद का एक गढ़वाली शहर था, जो इसके इतिहास को अलग बनाता था। सभी 16 राज्यों की अपनी राजधानी थी। राजधानी को अन्य राजाओं के आक्रमण से बचाने के लिए ईंटों और मोर्टार का उपयोग करके किलेबंदी की गई थी। ऐसा देखा गया कि अधिकांश नगरों में राजशाही व्यवस्था थी लेकिन दो राज्य **वृज्जि भी थे** और **मल्ला** जहां **सरकार के गणतांत्रिक स्वरूप** देखे गए।

3. कृषि अधिशेष:
लोहे के फाल के उपयोग से उन्हें अपना कृषि उत्पादन बढ़ाने में सुविधा हुई। **चूंकि मगध गंगा के मैदानों के मध्य भाग में स्थित था** , जो उपजाऊ जलोढ़ से समृद्ध था। यह क्षेत्र अधिक उत्पादक था और इसने लोगों की आय में वृद्धि की और अर्थव्यवस्था के लिए और अधिक विकास उत्पन्न किया।

4. विशाल स्थायी सेना :
राज्य की उच्च आय के कारण एक विशाल स्थायी सेना की सुविधा प्राप्त हुई। दक्षिणी क्षेत्रों के जंगलों से लकड़ी और हाथी उपलब्ध होते थे, जिससे महाजनपदों को युद्ध में घोड़ों और रथों का उपयोग करने का सैन्य लाभ मिलता था। ऐसा देखा गया कि मगध ने अपने पड़ोसियों के विरुद्ध बड़े पैमाने पर हाथियों का प्रयोग किया। हाथियों का उपयोग किले पर हमला करने और सड़कों और संचार के अन्य साधनों की कमी वाले क्षेत्रों पर मार्च करने में किया जा सकता है।

5. शक्तिशाली शासक:
16 महाजनपदों में से चार सबसे शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरे। इस राज्य पर बिम्बिसार , हर्यक वंश के अजातशत्रु और नंद वंश के महापद्म नंद जैसे शासकों द्वारा शासन किया गया था। महाजनपदों के इतिहास में प्रसेनजित (कोशल राज्य के) और उदयन (वत्स राज्य के) जैसे राजाओं के नाम भी मिलते हैं। उन्होंने अपने राज्य का विस्तार करने के लिए सभी उचित और अनुचित तरीकों का इस्तेमाल किया। राजा को सर्वोच्च

आधिकारिक दर्जा प्राप्त था और वह अधिकारियों की मदद से शासन करता था। अंत में, मगध उत्तरी भारत पर अधिकार रखने वाला शक्तिशाली महाजनपद बनकर उभरा।

6. आर्थिक गतिविधि:

महाजनपदों के उदय के साथ , व्यापार, कस्बों और धातु धन के प्रसार में वृद्धि हुई। लगाए गए कर से मगध राजाओं के खजाने में भी इजाफा हुआ, जिससे उन्हें फिर से विशाल सेना बनाए रखने में मदद मिली। आंतरिक व्यापार मार्ग शाश्वत व्यापार मार्गों में शामिल हो गए, और पूर्वी **(म्यांमार के साथ बंगाल)** और पश्चिमी क्षेत्र (**अफगानिस्तान, ईरान और मेसोपोटामिया के साथ तक्षशिला**) दोनों के साथ उपमहाद्वीप के समृद्ध व्यापार के प्रमाण मिले। निष्क और सहनशक्ति नामक धन के उपयोग से व्यापार को सुगम बनाया गया । बाली, वैदिक काल में आदिवासियों द्वारा अपने प्रमुखों को किया जाने वाला एक स्वैच्छिक भुगतान, एक अनिवार्य भुगतान बन गया, और विशेष एजेंटों को **बालिसाधक कहा जाता है** इसे एकत्र करने के लिए नियुक्त किया गया था।

7. दूसरी शहरी सभ्यता:

हड़प्पा सभ्यता के बाद 16 महाजनपदों के उदय को सर्वसुविधायुक्त दूसरी शहरी सभ्यता कहा गया। यह **एनबीपीडब्ल्यू (उत्तरी ब्लैक पॉलिश्ड वेयर कल्चर) चरण** की शुरुआत थी । धातु मुद्रा के साथ-साथ, एनबीपीडब्ल्यू चरण के मध्य में पकी हुई ईंटें और रिंग कुएं भी दिखाई दिए। महाजनपदों में सभी प्रकार की शहरी सुविधाएँ मौजूद थीं । यह चरण इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि समाज की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संरचना में बदलाव आया था।

8. ग्राम बस्तियों का विकास:

इस चरण के दौरान, गंगा घाटी में गाँव की बस्तियों, कस्बों की संख्या और आकार और तदनुसार जनसंख्या वृद्धि में महत्वपूर्ण विस्तार हुआ। गाँव की भूमि को खेती योग्य भूखंडों में विभाजित किया गया था और परिवारों में विभाजित किया गया था, हालाँकि भूमि जोत अलग-अलग थी। परिवार ने स्वयं और किराये के खेतिहर मजदूरों के साथ भूखंडों पर खेती की। ग्राम प्रधान की देखरेख में सामूहिक रूप से खोदी गई एक सिंचाई प्रणाली भी थी।

9. कानूनी एवं सामाजिक व्यवस्था:

यह अवधि भारतीय कानूनी और न्यायपालिका प्रणालियों की उत्पत्ति का प्रतीक है। पहले, लोग जनजातीय कानून द्वारा शासित होते थे, जो किसी भी वर्ग भेद को मान्यता नहीं देता था। हालाँकि, जाति व्यवस्था के उद्भव के साथ, कानूनी व्यवस्था उच्च वर्ण के प्रति पक्षपाती हो गई थी।

समाज को चार वर्णों में विभाजित किया गया और प्रत्येक वर्ण के कार्य निर्धारित किये गये। ऋग्वैदिक युग में, हम एक आदिवासी समाज देखते हैं लेकिन महाजनपदों के चरण में , समाज राजनीतिक प्रकृति का था।

मौर्य कला एवं संस्कृति

मौर्य काल (322-185 ईसा पूर्व) की कला और संस्कृति इतिहास में प्राचीन भारतीय वास्तुकला को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मौर्य साम्राज्य के शक्तिशाली राजाओं ने उस युग की कला और संस्कृति को

स्थापित करने और सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चंद्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार और अशोक जैसे मौर्य राजाओं ने मौर्य साम्राज्य में कुछ प्रकार की कला और वास्तुकला की स्थापना पर ध्यान केंद्रित किया। इस विशेष प्रकार की कला और वास्तुकला में कुछ अनूठी विशेषताएं थीं, जिन्हें मौर्य कला और वास्तुकला के रूप में जाना जाता है।

मौर्य कला और वास्तुकला के गुण

- मेगस्थनीज की इंडिका मौर्य कला और संस्कृति के विवरण का एक स्रोत है। यूनानी राजनयिक ने पुस्तक में उस काल के कला रूपों और सामाजिक पैटर्न का उल्लेख किया है।
- चमकदार बनावट पत्थर की मूर्तिकला और स्तंभों की मुख्य विशेषता थी। और ये बलुआ पत्थर से बनाये गये थे।
- शाही महलों जैसी वास्तुकला के निर्माण में लकड़ी मुख्य सामग्री थी।
- मौर्य स्तंभों के अखंड पैटर्न लगभग फ़ारसी स्तंभों के समान दिखते थे।
- मौर्य युग की वास्तुकला उस काल की धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है।
- विभिन्न वास्तुकलाओं से बोली जाने वाली भाषाओं का भी पता चला, जैसे सम्राट अशोक के स्तंभों पर शिलालेख।
- आम लोग कला और वास्तुकला के निर्माण और संरक्षण में रुचि रखते थे।

मौर्य कला और वास्तुकला के प्रकार:

मौर्य काल में स्थापत्य एवं कला की स्थापना सर्वाधिक सम्राटों ने की। इन्हें दरबारी कलाओं के रूप में जाना जाता था, जो राजा के दरबार की कला को दर्शाती थी। और राज्य के आम लोग भी लोकप्रिय कलाओं या लोक कलाओं के निर्माण में सक्रिय थे। मूर्तियाँ, मिट्टी के बर्तन और गुफा कला ऐसे कला रूप थे।

1. महल:

दरबारी कला के प्रकार मुख्यतः महल, स्तूप और स्तंभ थे। प्रसिद्ध मौर्यकालीन महल कुम्रहार में मौजूद हैं , जो आधुनिक पटना में है। मौर्य महलों का निर्माण मुख्य रूप से लकड़ी से किया जाता था, उदाहरण के लिए, चंद्रगुप्त मौर्य और अशोक के महल।

2. स्तूप एवं चैत्य:

बौद्ध धर्म और जैन धर्म दो धार्मिक मान्यताएँ थीं जो इस अवधि के दौरान बड़े पैमाने पर फैल रही थीं। इस समय स्तूप, चैत्य और विहारों का निर्माण किया गया। ऐसे स्तूप मुख्य रूप से आधुनिक उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार और नेपाल में पाए जाते हैं। मध्य प्रदेश में सांची स्तूप और उत्तर प्रदेश में वाराणसी के पास सारनाथ स्तूप, अशोक के शासनकाल के दौरान बनाए गए प्रसिद्ध स्तूप हैं।

3. स्तंभ:

स्तंभों के तीन अलग-अलग भाग हैं: एक शाफ्ट, एक अबेकस और एक कैपिटल। अबेकस कुछ स्तंभों में उल्टे डिजाइन वाले कमल के आकार पर स्थित है। स्तंभों के शीर्ष पर मुख्यतः जानवर दिखाई देते हैं। अशोक के

शासनकाल के दौरान, धम्मचक्रप्रवर्तन के सम्मान में सारनाथ सिंह राजधानी का निर्माण किया गया था। स्तंभ के शीर्ष पर चार सिंह हैं। स्तंभ में चक्र बौद्ध धर्म में धम्मचक्र का प्रतीक है।

- **सात स्तंभ शिलालेख:** मौर्य सम्राट अशोक के सात स्तंभ शिलालेख अफगानिस्तान, पाकिस्तान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, आंध्र प्रदेश और बिहार सहित विभिन्न स्थानों में पाए जाते हैं। पहले स्तंभ शिलालेख में राज्य के लोगों की रक्षा से संबंधित शिलालेख हैं। दूसरा धम्म के बारे में है. तीसरा क्रोध, अहंकार और अन्य बुराइयों को अस्वीकार करने के बारे में कहता है। चौथा राजुकों के कर्तव्यों को दर्शाता है। पांचवें में जानवरों की रक्षा करने और अनुष्ठानों में उनकी बलि न देने का संदेश दिया गया है। छठा शिलालेख उनकी धम्म नीति के बारे में है। सातवें शिलालेख से सभी संप्रदायों और धर्मों के प्रति अशोक की सहिष्णुता का पता चलता है।
- **प्रमुख और लघु स्तंभ शिलालेख:** अशोक के प्रमुख स्तंभ शिलालेख सारनाथ सिंह राजधानी, वैशाली स्तंभ, इलाहाबाद स्तंभ, लौरिया में पाए जाते हैं नंदनगढ़ स्तंभ, और लौरिया अरराज स्तंभ. छोटे स्तंभ शिलालेख साँची, इलाहाबाद, सारनाथ, निगाली सागर और रुम्मिनदेई में पाए जाते हैं। शिलालेखों की भाषा प्राकृत में थी। यहां ब्राह्मी लिपियों के उदाहरण हैं। शिलालेखों के निर्माण का प्राथमिक उद्देश्य धम्म का संदेश फैलाना था।

4. मूर्तियां:

मौर्य युग की मूर्तियों में चमकदार पॉलिश और जटिल पैटर्न जैसी कुछ विशेषताएं थीं। दीदारगंज यक्षिणी की मूर्ति मौर्यकालीन मूर्तिकला का आदर्श उदाहरण है। यह मूर्ति यक्षिणी की एक मानव आकार की प्रस्तुति है, जो एक धार्मिक प्रतीक है जिसकी मौर्य लोग पूजा करते थे।

5. मिट्टी के बर्तन और गुफा कला:

मौर्य काल से मिले मिट्टी के बर्तन मुख्य रूप से उत्तरी भारत के स्थानों, जैसे पाटलिपुत्र , से थे। चमकदार काले रंग के मिट्टी के बर्तनों को उत्तरी काले पॉलिश वाले बर्तन के रूप में पहचाना जाता है। नागार्जुन गुफा और बराबर पहाड़ी गुफा जैसी गुफाएं मौर्य काल की गुफा कला और वास्तुकला के उदाहरण पेश करती हैं। बिहार में बराबर पहाड़ियों में लोमस ऋषि गुफा प्रवेश द्वार की सजावट के लिए प्रसिद्ध है।

6. टेराकोटा अभ्यावेदन:

मौर्य काल में टेराकोटा कला का विकास हुआ। बुलंदीबाग से कई टेराकोटा आकृतियाँ और मूर्तियाँ प्राप्त हुईं। यहां नृत्य मुद्रा में एक महिला की मूर्ति मिली है। पाटलिपुत्र और तक्षशिला में भी अधिक टेराकोटा निरूपण पाए गए। टेराकोटा कला की शैली ग्रीक संस्कृति के मिश्रण को दर्शाती है। टेराकोटा सजावट, खिलौने और संरचनाएं सामान्य टेराकोटा कार्य थे।

7. मौर्यकालीन पेंटिंग और जातक कथाएँ:

- बौद्ध धर्म और जैन धर्म का धार्मिक संदर्भ श्रमण परंपरा का एक हिस्सा था जिसने मौर्य कला को प्रभावित किया। अशोक बौद्ध दर्शन का अनुयायी था। उसके स्तंभों और शिलालेखों में धम्म या बौद्ध धर्म के संदेश अंकित थे।

8. सिक्कों का डिज़ाइन:

मौर्यकालीन सिक्कों को **कार्षापण के नाम से जाना जाता था या पैना** . ये चांदी के बने थे और इनका वजन लगभग 3.4 ग्राम था। सिक्कों में पाँच पंच थे। तीन अन्य पैटर्न के साथ छह भुजाओं और सूर्य का प्रतीक अनिवार्य था। घूंसे के अर्थ अस्पष्ट महत्व रखते हैं, और इन्हें समझा नहीं जा सका।

मौर्य काल की कला एवं संस्कृति बहुमुखी थी। कला और वास्तुकला की अनूठी विशेषताएं धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं से पैदा हुई थीं। स्थापत्य के साक्ष्यों से सामाजिक-धार्मिक स्थिति की स्थिति अधिक विश्वसनीय हो जाती है।

अशोक विदेश संबंध

मौर्य सम्राट और बिन्दुसार के उत्तराधिकारी अशोक अपने कूटनीतिक लेकिन शांतिपूर्ण विदेशी संबंधों के लिए प्रसिद्ध थे। वह मौर्य वंश के सबसे महत्वपूर्ण सम्राटों में से एक थे। उनका शासन काल विवादास्पद था। कुछ स्रोतों के अनुसार, यह सी है। 265-238 ईसा पूर्व, जबकि अन्य स्रोतों के अनुसार, यह सी है। 273-232 ईसा पूर्व। अशोक की विदेश नीति में अनुकरणीय गुण थे। यह उनके **धम्म** की विचारधारा का विस्तार करने का सबसे अच्छा तरीका था। इतिहास विभिन्न शक्तिशाली पड़ोसी साम्राज्यों के साथ उसके संबंधों को दर्शाता है। **अशोक ने अपने शासनकाल के दौरान दक्षिण एशिया और पश्चिमी देशों के साथ संबंध स्थापित किये। अशोक के डोमेन की भौगोलिक स्थिति ने नए विदेशी संबंधों को विकसित करने में भी मदद की** । वे अहिंसक राजनीतिक कूटनीति के आदर्श उदाहरण थे। धम्मशोक या धर्मशोक के भिक्षु-जैसे दर्शन ने दुनिया को विदेशी संबंध बनाने में दयालुता और उदारता का महत्व दिखाया। यहां हम अशोक के विदेशी संबंधों के मुख्य तथ्यों एवं विशेषताओं पर चर्चा करेंगे।

कलिंग युद्ध (261 ईसा पूर्व): अशोक के प्रशासन पर प्रभाव

कलिंग का शासक अशोक से युद्ध हार गया। लेकिन युद्ध जीतते समय अशोक ने अपनी पिछली क्रूर मानसिकता भी खो दी। लोगों के प्रति अशोक के क्रूर दृष्टिकोण ने उसे चंडाशोक बना दिया। उसकी जेल पृथ्वी पर नरक के समान थी। कलिंग युद्ध नए क्षेत्रों को जीतने के लिए उसके क्रूर दृष्टिकोण को दर्शाता है। लेकिन 13वें प्रमुख शिलालेख के अनुसार अशोक को कलिंग युद्ध में अपनी क्रूरता पर पछतावा हुआ। युद्ध के कारण हुई अनगिनत मौतों ने उन्हें शांति के दूत या धम्मशोक में बदल दिया। जब उन्होंने धम्म या धर्म का नया मार्ग स्वीकार किया तो उनकी प्रशासनिक नीति बदल गई। अशोक की इस विशेषता ने विदेश नीति में भी योगदान दिया। बौद्ध दर्शन, धम्म के प्रभाव ने उनके युग को मौर्य इतिहास में एक अलग स्तर पर पहुँचा दिया।

अशोक का दर्शन और विदेशी संबंध

कलिंग युद्ध की क्रूरता के बाद अशोक ने आगे के युद्ध का त्याग कर दिया। उन्होंने प्रशासन और विदेश नीति में भी अहिंसा को चुना। इस मानसिकता ने राज्य में भारी बदलाव ला दिया। उनकी धम्म या धर्म की विचारधारा ने सम्राट के संदेश को फैलाने के लिए एक नया आयाम लाया। अशोक ने अपने राज्य के बाहर विभिन्न देशों में बौद्ध मिशनरियों को भेजा। इस प्रकार वह विदेशों में सहिष्णुता और अहिंसा का संदेश देना चाहते थे। ऐसे विदेशी क्षेत्रों में आधुनिक काल में श्रीलंका, थाईलैंड, चीन और ग्रीस शामिल हैं। शांतिपूर्ण दर्शन अशोक के साम्राज्य

के अलावा कई क्षेत्रों में प्रसिद्ध हुआ और इसने अविश्वसनीय रूप से लचीले विदेशी संबंध बनाए। उनके शासनकाल के दौरान, मौर्य साम्राज्य के पास राज्य के रूप में एक विशाल क्षेत्र था। विशाल क्षेत्र को बनाए रखने के अलावा, अशोक ने विदेशी सम्राटों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए।

शिलालेख: अशोक के विदेशी संबंधों से संबंधित जानकारी के स्रोत:

धम्म के शिलालेख अशोक के शासनकाल के दौरान विदेशी संबंधों का पता लगाने के स्रोत हैं। तथा विदेशी संबंधों के प्रमाण इतिहास में अशोक के कालक्रम के सूचक हैं। अशोक के साम्राज्य का संबंध ईरान से था और मनसेहरा शिलालेख यह साबित करता है। तक्षशिला के शिलालेखों में कश्मीर में पाए गए शिलालेखों से कुछ समानताएँ हैं। शिलालेखों में अशोक का पश्चिम से संबंध भी प्रमुख है। उनके सीरिया के एंटिओकस सहित विभिन्न विदेशी संबंध थे। अशोक के शिलालेखों में विभिन्न भाषाओं में शिलालेख हैं। भाषा का चयन उन क्षेत्रों पर निर्भर करता है जहां शिलालेख मौजूद है। ऐसी भाषाओं में ग्रीक, अरामी, प्राकृत आदि शामिल हैं।

261 ईसा पूर्व में कलिंग युद्ध के बाद, जब उन्होंने बौद्ध दर्शन का पालन करना शुरू किया, तो उन्होंने शिलालेखों में विवरण उत्कीर्ण करने के बारे में सोचा। और उनके नियमित कार्यों में से एक धम्म के एक भाग के रूप में नए आदेश जारी करना था। इस प्रकार धम्म ने विदेशी संबंधों के लिए एक मजबूत आधार बनाया। अशोक ने अपने पड़ोसी देशों में धम्म के प्रतिनिधि भेजे। सबसे अधिक पहचाने जाने वाले देशों में सीरिया था, जहां एंटिओकस द्वितीय थियोस ने अशोक के साम्राज्य के साथ संबंध विकसित किया था। इसके अलावा, मिस्र के टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फ़स, मैसेडोनिया के एंटीगोनस द्वितीय गोनाटा और साइरेन के मगस भी थे। अलेक्जेंडर के साथ संबंध थे. लेकिन सिकंदर की पहचान अस्पष्ट है. यह एपिरस या कोरिंथ का अलेक्जेंडर हो सकता है। इन देशों के अलावा अशोक ने नेपाल और खोतान से भी अच्छे सम्बन्ध बनाये। कुछ सांस्कृतिक परंपराओं में इन विदेशी स्थानों के साथ समानताएं थीं। कुछ स्रोतों के अनुसार अशोक ने नेपाल के देवपाल को अपना दामाद बनाकर नेपाल से सम्बन्ध जोड़ा।

अशोक ने दक्षिण के साथ महान संबंध बनाये। गविमठ , मस्की, पालकीगुंडु , ब्रह्मगिरि , आदि दक्षिण भारत के स्थान हैं जहाँ शिलालेख उपलब्ध हैं। तमिल कवियों में भी उनका प्रभाव दिखाई देता है। सीलोन या श्रीलंका के राजा का सम्राट अशोक से नियमित संवाद होता था। श्रीलंका के तत्कालीन राजा तिस्सा, अशोक की प्रशंसा करते थे।

समापन नोट:

प्रशासन के प्रति अशोक के गतिशील रवैये ने उनके राज्य के लोगों में सकारात्मक बदलाव लाए। धम्म स्वीकार करने के बाद उनका प्रशासन और भी सराहनीय हो गया। अहिंसा और सहनशीलता के मार्ग ने उन्हें प्रसिद्ध बनाया। धम्म की विचारधारा के विस्तार की विदेश नीति ने अशोक को महान सम्राट बनाया। उन्होंने बहुसंस्कृतिवाद को धम्म के साथ जोड़ने का प्रयास किया। सातवें प्रमुख शिलालेख में विदेशी संबंधों के कुछ

प्रमाण हैं। अशोक की विदेश नीति ने मौर्य साम्राज्य की स्थिति को बढ़ावा देने में मदद की। और परिणामस्वरूप, उनकी मृत्यु के बाद, मौर्यों का पतन शुरू हो गया।

4. गुप्त काल: कला और संस्कृति

गुप्त युग (चौथी शताब्दी ई.पू. की शुरुआत से छठी शताब्दी ई.पू. के अंत तक) समृद्धि का प्रतीक था। उस काल की कला और संस्कृति भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण थी। गुप्त सम्राटों ने अद्भुत कला और संस्कृति के निर्माण और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुप्त युग की धार्मिक मान्यताओं ने कला और संस्कृति पर भी प्रभाव डाला। कला और वास्तुकला के माध्यम से हिंदू धर्म की उपस्थिति गुप्त युग के दौरान स्पष्ट थी। गुप्त साम्राज्य पर चीनी यात्री फाह्यान की टिप्पणियों ने कुछ हद तक वास्तविक स्थिति की कल्पना करने में मदद की।

गुप्त कला और वास्तुकला की विशेषताएं:

- गुप्त काल में हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म सह-अस्तित्व में थे। गुफा कला में ऐसे उदाहरण मौजूद हैं। स्तूप हिंदू राजाओं के शासनकाल में भी बौद्ध धर्म के प्रति सम्मान का संकेत देते हैं।
- गुफाओं के चित्रों में कभी भी नीले रंग का प्रयोग नहीं किया गया है।
- मूर्तियां बलुआ पत्थर से बनाई जाती थीं।
- मंदिरों की प्राथमिक सामग्री ईंट, बलुआ पत्थर और ग्रेनाइट थी। मंदिर वास्तुकला में नागर और द्रविड़ शैलियाँ काफी स्पष्ट थीं।
- गुप्त सम्राटों के शासनकाल में साहित्य एवं विज्ञान की समृद्धि दृष्टिगोचर हुई।

गुप्त कला और वास्तुकला के प्रकार :

गुप्त काल के शासकों द्वारा वास्तुकला की विभिन्न श्रेणियाँ विकसित और स्थापित हुईं। हमें उन मूर्त कला रूपों से एक ज्वलंत विचार मिलता है जो स्थापना के लंबे वर्षों के बाद भी मौजूद हैं।

गुप्ता की गुफा वास्तुकला:

- उदयगिरि गुफाएं, जैन और हिंदू धार्मिक मान्यताओं को लेकर चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं का एक समूह है, जिसका निर्माण चौथी से पांचवीं शताब्दी के दौरान किया गया था। ये गुफाएं मध्य प्रदेश के विदिशा के पास हैं ।
- अजंता गुफा, महाराष्ट्र में चट्टानों को काटकर बनाई गई 29 गुफाओं का एक समूह है, जिसमें बुद्ध की यात्रा को प्रदर्शित करने वाली पेंटिंग हैं। यहां भित्ति चित्र और फ्रेस्को तकनीक पेंटिंग के उदाहरण भी हैं। 5वीं और 6वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान, अजंता की गुफाओं में कई चट्टानों को काटकर बनाई गई वास्तुकलाएं बनाई गईं।
- चरणंद्री पहाड़ियों में एलोरा की गुफाएँ चौंतीस चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं का एक समूह हैं जो कला के माध्यम से ब्राह्मणवादी (हिंदू), जैन और बौद्ध दर्शन को प्रदर्शित करती हैं। सभी गुफाएं 6वीं से 12वीं शताब्दी के बीच बनाई गई थीं।

- मध्य प्रदेश के धार जिले में बाघ गुफाएँ एक साथ नौ गुफाओं से मिलकर बनी हैं। इन बौद्ध गुफाओं को बाघ गुफ़ा के नाम से भी जाना जाता है ।
- नासिक में पांडव गुफाएँ (BC250-AD600) त्रिरश्मि पहाड़ी में हैं। ये गुफाएँ प्राचीन जल प्रबंधन प्रणालियों और बुद्ध मूर्तियों के शानदार उदाहरण हैं।

गुप्तकालीन मंदिर वास्तुकला:

गुप्त राजघराने मूलतः ब्राह्मण (हिन्दू) थे। विष्णु, शिव और शक्ति तीन प्रकार के देवता थे जिनकी वे पूजा करते थे।

- इस अवधि के दौरान पाँच प्रकार की मंदिर वास्तुकला विकसित हुई। पहले प्रकार के मंदिर में चौकोर वास्तुकला और सपाट छतें थीं। खंभे हॉल क्षेत्रों को घेरे हुए हैं। गर्भगृह के साथ एक प्रवेश द्वार था और इस प्रकार के मंदिरों में एक मंडप क्षेत्र भी होता है। तिगवा का कंकाली देवी मंदिर इसका आदर्श उदाहरण है।
- प्रदक्षिणा क्षेत्र को शामिल करने के अलावा दूसरा प्रकार लगभग पहले प्रकार के समान ही दिखाई दिया। इसी समय दो मंजिले मन्दिरों की स्थापना प्रारम्भ हुई। उदाहरण के लिए, भुमरा में शिव मंदिर ।
- तीसरे प्रकार में चौकोर आकार और शिखर या पिरामिडनुमा छत का पैटर्न था। मंदिर का चबूतरा भी ऊंचा हो गया। दशावतार मंदिर इसी श्रेणी में आता है। भगवान विष्णु के दस अवतार हैं।
- चौथे प्रकार का मंदिर आयताकार पैटर्न और खोखली छत के आकार में बनाया गया था। उदाहरण के लिए, कपोतेश्वर मंदिर।
- पांचवें प्रकार के मंदिर की वास्तुकला गोलाकार थी। एक आयताकार पैटर्न बनाते हुए चारों कोनों की विशिष्ट आकृति भी दिखाई दे रही थी। राजगीर में मनियार मठ इसी श्रेणी में आता है।

गुप्तकालीन नागर और द्रविड़ शैलियाँ:

नागर और द्रविड़ शैली को दो प्रकार की मंदिर वास्तुकला के रूप में जाना जाता है। एक से अधिक शिखर वाले उत्तर भारतीय मंदिरों को नागर शैली के मंदिरों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। और एक शिखर वाले दक्षिण भारतीय मंदिर द्रविड़ शैली के मंदिर के रूप में जाने जाते हैं। नागर मंदिरों में देवता अंदर होते हैं, जबकि द्रविड़ मंदिरों में बाहर होते हैं। गुप्त युग में ऐसे मंदिर पैटर्न स्पष्ट थे।

गुप्तकालीन मूर्तियाँ एवं स्तम्भ:

- गुप्तकाल की अद्भुत मूर्तिकला का प्रमाण मथुरा में अभय मुद्रा वाली बुद्ध की मूर्ति है। यह लाल बलुआ पत्थर से बना है। सारनाथ की बुद्ध मूर्ति सिद्धार्थ की शांत एवं शांतिमय अभिव्यक्ति को दर्शाती है। बौद्ध मूर्तियों में गुफा की मूर्तियाँ भी उल्लेखनीय हैं।
- गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिसेन के शब्द इलाहाबाद स्तंभ में उत्कीर्ण हैं। इसे प्रशस्ति या स्तवन के नाम से जाना जाता है। गुप्त युग का एक और प्रसिद्ध स्तंभ दिल्ली का लौह स्तंभ है। इसका निर्माण चन्द्रगुप्त द्वितीय के संरक्षण में हुआ था। यह स्तंभ आज भी जंग रहित है।

गुप्ता के स्तूप:

- आधुनिक पाकिस्तान में मीरपुर खा का स्तूप गुप्त काल के दौरान बनाया गया था। ध्यान मुद्रा में बैठे हुए क्रॉस-लेग्ड बुद्ध एक प्रतिष्ठित संरचना है।
- धमेक स्तूप के बाहरी क्षेत्र के पैटर्न गुप्त वंश के कलाकारों का काम हैं। जानवरों की आकृतियों सहित पैटर्न, गुप्त कला के उदाहरण दिखाते हैं।
- चौखंडी स्तूप स्तूप वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक है। यह सारनाथ में स्थित है। ऐसा माना जाता है कि यह स्तूप बुद्ध की अपने प्रारंभिक शिष्यों के साथ हुई मुलाकात का एक संस्मरण है।

गुप्त काल का साहित्य:

गुप्त काल में साहित्य का विकास अविश्वसनीय था। कालिदास एक प्रसिद्ध नाटककार थे, और उनकी रचनाएँ जैसे अभिज्ञानशाकुंतल , विक्रमोर्वशीयम् , मेघदूत और मालविकाग्निमित्र गुप्त साहित्य के सबसे महान उदाहरण हैं। दंडिन का काव्यदर्शन और दशकुमारचरित उल्लेखनीय हैं। विशाखदत्त का मुद्राराक्षस साहित्यिक कृति का अद्भुत उदाहरण है। वात्स्यायन अपने न्याय सूत्र भाष्य और कामसूत्र के लिए जाने जाते हैं। माघ को शिशुपाल-वध लिखने के लिए पहचाना जाता है। व्यास का व्यासभाष्य योग के बारे में बताता है . हरिसेना , भारवि, भास और शूद्रक को उनके साहित्यिक योगदान के लिए भी जाना जाता है।

निष्कर्ष: वास्तुकला, कला और मूर्तिकला के अवशेष साक्ष्य को हम गुप्त युग की कला और संस्कृति के रूप में चिह्नित करते हैं। और जो भी कला, वास्तुकला और साहित्य पुनः प्राप्त किया गया है वह उस समय के कलाकारों, विद्वानों और प्रतिभाशाली लोगों की उत्कृष्ट विशेषज्ञता को साबित करता है। और शासकों की पहल ने सब कुछ समृद्ध होने में मदद की। यही कारण है कि गुप्त काल को स्वर्ण युग कहा जाता है।

5. दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश

संगम युग के समापन के बाद, कालभ्ररुले 250 वर्षों तक जीवित रहे। उसके बाद, पल्लवों ने टोंडिमंडलम पर नियंत्रण कर लिया , जिसकी राजधानी कांचीपुरम थी। उनका शासन तब तक कायम रहा जब तक कि 10वीं शताब्दी की शुरुआत में शाही चोलों ने टोंडिमंडलम में प्रवेश नहीं किया और इसे जब्त नहीं कर लिया। पल्लवों की उत्पत्ति पर विभिन्न दृष्टिकोण हैं। सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत राय यह है कि वे टोंडिमंडलम के मूल निवासी थे जो पुलिंदों से संबंधित थे , जिनका उल्लेख अशोक के शिलालेखों में किया गया था। सातवाहनों द्वारा टोंडिमंडलम पर विजय प्राप्त करने के बाद , पल्लव उनके सामंत बन गए। तीसरी शताब्दी ई. में सातवाहनों की पराजय के बाद वे स्वतंत्र हो गये।

दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश:

- चोल राजवंश

- पल्लव राजवंश
- चालुक्य वंश
- राष्ट्रकूट राजवंश

पल्लव :

250 और 350 ई. के बीच , प्रारंभिक पल्लव शिवस्कंदवर्मन और विजयस्कंदवर्मन ने प्राकृत में चार्टर जारी करके शासन किया। 350 और 550 ईस्वी के बीच , पल्लव सम्राटों की दूसरी पंक्ति ने संस्कृत चार्टर का निर्माण किया। विष्णुगोपा उनमें से एक था, और समुद्रगुप्त के दक्षिण भारतीय अभियान के दौरान, वह उसके द्वारा परास्त हो गया था। 575 ई. से, तीसरी पंक्ति के राजाओं ने संस्कृत और तमिल दोनों भाषाओं में चार्टर तैयार किए। इस परिवार का पहला शासक सिंहविष्णु था, जिसने कालभ्रों को हराया और पल्लव शक्ति की स्थापना की। उन्होंने चोलों को भी हराया और पल्लवों का नियंत्रण कावेरी नदी तक बढ़ा दिया।

Mahendravarman I (600–630 AD)-

उनके शासनकाल के दौरान लंबे समय तक चलने वाला पल्लव- चालुक्य संघर्ष शुरू हुआ। पुलकेशिन द्वितीय ने पल्लवों के विरुद्ध चढ़ाई की और राज्य के उत्तरी भाग पर विजय प्राप्त की। अपने प्रारंभिक वर्षों में, महेंद्रवर्मन प्रथम एक जैन धर्मावलंबी थे , लेकिन अंततः एक शैव संत थिरुनावुक्करासर उर्फ अप्पार के प्रभाव में शैव धर्म की ओर मुड़ गए। गुणभार , सत्यसंध, चेट्टाकारी (मंदिर निर्माता), चित्रकारपुली (पेंटिंग), विचित्रचित्त और मत्तविलास कुछ ऐसे नाम थे जो उन्हें दिए गए थे। इसके अलावा, उन्होंने गुफाओं में मंदिर बनवाये। ईंटों, लकड़ी, धातु या सीमेंट के उपयोग के बिना ब्रह्मा, विष्णु और शिव के मंदिरों का निर्माण करने के लिए उन्हें मंडागपट्टु शिलालेख में विचित्रचित्त के रूप में जाना जाता है । वल्लम , महेंद्रवाड़ी , दलवानूर , पल्लावरम , मंडागपट्टू और तिरुचिरापल्ली कुछ ऐसे स्थान हैं जहां उनके चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर पाए जा सकते हैं। मट्टाविलासा प्रहसनम एक संस्कृत ग्रंथ है जो उन्होंने लिखा था। उनके पास एक मजबूत संगीत पृष्ठभूमि भी है।

Narasimhavarman I (630-668 AD)-

मामल्ला , जिसका अर्थ है "महान पहलवान," उनका एक और उपनाम था। कांची के निकट मणिमंगलम के युद्ध में उसने पुलकेशिन द्वितीय को हराकर अपने पिता की हार का बदला लिया । जैसे ही उन्होंने खोई हुई भूमि को पुनः प्राप्त किया, उन्होंने ' वातापीकोंडा' की उपाधि धारण की । ह्वेन त्सांग ने अपने शासनकाल के दौरान पल्लव राजधानी कांचीपुरम का दौरा किया और बड़ी संख्या में बौद्ध भिक्षुओं के साथ इसे जीवंत, विशाल और शानदार बताया । उन्होंने दावा किया कि कांची की घटिका, सीखने की एक उत्कृष्ट सुविधा थी। मामल्लापुरम में उनके शासनकाल के दौरान अखंड रथों का निर्माण देखा गया । पल्लव- चालुक्य राजवंश नरसिंहवर्मन प्रथम, महेंद्रवर्मन द्वितीय, परमेश्वरवर्मन प्रथम और पल्लव- चालुक्य के शासनकाल में जारी रहा ।

नरसिंहवर्मन द्वितीय या राजसिम्हा (695-722 ई.)-

परमेश्वरवर्मन प्रथम का उत्तराधिकारी नरसिंहवर्मन द्वितीय था , जो राजसिम्हा के नाम से प्रसिद्ध था। वह कला और वास्तुकला के विकास के विशेषज्ञ थे। मामल्लापुरम तट मंदिर और कांचीपुरम में कैलासनाथ मंदिर इसके दो उदाहरण हैं। उनके दरबार की शोभा प्रख्यात संस्कृत विद्वान दंडिन से थी। अपने शासनकाल के दौरान, उन्होंने चीन में दूतावासों की स्थापना की और समुद्री व्यापार का विस्तार किया। शंकरभक्त , वैधविद्याधर , और अगमप्रिया कुछ ऐसी उपाधियाँ थीं जिन्हें उन्होंने अपनाया। 9वीं शताब्दी ई. तक यहां पल्लव वंश का शासन था। कांची पर चोल सम्राट आदित्य प्रथम ने कब्जा कर लिया था, जिसने अंतिम पल्लव शासक अपराजिता को हराया था।

कला और वास्तुकला:

पल्लव युग को "मंदिर निर्माण का महान युग" कहा जाता था। वे प्रदर्शित करते हैं कि चट्टान से मंदिर कैसे खोदे जाते हैं। पल्लव आधिपत्य के साथ मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली की शुरुआत हुई। गुफा मंदिरों ने अखंड रथों को रास्ता दिया , जिनकी जगह अंततः संरचनात्मक मंदिरों ने ले ली। मंदिर के डिज़ाइन के चार चरण थे।

1. महेंद्रवर्मन , प्रथम चरण मंडागपट्टू , महेंद्रवाड़ी , ममंदूर , दलवानूर , तिरुचिरापल्ली, वल्लम , सियामंगलम , और तिरुकलुकुंड्रम ऐसे कुछ क्षेत्र हैं जहां मैं रॉक-कट मंदिरों का परिचय देता हूं।

2. मामल्लापुरम में , नरसिंहवर्मन प्रथम ने अखंड रथों और मंडपों का पता लगाया, जो दूसरे चरण के प्रतिनिधि हैं। पंचपनादव _ रथ , या पाँच रथ , मंदिरों की पाँच अलग-अलग स्थापत्य शैलियों का प्रतीक हैं ।

3. तीसरे चरण में, राजसिम्हा ने नरम बलुआ पत्थर के मंदिरों को संरचनात्मक मंदिरों के रूप में पेश किया। उदाहरण के लिए, कांची में कैलासनाथ मंदिर और मामल्लपुरम में मामल्लपुरम तट मंदिर ।

4. चौथा चरण एक पल्लव मंदिर का प्रतिनिधित्व करता है जिसे बाद में बनाया गया था। उदाहरण के लिए, कांचीपुरम में वैकुंडपेरुमल , मुक्तेश्वर और मतगेंसवारा मंदिर हैं।

चोल साम्राज्य: (850-1279 ई.)

संगम काल की समाप्ति के बाद चोल उरैयुर में सामंत थे । वे 9वीं शताब्दी ईस्वी में फिर से प्रकट हुए और तंजौर को अपनी राजधानी बनाकर एक साम्राज्य स्थापित किया। इंपीरियल चोल के नाम से जाने जाने वाले लोगों के एक समूह ने श्रीलंका और मलय प्रायद्वीप पर शासन किया।

विजयालय -

विजयालय , जो शुरू में पल्लवों का सामंत था , ने चोल राजवंश की स्थापना की। राजराज प्रथम वास्तविक संस्थापक था। 850 ई. में उसने तंजौर पर कब्ज़ा कर लिया। तंजौर में उन्होंने एक दुर्गा मंदिर का निर्माण कराया।

विजयालय ने इंपीरियल चोल लाइन की स्थापना की। 815 ई. में उसने मुत्तैरैयारों को हरा दिया और तंजौर को अपने अधिकार में ले लिया।

आदित्य प्रथम (871-907 ई.)-

थॉन्डैनाडु कोंडारुलिया , राजकेसरी उनकी उपाधियाँ थीं। सबसे पहले वह पल्लव शासक अपराजितवर्मन का सामंत था। थिरुपुरम्बियम की लड़ाई में , आदित्य ने अपराजितवर्मन को मार डाला और 890 ईस्वी में टोंडिमंडलम पर नियंत्रण हासिल कर लिया , जिससे पल्लव साम्राज्य प्रभावी रूप से समाप्त हो गया।

परान्तका प्रथम (907-955)-

मदुरैनतक , मदुरईकोंडा और परकेसरी वर्मा सहित विभिन्न उपाधियाँ लीं। पहला सर्वशक्तिमान शासक परान्तक प्रथम था। परान्तक द्वितीय (956-973) उसके बाद गद्दी पर बैठा।

परांतक प्रथम एक प्रारंभिक चोल सम्राट था, जिसने पांड्यों को हराया और सीलोन का शासक बन गया, लेकिन तक्कोलम की लड़ाई में राष्ट्रकूटों से हार गया। इस साम्राज्य की राजधानी तंजौर, गंगैकोण्डचोलपुरम थी।

उत्तम चोल (973-985 ई.)-

चोलों के सबसे पुराने सोने और चांदी के सिक्के उत्तम चोल के हैं।

राजराज प्रथम (985-1014 ई.)-

उस समय उनका दिया हुआ नाम अरुमोलिवर्मन था। उन्हें संगीत बहुत पसंद था. अरुमोलिवर्मन राजराज , वनवन महादेवी के पुत्र, 985 ईस्वी में चोल साम्राज्य के उत्तराधिकारी बने। उन्हें अक्सर चोल साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है।

उनके पुत्र राजेंद्र प्रथम को श्रीलंका पर आक्रमण करने का काम सौंपा गया था। श्रीलंका के राजा महेंद्र पंचम के भाग जाने के बाद चोलों ने श्रीलंका के उत्तरी आधे हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया। यह उनकी कमान के तहत था कि चोलों ने कल्याणी के पश्चिमी चालुक्यों की बढ़ती ताकत को हराया था। इसके परिणामस्वरूप चोल शक्ति का विस्तार तुंगभद्रा नदी तक हो गया। शैव धर्म के एक कट्टर अनुयायी के रूप में, उन्होंने 1010 ई. में तंजौर में प्रसिद्ध राजराजेश्वर मंदिर, जिसे बृहदेश्वर मंदिर भी कहा जाता है, का निर्माण पूरा कराया। उन्होंने नागापट्टिनम में एक बौद्ध मठ के निर्माण में भी सहायता की।

राजेंद्र प्रथम (1014-44 ई.)- इतिहासकार स्मिथ ने उन्हें "दक्षिण का नेपोलियन" कहा था। राजराजा और उनके पुत्र राजेंद्र प्रथम महानतम चोल शासक (985-1014 ई.) थे। तंजौर में , राजराजा ने बृहदेश्वर / राजराजेश्वर मंदिर का निर्माण कराया , जो शिव को समर्पित है।

उड़ीसा, बंगाल, बर्मा और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह सभी पर राजेंद्र प्रथम ने विजय प्राप्त की थी। उसके शासनकाल के दौरान, चोल अपने चरम पर पहुंच गया था। राजेंद्र प्रथम ने गंगैकोंडचोल नाम अपनाया और गंगैकोंडचोलापुरम की स्थापना की। राजेंद्र तृतीय चोल वंश के अंतिम राजा थे।

चेर और पांड्य राज्यों पर चोल वर्चस्व उसके द्वारा पुनः स्थापित किया गया था। पश्चिमी चालुक्य राजा जयसिम्हा द्वितीय को हराने के बाद तुंगभद्रा नदी ने चोल- चालुक्य सीमा का निर्माण किया। वह अपने पिता की तरह एक पवित्र शैव थे और उन्होंने नई राजधानी गंगैकोंडचोलपुरम में एक शैव मंदिर बनवाया। जब राजेंद्र प्रथम की मृत्यु हुई तब चोल साम्राज्य अपने चरम पर पहुंच गया था। कुलोत्तुंगा प्रथम (अपनी बेटी अम्मनगादेवी , राजेंद्र के पोते के माध्यम से) और कुलोत्तुंगा तृतीय ने चोल साम्राज्य के वैभव को जारी रखा।

प्रशासन:

राजा, मंत्रिपरिषद की सहायता से, केंद्रीय सत्ता का प्रभारी होता था , हालाँकि प्रशासन लोकतांत्रिक था। चोल साम्राज्य को मदालम (प्रांतों) में विभाजित किया गया था, जिन्हें आगे वलनाडु (कमीशनरी), नाडु (जिला), और कुर्रम (क्षेत्र) (गांवों का एक समूह) में विभाजित किया गया था। चोल प्रशासन की विशेषता स्थानीय स्वशासन का संगठन है। आय के प्रमुख स्रोत भू-राजस्व और व्यापार कर थे।

कला और वास्तुकला:

द्रविड़ उस स्थापत्य शैली को दिया गया नाम है जो इस समय के दौरान लोकप्रिय हुई, जैसे कांचीपुरम में कैलाशनाथ मंदिर। दूसरा भाग छवि-निर्माण था, जिसकी परिणति शिव की नटराज, एक नाचती हुई आकृति में हुई। रामावतारम के लेखक कम्बना को तमिल कविता की महानतम शख्सियतों में से एक माना जाता है। कंब रामायण उनकी रामायण है। कंबाना , कुट्टन और पुगलेंदी के अनुसार, 'तमिल कविता के तीन रत्न'।

मंदिरों में, विमान, या तीन मंजिला पिरामिड टॉवर, मंदिर की पूरी संरचना पर हावी है और महिमा की भावना प्रदान करता है। अन्य दो प्रमुख संरचनाएँ गोपुरम और गर्भगृह हैं। विजयालय , चोलेश्वर , नागेश्वर, कोरंगानाथ और मुवरकोविथा मंदिर बेहतरीन उदाहरणों में से हैं।

के प्रमुख राजवंश (भाग II)

चालुक्य वंश:

पूर्व-मध्यकाल में
चालुक्य नाम से कई राजवंश थे , जो इस प्रकार हैं- • बादामी चालुक्य या प्राचीन पश्चिमी चालुक्य
• वेंगी (आंध्र) के पूर्वी

चालुक्य • कल्याणी चालुक्य या बाद के पश्चिमी चालुक्य •
गुजरात के सोलंकी चालुक्य

पुलकेशिन I-

चालुक्य राजवंश के संस्थापक थे , जिसने वातापी या बादामी पर केन्द्रित एक छोटा साम्राज्य बनाया था।

पुलकेशिन द्वितीय (610-642 ई.)-

उनके शासन का विवरण उनके द्वारा बनवाए गए एहोल शिलालेख में है। नर्मदा के तट पर उसने हर्षवर्द्धन को पराजित किया। ह्वेन त्सांग ने अपने गृह देश का दौरा किया। पुलकेशिन द्वितीय के पुत्र विक्रमादित्य उसके उत्तराधिकारी बने, उन्होंने चालुक्य साम्राज्य को मजबूत किया और पल्लव राजधानी कांची को लूटा।

कीर्तिवर्मन द्वितीय-

वह चालुक्यों का अंतिम सम्राट था, और उसे राष्ट्रकूट राजवंश के संस्थापक दंतिदुर्ग ने पराजित किया था।

चालुक्यों की कला और वास्तुकला :

वेसर मंदिर शैली चालुक्यों द्वारा स्थापित की गई थी , लेकिन राष्ट्रकूट और होयसल के दौरान ही यह अपने चरम पर पहुंची। चालुक्य मंदिर ऐहोल , बादामी और पट्टदकल में पाए जा सकते हैं । चालुक्यों के मंदिरों को दो चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

एक। एहोल और बादामी के मंदिर प्रारंभिक चरण के प्रतिनिधि हैं। कुछ प्रसिद्ध मंदिरों में शामिल हैं-

- लाड खान मंदिर (स्तम्भों वाले हॉल के साथ नीची, सपाट छत वाली संरचना),
- दुर्गा मंदिर (बुद्ध चैत्य जैसा दिखता है),
- हुचिमल्लीगुडी मंदिर, और
- मेगुटी में जैन मंदिर ।

बादामी में, प्रमुख मंदिर मुक्तेश्वर और मेलागुट्टी हैं शिवालय ।

बी। पट्टडकल के मंदिर दूसरे चरण का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहां दस मंदिर हैं, चार उत्तरी शैली में (पापनाथ मंदिर) और छह द्रविड़ शैली में (संगमेश्वर और विरुपाक्ष मंदिर)। विरुपाक्ष मंदिर कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर की तर्ज पर बनाया गया है। वे अपने गुफा मंदिर निर्माण के लिए भी प्रसिद्ध हैं। अजंता, एलोरा और नासिक उन स्थानों में से हैं जहां वे पाए जा सकते हैं।

राष्ट्रकूट :

राष्ट्रकूट कन्नड़ भाषी लोग थे जो अपनी पहली भाषा के रूप में कन्नड़ बोलते थे।

दंतिदुर्ग -

राष्ट्रकूट वंश के संस्थापक थे , और उन्होंने केरल में मान्यखेता में अपनी राजधानी स्थापित की । उसने प्रथम राजपूत गुर्जरों को हराया और उनसे मालवा छीन लिया। कीर्तिवर्मन द्वितीय पर विजय प्राप्त कर उसने चालुक्य साम्राज्य पर कब्ज़ा कर लिया। उनके उत्तराधिकारी, कृष्ण प्रथम ने वेंगी गंगा और पूर्वी चालुक्यों पर विजय प्राप्त की । एलोरा में, उन्होंने चट्टानों को काटकर बनाए गए अखंड कैलासा मंदिर का निर्माण कराया।

गोविंदा III-

वह उत्तर भारतीय साम्राज्य पर विजय प्राप्त करने वाला अगला महान राजा था।

अमोघवर्ष I-

अमोघवर्ष प्रथम (महानतम शासक) उसका उत्तराधिकारी बना और उसने 64 वर्षों तक शासन किया। वह जैन धर्म के अनुयायी थे। उनके मुख्य गुरु जिनसेना थे । वह पत्रों के संरक्षक थे और उन्होंने प्रसिद्ध कन्नड़ कृति कविराजमार्ग लिखा था। उसने राष्ट्रकूटों की राजधानी मालखेड या मान्यखेता का निर्माण करवाया ।

कृष्ण तृतीय (936-968 ई.)-

अमोघवर्ष प्रथम के उत्तराधिकारियों में से एक, कृष्ण तृतीय ने चोलों के विरुद्ध चढ़ाई की और तक्कोलम में उन्हें नष्ट कर दिया । वह दक्षिण की ओर आगे बढ़ा, तंजौर पर कब्ज़ा किया और रामेश्वरम तक आगे बढ़ा, जहाँ उसने कृष्णेश्वर मंदिर बनवाया। उसकी मृत्यु के बाद राष्ट्रकूटों का प्रभुत्व कम हो गया।

प्रशासन:

राष्ट्रकूट साम्राज्य को राष्ट्रों के नाम से जाने जाने वाले प्रांतों में विभाजित किया गया था , जो राष्ट्रपतियों द्वारा शासित थे । फिर उन्हें विषयों या जिलों में विभाजित किया गया, जिन पर विषयपतियों का शासन था । अगला उपखंड भुक्ति था, जिसमें भोगपतियों के नियंत्रण में 50-70 गांव शामिल थे । संघीय सरकार ने इन अधिकारियों को सीधे नियुक्त किया।

साहित्य:

अमोघवर्ष प्रथम एक जैन था जिसने कई जैन बुद्धिजीवियों का समर्थन किया था। पार्श्वभुदय , पार्श्व की जीवनी, उनके प्रशिक्षक जिनसेना द्वारा लिखी गई थी । गुणभद्र ने जैन संतों की जीवनियों का संग्रह आदिपुराण लिखा । राष्ट्रकूटों के शासनकाल में कन्नड़ साहित्य की शुरुआत हुई।

अमोघवर्ष का कविराजमार्ग कन्नड़ की पहली काव्य रचना थी। विक्रमसेनविजय की रचना महानतम कन्नड़ कवि पंपा ने की थी। शांतिपुराण एक अन्य प्रसिद्ध कन्नड़ कवि पोन्ना द्वारा लिखा गया था । अमोगावृत्ति सकटायन द्वारा लिखित एक व्याकरणिक पाठ है । उस समय के महान गणितज्ञ वीराचार्य , गणितसारम के निर्माता थे ।

कला और वास्तुकला-

एलोरा और एलीफेंटा दोनों राष्ट्रकूट कला और वास्तुकला के घर थे । कृष्ण प्रथम के शासनकाल के दौरान, एलोरा में कैलासा मंदिर [द्रविड़ियन चरित्र] की खुदाई की गई थी। इस मूर्ति में देवी दुर्गा को भैंस दानव को पराजित करते हुए दर्शाया गया है।

एलीफेंटा , या श्रीपुरी , बॉम्बे के पास एक छोटा सा द्वीप है। हाथी की आकृति देखने के बाद पुर्तगालियों ने इसे एलीफेंटा नाम दिया । एलीफेंटा राष्ट्रकूट मूर्तिकला का शिखर था । गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर द्वारपालकों की विशाल आकृतियाँ पहरा देती हैं। मंदिर के आसपास की दीवारों पर शिव को कई रूपों में दर्शाया गया है - नटराज, गंगाधर, अर्धनारीश्वर और सोमस्कंद । त्रिमूर्ति, जो निर्माता, संरक्षक और विध्वंसक के रूप में शिव के तीन पक्षों का प्रतिनिधित्व करती है, मंदिर की सबसे प्रभावशाली आकृति है।

दक्षिण के अन्य महत्वपूर्ण साम्राज्य:

• पश्चिमी/बाद के चालुक्य

• काकतीय • यादव • होयसल

द्वारसमुद्र (आधुनिक हेलेबिड) में होयसलेश्वर का मंदिर है ।

6.एलिफंटा और एलोरा की गुफाएं

इसकी उत्पत्ति पर सबसे विश्वसनीय सिद्धांत के अनुसार, एलीफेंटा गुफाओं का निर्माण 450 और 750 ईस्वी के बीच किया गया था। भारत में, यह समय बौद्ध धर्म के पतन और ब्राह्मणवादी परंपराओं की बहाली के साथ मेल खाता है। **बादामी राजवंश के योद्धा राजा पुलकेशिन द्वितीय के चालुक्यों को गुफाओं के एक बड़े हिस्से को बनवाने का श्रेय दिया जाता है।** 400 ईसा पूर्व से लेकर अब तक एलिफेंटा द्वीप पर कम से कम आधा दर्जन साम्राज्यों का नियंत्रण था। इस लेख में हम एलीफेंटा गुफाओं के इतिहास पर अधिक चर्चा करेंगे और देखेंगे एलीफेंटा गुफाओं में कितनी गुफाएं हैं ?

एलीफेंटा गुफाओं का इतिहास :

एलिफेंटा द्वीप पर कोंकण के मौर्य , त्रिपिटक , बादामी के चालुक्य , सहारा, राष्ट्रकूट , कल्याणी चालुक्य , देवगिरि के यादव, गुजराती शाही राजवंश, पुर्तगाली, मराठा और ब्रिटिशों का शासन था। एलीफेंटा गुफाएं मुंबई के एलीफेंटा द्वीप पर हैं, जिसे कभी-कभी घरपुरी द्वीप भी कहा जाता है ।

एलीफेंटा द्वीप, जिसमें सात गुफाएँ हैं, भगवान शिव का भव्य घर और हिंदू गुफा संस्कृति का शिखर है। भारत के सबसे प्रभावशाली रॉक-कट वास्तुकला समूहों में से एक सात गुफाओं में पाया जा सकता है। एलीफेंटा गुफाओं के इतिहास के अनुसार , राष्ट्रकूट सम्राटों ने 8वीं शताब्दी में भगवान शिव को समर्पित गुफा मंदिर की खुदाई की थी।

सबसे महत्वपूर्ण गुफा महेसा-मूर्ति है। यहां द्वारपालों की विशाल आकृतियां हैं, जिन्हें ' **द्वारपालक** ' भी कहा जाता है, जो आश्चर्यजनक हैं। गुफा का मुख्य भाग 27 मीटर वर्गाकार है, इसे सहारा देने वाले स्तंभों की छह पंक्तियाँ हैं (तीन खुले किनारों और पीछे के गलियारे के प्रवेश द्वारों को छोड़कर)। इस गुफा में नटराज शिव, अर्धनारीश्वर , कल्याण-सुंदरम शिव, रावण द्वारा कैलास उठाने, अंधकारी -मूर्ति, अंधका राक्षस वध और अन्य देवी-देवताओं के अनूठे चित्रण वाले मूर्तिकला कक्ष शामिल हैं । गुफाओं के साथ, एलीफेंटा द्वीप ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी और भारत पर पुर्तगाली कब्जे की कलाकृतियों का घर है, जैसा कि पहाड़ी के पूर्वी हिस्से में दबे हुए स्तूपों से पता चलता है।

एलीफेंटा गुफाओं की वास्तुकला :

गुफा के प्रवेश द्वार पर 7 मीटर ऊँची उत्कृष्ट कृति "सदाशिव" अंकित है। वामदेव या उमा (दायां आधा), तत्पुरुष या महादेव (पूरा मध्य चेहरा), और अघोरा या भैरव (बायां आधा) के साथ , यह शिव के तीन पहलुओं को चित्रित करता है: निर्माता, संरक्षक और विध्वंसक (बायां आधा)। मुख्य गुफा अपनी नक्काशी के कारण प्रसिद्ध है जो शिव के सम्मान में विभिन्न आकृतियों और कृत्यों में बनाई गई है। गुफाओं को बनाने के लिए ठोस बेसाल्ट का उपयोग किया गया था।

मंडला डिज़ाइन का उपयोग केंद्रीय मंदिर की दिशा और सहायक मंदिरों की सापेक्ष स्थिति बताने के लिए किया जाता है। त्रिमूर्ति सदाशिव (तीन मुख वाले शिव), नटराज (नृत्य के भगवान), और योगीश्वर (योग के भगवान), जो 20 फीट (6.1 मीटर) ऊंचे हैं, नक्काशी में सबसे प्रसिद्ध हैं। गुफाएँ, जो कुल 5,600 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैली हुई हैं, सभी चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर (60,000 वर्ग फुट) हैं। अपने सबसे जटिल रूप में, उनमें मुख्य कक्ष, दो पार्श्व कक्ष, आंगन और सहायक मंदिर हैं, लेकिन सभी हिस्से अच्छी तरह से विकसित नहीं हैं।

एलीफेंटा गुफाओं में कितनी गुफाएँ हैं ?

एलिफेंटा द्वीप, भगवान शिव का प्यारा निवास स्थान, मुंबई के पास अरब सागर में एक द्वीप पर सात गुफाएँ शामिल हैं। सात गुफाएँ भारत के रॉक-कट वास्तुकला के सबसे आश्चर्यजनक संग्रहों में से एक हैं। एलीफेंटा द्वीप पर दो गुफा समूह पाए जा सकते हैं (एक संकीर्ण घाटी द्वारा अलग की गई दो पहाड़ियाँ)। स्तूप हिल (इसके शिखर पर स्थित प्राचीन बौद्ध स्तूप टीलों के नाम पर) में दो गुफाएँ हैं, एक अभी भी अधूरी है, और पूर्व में कई कुंड हैं।

पश्चिम के बड़े परिसर में चट्टानों को काटकर बनाए गए पांच हिंदू मंदिर हैं। प्रत्येक गुफा में दो पार्श्व कक्ष, एक चट्टान को काटकर बनाया गया मंदिर, एक विशाल मुख्य कक्ष, आंगन और छोटे मंदिर बनाए गए हैं। गुफाएँ ठोस बेसाल्ट चट्टान हैं और इनमें हिंदू और बौद्ध प्रतिमा और विषयवस्तु हैं। घारापुरी या एलीफेंटा द्वीप, मुख्य सड़क से थोड़ा हटकर, वह स्थान है जहाँ गुफाएँ स्थित हैं। सहार में 16 किलोमीटर लंबा छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा निकटतम है।

निष्कर्ष: सुरंगों के अलावा , एलिफेंटा द्वीप में ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी और भारत में पुर्तगाली काल के पुरातात्विक अवशेष मौजूद हैं, जैसा कि क्रमशः पहाड़ी के पूर्वी हिस्से में दबे हुए स्तूपों और इसके शिखर पर एक तोप से प्रदर्शित होता है। 1909 में, ब्रिटिश भारतीय अधिकारियों ने गुफाओं को और अधिक नुकसान से बचाने की कोशिश की। बाद में इस स्थल की मरम्मत की गई और 1970 के दशक में भारत सरकार द्वारा इसे एक विरासत स्थल और पर्यटन स्थल में बदल दिया गया। इस लेख में एलीफेंटा गुफाओं के इतिहास के बारे में प्रचुर जानकारी है ।

एलोरा की गुफाएँ

एलोरा महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित है । इसकी कलाकृति 600 से 1000 ईस्वी पूर्व की है। चरणनंद्री पहाड़ियों की बेसाल्ट चट्टानों में 100 से अधिक गुफाएँ खोजी गई हैं , जिनमें से 34 जनता के लिए उपलब्ध हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने गुफाओं को संरक्षित स्थल के रूप में नामित किया है। यहां 17 हिंदू गुफाएं, 12 बौद्ध गुफाएं और 5 जैन गुफाएं हैं। प्राचीन भारत में प्रचलित धार्मिक सद्भाव को प्रदर्शित करने के लिए इनका निर्माण एक-दूसरे के करीब किया गया था। एलोरा **गुफाएँ** राष्ट्रकूट राजवंश के दौरान बनाई

गई थीं। राष्ट्रकूट राजवंश ने हिंदू और बौद्ध गुफाओं के एक हिस्से का निर्माण कराया और यादव राजवंश ने जैन गुफाओं के एक हिस्से का निर्माण कराया। एलोरा में गुफाएँ और गुफा मंदिर प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल हैं। ये गुफाएँ कैलासा मंदिर के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं जो दुनिया का सबसे बड़ा अखंड उत्खनन है।

एलोरा की हिंदू गुफाएँ:

हिंदू गुफाओं का निर्माण कलचुरि काल और राष्ट्रकूट राजवंश के दौरान दो चरणों में किया गया था। इसका निर्माण 6ठी शताब्दी के मध्य में शुरू हुआ और 8वीं शताब्दी में समाप्त हुआ। एलोरा में , छठी शताब्दी में **नौ गुफा मंदिरों की खोज की गई, उसके बाद चार और मंदिरों की खोज की गई।**

- धूमर लेना, गुफा 29: प्रारंभिक हिंदू गुफाओं का निर्माण बौद्ध या जैन गुफाओं से पहले हुआ था। हालाँकि, कल्पना से पता चलता है कि कलाकारों ने विभिन्न हिंदू देवी-देवताओं को बड़े और समान ध्यान से रिकॉर्ड किया है। ये प्रारंभिक गुफाएँ मुख्य रूप से हिंदू भगवान शिव को समर्पित थीं। मंदिर के केंद्र के अंदर एक चट्टान को काटकर बनाया गया लिंग -योनि इन गुफा मंदिरों का एक नियमित तत्व था, प्रत्येक तीर्थयात्रा के लिए एक क्षेत्र से घिरा हुआ था।
- गुफा 21, रामेश्वरम मंदिर: यह पूरी तरह से मंडप वर्ग अवधारणा का उपयोग करके बनाया गया है, जिसमें एम्बेडेड ज्यामितीय पैटर्न लगातार दोहराए जाते हैं। मंदिर में शिव लिंग देवी गंगा और यमुना की प्रसिद्ध मूर्तियों के बीच में स्थित है। ये सभी एक समबाहु त्रिभुज में व्यवस्थित हैं। इसमें देवी पार्वती और भगवान शिव के बीच की कहानी को दर्शाया गया है।
- अपने डिजाइन और इस तथ्य के कारण भारत में एक प्रसिद्ध **एलोरा गुफा मंदिर है कि यह पूरी तरह से एक ही चट्टान को काटकर बनाया गया था।** मंदिर के तहखाने के स्तर पर कई शैव, वैष्णव और शक्ति की मूर्तियां और कलाकृतियां हैं, जिनमें कृष्ण के बचपन की बारह घटनाएं शामिल हैं, जो वैष्णववाद का एक अनिवार्य हिस्सा हैं।

एलोरा की बौद्ध गुफाएँ:

ये गुफाएँ पहाड़ के दक्षिणी ढलान पर स्थित हैं और इनका निर्माण 630 और 700 ईस्वी के बीच हुआ था। बारह बौद्ध गुफाओं में से ग्यारह विहार हैं, जिनमें प्रार्थना कक्ष हैं जिनमें विशाल बहुमंजिला संरचनाएं हैं जिनमें रहने के क्षेत्र, शयन कक्ष, रसोई और अन्य कमरे शामिल हैं। सभी बौद्ध गुफाओं में गुफा 10 का विशेष महत्व है। इसे "विश्वकर्मा गुफा" के नाम से जाना जाता है और इसका निर्माण लगभग 650 ई.पू. में हुआ था।

एलोरा की जैन गुफाएँ:

एलोरा जैन गुफाएँ पाँच हैं, जिनकी संख्या 30 से 34 तक है। ये गुफाएँ अन्य गुफाओं से केवल कुछ सौ गज की दूरी पर हैं। पाँचों में से दो मुख्य गुफाएँ और दो अधूरी गुफाएँ हैं। इन गुफाओं की उत्पत्ति 9वीं और 10वीं शताब्दी में हुई थी और ये दिगंबर जैन संप्रदाय से जुड़ी हैं। गुफा संख्या 30 छोटा कैलाश है; गुफा 31 अधूरी है; गुफा 32 को इंद्र सभा के नाम से जाना जाता है; गुफा 33 को जगन्नाथ सभा के नाम से जाना जाता है, और गुफा 34 एक छोटी गुफा है जो गुफा 33 में एक छिद्र से जुड़ी हुई है।

निष्कर्ष: एलोरा **की गुफाएँ** हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन संस्कृति जैसे सभी धर्मों के सबसे शुरुआती मिश्रित स्थानों में से एक हैं। एलोरा **की गुफाएँ** दूसरी और छठी शताब्दी ईस्वी के बीच विकसित हुईं। गुफा चित्रों और मूर्तियों को 1983 से यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

7. बुद्ध के जन्म से संबंधित बौद्ध साहित्य और कहानियाँ

बौद्ध धर्म दुनिया के सबसे पुराने और प्रमुख धर्मों में से एक है। बौद्ध धर्म की स्थापना छठी शताब्दी ईसा पूर्व में गौतम बुद्ध ने की थी। मूल रूप से उनका नाम सिद्धार्थ था, उनके शाही जीवन से वे संतुष्ट नहीं थे , और अपने आसपास बीमारी, बुढ़ापे की पीड़ा और मृत्यु को देखकर उन्हें यातना दी गई थी। वह मानव जाति के दुखों के समाधान की तलाश में एक पथिक बन गए और अंततः एक पीपल के पेड़ के नीचे ध्यान करने के लिए सब कुछ त्याग दिया और अपने निरंतर ध्यान के 49 वें दिन ' **सर्वोच्च ज्ञान** ' प्राप्त किया। उन्हें बुद्ध के नाम से जाना जाने लगा और उनकी शिक्षाओं का वर्णन ' **चार आर्य सत्य** ' और ' **अष्टांगिक मार्ग** ' में किया गया।

बौद्ध साहित्य:

- बौद्ध साहित्य को अंग्रेजी में 'त्रिपिटक' (तीन टोकरी) या पाली कैनन के रूप में भी जाना जाता है और इसमें तीन पिटक , सुत्त पिटक , अभिधम्म पिटक और विनय पिटक शामिल हैं ।
- वे बौद्ध शिक्षाओं का एक संग्रह हैं जो थेरवाद बौद्ध दर्शन की नींव बनाते हैं। यह बौद्ध दर्शन का सबसे पुराना संकलन है।
- बुद्ध के विभिन्न जन्मों की कहानियाँ **'जातक'** या पिटक और थेरवाद से प्राप्त **जातक कथाएँ नामक साहित्य में निहित हैं।**

जातक:

- **जातक का** अनुवाद 'जन्म कथा' या 'जन्म से संबंधित' है और यह मानव और पशु रूपों में गौतम बुद्ध के पिछले जन्मों की कहानियों के बारे में दक्षिण एशिया का साहित्य है।
- इनमें से कुछ जातक कथाएँ त्रिपिटक में भी बिखरी हुई हैं, जिनमें बाद में 'कारिया पिटक ' या आचरण की टोकरी में संकलित 35 का एक समूह भी शामिल है।

- **के** प्रारंभिक भाग **जातक** संभवतः ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी के रहे होंगे, और बाद के भाग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान जोड़े गए होंगे।
- **जातक कथाएँ** आम तौर पर एक समान कथानक या विषय का अनुसरण करती हैं, जहाँ बुद्ध राजसी, एक देवता, एक बहिष्कृत, या यहाँ तक कि एक जानवर के रूप में प्रकट हो सकते हैं। फिर भी, वह एक ऐसे गुण का प्रतिनिधित्व करता है जो कहानी का नैतिक बन जाता है।
- इन कहानियों में बुद्ध के आसपास के पात्र अक्सर शरारती उपद्रवी होते हैं जो खुद को सभी प्रकार की परेशानियों में पाते हैं लेकिन सुखद अंत पाने के लिए बुद्ध द्वारा निभाए गए चरित्र द्वारा उन्हें बचा लिया जाता है।
- वह परिचयात्मक कहानी में अपने आस-पास के पात्रों को अपने अतीत के लोगों के पात्रों के साथ भी पहचान सकता है।
- ये कहानियाँ अक्सर हास्यप्रद होती हैं और इनमें विविधता होती है, हालाँकि मुख्य विषय गौतम बुद्ध द्वारा विभिन्न रूपों में सदाचार की शिक्षा है।

जातक कथाओं के स्रोत :

- **जातक कथाओं** के कई स्रोतों में त्रिपिटक, गांधार बौद्ध ग्रंथ, थेरवाद जातक संग्रह जिसमें मिश्रित छंद में 547 **जातक शामिल हैं,** अट्ठकथा (पाली टिप्पणियाँ), बुद्धवंश , महावस्तु , विनयवस्तु , जातकमाला , महायान सूत्र आदि शामिल हैं।
- ऐसे दिवंगत **जातक** भी हैं जिनका संकलन 19वीं शताब्दी के अंत में किया गया था।
- कुछ के नाम बताने के लिए, **जातक:** सियार और ऊदबिलाव (दभपुप्पा जातक), सुनहरे पंखों वाला हंस (सुवा ṇṇ अहा ṃ सा जातक), वेसंतरा जातक, हाथी लड़कियों जैसा चेहरा, मूर्ख, डरपोक खरगोश (दद्दाभा जातक), वगैरह।

और संस्कृति में जातक :

- **जातक** बौद्ध शिक्षाओं को फैलाने के लोकप्रिय तरीकों में से एक थे और अनुष्ठानों और त्योहारों में व्यापक रूप से उपयोग किए जाते थे।
- उन्हें साहित्य, प्रदर्शन, मंदिर कला, अस्थायी सड़क और त्योहार कला, फिल्म, कॉमिक्स और कार्टून जैसे विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया है।

8.नालंदा विश्वविद्यालय का ऐतिहासिक महत्व

नालन्दा विश्वविद्यालय विश्व के प्रथम शैक्षणिक संस्थानों में से एक था। इसकी स्थापना 5वीं शताब्दी में हुई थी, जो बिहार में राजगृह (अब राजगीर) के करीब स्थित है। यह गुप्त राजा- कुमारगुप्त , हर्ष- कन्नौज के सम्राट और बाद में पाल साम्राज्य के अधीन फला-फूला। यह न केवल एक आवासीय विश्वविद्यालय था बल्कि एक बौद्ध मठ भी था। विश्वविद्यालय का विवरण प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन त्सांग के लेखों में पाया जा सकता है। उनके अनुसार, उस समय नालंदा में 10,000 भिक्षु और 2000 शिक्षक थे। प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री आर्यभट्ट इस विश्वविद्यालय के प्रमुख थे। कुछ प्रमुख छात्र हर्षवर्द्धन, नागार्जुन, वसुबंधु आदि थे। एक विश्वविद्यालय के रूप में नालंदा की 800 वर्षों की परंपरा थी।

महत्वपूर्ण शर्तें:

- **नालन्दा:** नालन्दा तीन संस्कृत शब्दों ना-आलम-दा से मिलकर बना है जिसका अर्थ है "ज्ञान का अजेय प्रवाह "।
- **ह्वेन त्सांग:** ह्वेन त्सांग एक चीनी विद्वान, यात्री थे । विश्वविद्यालय के बारे में विवरण उनके लेखों में पाया जा सकता है। कहा जाता है कि वह नालन्दा विश्वविद्यालय का छात्र था।
- **आर्यभट्ट:** आर्यभट्ट भारत के सबसे प्रसिद्ध गणितज्ञों और खगोलविदों में से एक हैं। उन्होंने शून्य (0) अंक का आविष्कार किया, जिसने गणना के पैटर्न को बदल दिया था। वह नालन्दा विश्वविद्यालय के प्रमुख थे।

नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना:

वर्तमान भारत के बिहार में उच्च अध्ययन के एक प्राचीन केंद्र का नाम है । यह बिहार में, बिहार की राजधानी पटना से लगभग 95 किमी दक्षिणपूर्व में स्थित है । यह 427 ई. से 1197 ई. तक बौद्ध अध्ययन का केंद्र था।

कुमारगुप्त के काल में हुई थी । लेकिन यह 5वीं शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के शासनकाल के दौरान फलना-फूलना शुरू हुआ। बाद में, कन्नौज के सम्राट , हर्षवर्द्धन ने विश्वविद्यालय में सुधार किया।

प्रारंभ से ही, नालन्दा उत्कृष्टता का केन्द्र था। उस समय इसका निर्माण केवल बौद्ध धर्म के बारे में ज्ञान देने के लिए किया गया था। हालाँकि बाद में, इसने एक पूर्ण विश्वविद्यालय के रूप में अपनी यात्रा शुरू की जिसने न केवल धार्मिक ज्ञान पर ध्यान केंद्रित किया बल्कि वास्तुकला, चिकित्सा, व्याकरण, गणित और कई अन्य विषयों के बारे में भी ज्ञान फैलाया। न केवल भारत से बल्कि चीन, तिब्बत, कोरिया और मध्य एशिया से भी छात्र नालंदा विश्वविद्यालय में शामिल हुए। चूँकि यह एक आवासीय विश्वविद्यालय था, छात्र वहाँ रहते हैं और विभिन्न विषयों में ज्ञान प्राप्त करते हैं।

नालन्दा विश्वविद्यालय की संरचना:

- ऐसा कहा जाता है कि नालन्दा वास्तुकला की उत्कृष्ट कृति थी। यह पूरी तरह से चमकदार लाल ईंटों से बना था, इसकी दीवारें ऊँची थीं और प्रवेश द्वार पर एक विशाल द्वार था। परिसर में झीलों और पार्कों के साथ-साथ कई मंदिर, स्तूप, कक्षाएँ, ध्यान कक्ष आदि थे।
- विश्वविद्यालय का मुख्य आकर्षण पुस्तकालय है जिसे "धर्म गुंज" कहा जाता है जिसका अर्थ है सत्य का पर्वत। यह अच्छी तरह से सुसज्जित था और प्रकृति में विशाल रूप से स्थित था। पुस्तकालय इतना विशाल था कि इसमें तीन बहुमंजिला इमारतें शामिल थीं। इन इमारतों के नाम भी थे. वे हैं रत्नसागर (अर्थात् रत्नों का सागर), रत्नोदधि (रत्नों का सागर), और रत्नरंजक (रत्नों से सुसज्जित)।
- इन सभी में रत्नोदधि सबसे बड़ी थी। रत्नोदधि में सबसे पवित्र पुस्तकें और पांडुलिपियाँ रखी जाती थीं । यह एक इमारत थी जो नौ मंजिल ऊंची थी।
- इस डेटा से हम लाइब्रेरी में मौजूद किताबों की भारी संख्या का अनुमान लगा सकते हैं। ऐसा कहा जाता है कि नालन्दा में मूल लेखन में उपनिषद थे। इसके अलावा, कुछ संस्कृत पुस्तकें जैसे अष्टसहस्रिका , प्रज्ञापारमिता आदि भी आक्रमणों द्वारा नष्ट कर दी गईं।

नालन्दा विश्वविद्यालय पर हमले:

1. हूणों द्वारा विनाश:

कहा गया है कि नालन्दा पर कुल तीन आक्रमण हुए। पहला आक्रमण 455 ई. से 470 ई. के बीच हुआ जब समुद्रगुप्त गुप्त साम्राज्य का सम्राट था। यह आक्रमण मध्य एशियाई जनजातीय समूह हूणों द्वारा किया गया था। वे हिमालय के खैबर दर्रे से भारत में प्रवेश करते थे। उस समय उनके आक्रमण और हमले का महँगे उत्पादों को लूटने के अलावा कोई विशेष कारण नहीं था।

इसके रख-रखाव हेतु विश्वविद्यालय में कुछ किफायती स्रोत मौजूद थे। हूणों ने उन सबको लूट लिया और चले गये। चूंकि विनाश बहुत गंभीर नहीं था, इसलिए गुप्त साम्राज्य के सम्राट स्कंदगुप्त ने इसे फिर से स्थापित किया और कुछ सुधार किए। उसी समय नालन्दा का प्रसिद्ध पुस्तकालय स्थापित हुआ।

2. गौड़स राजवंश द्वारा विनाश :

नालन्दा में दूसरा आक्रमण 7वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ। यह आक्रमण बंगाल के सम्राट गौडस राजवंश ने किया था । इस हमले के पीछे मुख्य कारण राजनीतिक असंतुलन था. उस समय कन्नूज के सम्राट हर्षवर्द्धन का शासन था। कई इतिहासकारों का कहना है कि हर्षवर्द्धन और गौडस राजवंश के बीच संघर्ष हुआ था । बदला

लेने के लिए गौड़स राजवंश ने नालन्दा विश्वविद्यालय पर आक्रमण कर दिया। हालाँकि, विनाश पर्याप्त घातक नहीं था। हर्षवर्द्धन ने विश्वविद्यालय की पुनः स्थापना की और पुनः नालन्दा विश्व भर में ज्ञान बाँटने लगा।

3. बख्तियार खिलजी द्वारा विनाश:

कुतुबुद्दीन ऐबक के सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालन्दा विश्वविद्यालय पर आक्रमण किया। यह हमला बहुत घातक था लेकिन इस आक्रमण के पीछे कोई राजनीतिक इच्छा नहीं थी। यह हमला इतना घातक था कि इस आक्रमण के बाद कोई भी दोबारा नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण नहीं कर सका।

बख्तियार खिलजी द्वारा आक्रमण का कारण

- ऐसा कहा गया था कि बख्तियार खिलजी बीमार था और अपनी स्वास्थ्य स्थिति में सुधार के लिए हर चिकित्सक के पास गया, लेकिन कोई भी ऐसी दवा का सुझाव देने में सक्षम नहीं था जो उसकी स्वास्थ्य स्थिति को ठीक कर सके। कुछ लोगों ने उनके सामने प्रस्ताव रखा कि वह राहुल श्री भद्र की मदद ले सकते हैं जो उस समय नालंदा विश्वविद्यालय के प्रिंसिपल थे।
- राहुल श्री भद्र ने उनका सफलतापूर्वक इलाज किया। खिलजी को बहुत असुरक्षित महसूस हुआ और उसने आयुर्वेद के सभी ज्ञान को खत्म करने का फैसला किया क्योंकि वह इस विचार से परेशान था कि एक भारतीय विद्वान उसके हकीमों से अधिक जानता है। बख्तियार खिलजी द्वारा नालन्दा पर आक्रमण करने का यही कारण था।
- मिन्हाज - ए -सिराज ने अपने काम तबकात - ए -नासिरी में बताया कि कैसे हजारों भिक्षुओं की हत्या कर दी गई क्योंकि खिलजी ने बौद्ध धर्म को खत्म करने और इस्लाम की स्थापना के लिए हर संभव प्रयास किया था।

हमले से हुआ विनाश:

चूंकि बख्तियार खिलजी का एकमात्र इरादा ज्ञान के स्रोत को नष्ट करना था, इसलिए उसने सबसे पहले नालंदा के पुस्तकालय पर हमला किया। उन्होंने उन पुस्तकालयों में आग लगा दी जिनमें उस समय लगभग 90 लाख पुस्तकें थीं। कुछ पुस्तकें लेखन में मौलिक थीं। इतिहासकारों का मानना है कि सभी पुस्तकों को पूरी तरह से जलने में तीन महीने का समय लगा। बख्तियार खिलजी ने न केवल पुस्तकालय को नष्ट कर दिया, बल्कि विश्वविद्यालय में रहने वाले सभी भिक्षुओं और विद्वानों को भी मार डाला क्योंकि वह नहीं चाहता था कि ज्ञान विद्वानों से विद्वानों तक पहुंचे। चूँकि यह विनाश इतना घातक था कि कोई अन्य सम्राट इसका पुनर्निर्माण नहीं करा सका। अतः नालन्दा के ज्ञान का प्रवाह समाप्त हो गया।

निष्कर्ष:

1193 में लूटे जाने से पहले महिपाल आखिरी राजा था जिसने नालंदा को संरक्षण दिया था। 19वीं सदी में एएसआई द्वारा खुदाई शुरू करने तक विश्वविद्यालय को भुला दिया गया था। इसे 9 जनवरी, 2009 को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। 2010 में, भारतीय संसद ने एक विधेयक को मंजूरी दी, जिसमें अक्टूबर में थाईलैंड में आयोजित चौथे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में एक संयुक्त प्रेस वक्तव्य के आधार पर नालंदा विश्वविद्यालय की बहाली का आह्वान किया गया था। 2009. इसे औपचारिक रूप से 14 सितंबर 2014 को शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए फिर से खोला गया। पुरानी चयन प्रक्रिया का सम्मान करने के लिए दुनिया भर से कुल 1000 आवेदनों में से केवल 15 उम्मीदवारों को स्वीकार किया गया। सरकार ने इसे "राष्ट्रीय महत्व के संस्थान" के रूप में नामित किया है।

संबंधित अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न और उत्तर:

Q1:नालंदा के पुस्तकालय का क्या नाम था?

"धर्म गुंज" नालन्दा के पुस्तकालय का नाम था। यह एक ऐसी इमारत थी जहाँ 90 लाख किताबें रखी जा सकती थीं। यह इतना विशाल था कि बख्तियार खिलजी के आक्रमण के दौरान इसे पूरी तरह जलने में 3 महीने लग गए।

Q2: नालंदा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय भवनों में कितनी बहुमंजिला इमारतें शामिल हैं?

नालंदा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय भवनों में 3 बहुमंजिला इमारतें हैं। यह इमारत ऊंची दीवारों से बनी है और वे अच्छी तरह से सुसज्जित हैं। कुछ इमारतें नौ मंजिल ऊंची थीं।

Q3:नालंदा विश्वविद्यालय के बहुमंजिला पुस्तकालय भवनों के नाम बताइए।

बहुमंजिला पुस्तकालय भवन हैं: रत्नसागर (अर्थात् रत्नों का सागर), रत्नोदधि (रत्नों का सागर), रत्नरंजक (रत्नों से सुसज्जित)। इनमें रत्नोदधि सबसे बड़ी थी। यह नौ मंजिल ऊंची थी और अन्य इमारतों की तुलना में अधिक मात्रा में किताबें रखने में सक्षम थी।

Q4: कुछ विषयों के नाम बताइए जो नालंदा में पढ़ाए जाते थे।

नालंदा में पढ़ाए जाने वाले कुछ विषय खगोल विज्ञान, दर्शनशास्त्र, गणित, व्याकरण, वास्तुकला आदि थे। यह बहुत आश्चर्य की बात है कि उस समय जब अत्याधुनिक तकनीकों का अभाव था, तो नालंदा विश्वविद्यालय इन विषयों को पढ़ाने में कैसे सक्षम था। वास्तुकला जैसा कुछ विषय आजकल भी बहुत कठिन है। इस दृष्टि से नालन्दा अतुलनीय है।

प्रश्न5:नालंदा विश्वविद्यालय के कुछ छात्रों के नाम लिखिए।

कन्नौज साम्राज्य का सम्राट था। बाद में बंगाल के गौडस राजवंश द्वारा हमला किए जाने के बाद उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्निर्माण किया।

9. जैन धर्म और उसकी परिषद

जिना " शब्द से बना है जिसका अर्थ है मुक्तिदाता या विजेता। यह धर्म अहिंसा के माध्यम से मुक्ति, आध्यात्मिक शुद्धता और आत्मज्ञान की बात करता है। जैन 24 लोगों के एक समूह की पूजा करते हैं जिन्हें तीर्थंकर के नाम से जाना जाता है। पहले तीर्थंकर ऋषभ नाथ थे और 24वें महावीर थे।

उत्पत्ति के कारण:

- यह 6ठी शताब्दी के दौरान था कि धर्म महत्वपूर्ण हो गया, और हिंदू धर्म कठोर और रूढ़िवादी या तो जटिल अनुष्ठान और ब्राह्मणों का प्रभुत्व बन गया।
- समाज को चार वर्णों में विभाजित किया गया था, ब्राह्मणों और राष्ट्रीय को सर्वोच्च दर्जा प्राप्त था, उन्हें कर और दंड से छूट दी गई थी।
- वैश्य प्रमुख करदाता थे और शूद्र और वैश्य द्विज की श्रेणी में थे जो पवित्र धागा नहीं पहन सकते थे और वेदों का अध्ययन करने से दूर रहते थे।
- निचले वर्णों के साथ अछूत, क्रूर और लालची माना जाता था।
- लोहे के कारण कृषि अर्थव्यवस्था बढ़ रही थी। इसके लिए बैलगाड़ी और पशुपालन की आवश्यकता थी, लेकिन वैदिक संस्कृतियों में जानवरों की हत्या की प्रथा की अनुमति नहीं थी।
- सिक्कों के प्रचलन ने व्यापार और वाणिज्य को प्रभावित किया और वैश्यों के महत्व को समृद्ध किया।

वर्धमान महावीर:

- वह 24वें और अंतिम तीर्थंकर थे, जिनका जन्म 540 ईसा पूर्व में वैशाली के पास कुंडग्राम में हुआ था।
- ज्ञात्रिक वंश से थे। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था, जो क्षत्रिय वंश के मुखिया थे और उनकी माता त्रिशला वैशाली के राजा चेतका की बहन थीं।
- उनका विवाह यशोदा से हुआ था और उनकी अंजा नाम की एक बेटी थी।
- उन्होंने अपना घर त्याग दिया और 30 साल की उम्र में तपस्वी बन गए। 12 साल तक तपस्या की और 42 साल की उम्र में सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान (कैवल्य) प्राप्त किया।
- उन्होंने अपना पहला उपदेश पावा में दिया और 72 वर्ष की आयु में 468 ईसा पूर्व पावापुरी में उनकी मृत्यु हो गई।
- जैन धर्म की शिक्षा में वैदिक संस्कृति के सिद्धांतों की अस्वीकृति, ईश्वर का अस्तित्व न होना और कर्म कैसे पुरस्कार और दंड देते हैं, शामिल हैं।

जैन धर्म के अनुयायी:

तीन रत्न या त्रिरत्न:

- सम्यक्दर्शन (सम्यकदर्शन)
- सम्यकज्ञान (सम्यकज्ञान)
- सम्यक कर्म (सम्यकचरित्र)

जैन धर्म के पाँच सिद्धांत:

- अहिंसा - किसी जीवित प्राणी को चोट न पहुँचाना।
- सत्य - झूठ मत बोलो अस्तेय - चोरी मत करो
- अपरिग्रह - संपत्ति अर्जित न करना
- ब्रह्मचर्य- संयम का पालन करें

ईश्वर की अवधारणा:

- ब्रह्माण्ड अनादि है, इसका न तो आदि है और न ही अंत।
- प्रत्येक इकाई लगातार अपना रूप बदलती रहती है और ब्रह्मांड में कुछ भी बनाया या नष्ट नहीं किया जा सकता है।
- जैन धर्म ब्रह्मांड के निर्माता, उत्तरजीवी या विध्वंसक के रूप में ईश्वर की उपस्थिति में विश्वास नहीं करता है।
- जब कोई व्यक्ति अपने सभी कर्मों को नष्ट कर देता है, अपनी आत्मा को मुक्त कर लेता है। मुक्त आत्मा के पास अनंत ज्ञान, अनंत दृष्टि और अनंत शक्ति होती है।

जैन धर्म के संप्रदाय/संप्रदाय:

दिगंबर	**श्वेतांबर**
इसका अर्थ है आकाशआच्छादित . उन्होंने मुक्ति के लिए सफेदपोश नग्नता पर जोर दिया।	इसका अर्थ है सफ़ेद वस्त्रधारी. वे नग्नतावाद के ख़िलाफ़ थे.
भद्रबाहु के अधीन दक्षिण में स्थानांतरित हो गए।	स्थूलभद्र के अधीन मगध में रुके थे ।
उनका मानना है कि महिलाओं में मुक्ति पाने की शक्ति नहीं है और मुक्ति पाने के लिए उन्हें अगले जन्म में पुरुष के रूप में जन्म लेना होगा।	यह संप्रदाय महिलाओं की क्षमता में विश्वास करता था।
दिगम्बर ने प्रथम परिषद की उपलब्धि को मानने से इंकार कर दिया।	श्वेतांबर परिषद की वैधता में विश्वास करते थे।

दिगंबर ने महावीर की शादी और अपने माता-पिता के साथ 30 साल के जीवन को त्याग दिया।	उन्होंने महावीर को 30 वर्ष तक सामान्य जीवन जीना स्वीकार किया।
उनका मानना था कि आत्मज्ञान प्राप्त करने में एक सर्वज्ञ व्यक्ति को भूख, प्यास या नींद का सामना नहीं करना पड़ता है।	वे भोजन की बुनियादी मानवीय आवश्यकता में विश्वास करते थे।

जैन धर्म का दर्शन:

- अनेकांतवदा - पदार्थ में उपस्थिति और गुणों के अनंत तरीके हैं और इसे केवल केवलिन ही समझ सकते हैं जो उन्हें सभी पहलुओं में समझ सकते हैं।
- स्यादवाद - सभी निर्णय सशर्त हैं और वे केवल कुछ शर्तों और परिस्थितियों में ही अच्छे हैं। वास्तविकता जटिल है.
- नयावाद - यह आंशिक दृष्टिकोण या दृष्टिकोण की धारणा है। यह वास्तविकता को कई बिंदुओं से समझाने की प्रणाली को दर्शाता है। जैन धर्म के संप्रदाय/संप्रदाय:

जैन साहित्य:

- आगम साहित्य - भगवान महावीर का प्रत्यक्ष उपदेश उनके अनुयायियों द्वारा संकलित। गांधार द्वारा संकलित अंग-आगम कहलाते हैं और श्रुतकेवलिन द्वारा संकलित अंग-बहाय- आगम कहलाते हैं ।
- गैर-आगम साहित्य- इनमें आगम साहित्य की टिप्पणियाँ और व्याख्याएँ शामिल हैं।

जैनियों की परिषद:

प्रथम जैन परिषद:

- यह तीसरी शताब्दी में, महावीर की मृत्यु के 160 साल बाद, शुलभद्र की अध्यक्षता में पाटलिपुत्र में आयोजित किया गया था।
- श्वेतांबर और दिगंबर में फैल गया।
- जैनियों ने महावीर की शिक्षाओं को 12 अंगो में वर्गीकृत किया।

द्वितीय जैन परिषद:

- यह 512 ई. में वल्लभी और मथुरा में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता देवर्धि ने की थी क्षमाश्रमण।
- उपंगों के अंतिम संकलन के लिए जाना जाता था।

जैन धर्म का प्रसार:

- महावीर ने स्त्री और पुरुष दोनों को स्वीकार किया।
- जैन धर्म ने खुद को हिंदू धर्म से अलग नहीं माना, इसलिए इसने आसानी से इस बात का प्रसार किया कि ब्राह्मणवाद कमजोर क्यों था।

- मौर्य राजा चंद्रगुप्त मौर्य अपने अंतिम वर्षों में जैन बन गए और जैन धर्म का प्रचार किया।

निष्कर्ष:

जैन धर्म ने खुद को वर्ण व्यवस्था की बुराइयों को सुधारने के प्रयास के रूप में पेश किया। इससे सहिष्णुता की भावना आई। यह बौद्ध धर्म के समानांतर था लेकिन उनमें स्थानांतरण के सिद्धांत और वर्ण व्यवस्था पर राय जैसे बुनियादी मतभेद थे। जैन धर्म ने निम्न वर्ग को सम्मान प्रदान किया और व्यापार और वाणिज्य के माध्यम से उनकी वित्तीय वृद्धि में मदद की।

10. भारत में ब्रिटिश शासन

भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी

1600 में, भारत के साथ व्यापार करने के लिए ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की गई थी। उन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा एक चार्टर प्रदान किया गया था। इस चार्टर ने उन्हें भारत में एकमात्र ब्रिटिश व्यापारिक कंपनी होने का अधिकार दिया। अगले 150 वर्षों तक, कंपनी ने यथासंभव व्यापार के माध्यम से अपना मुनाफा बढ़ाने पर ही ध्यान केंद्रित किया। हालाँकि, उन्हें अभी भी अन्य यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी थी जो अपनी उपस्थिति को यथासंभव बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे क्योंकि भारत एक मूल्यवान बाजार था।

ईस्ट इंडिया कंपनी

अधिक से अधिक शक्ति हासिल करने के लिए कंपनियाँ शासक राजाओं से विशेष विशेषाधिकार प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी। जैसे-जैसे मुग़ल साम्राज्य ढहना शुरू हुआ, इसका मतलब था कि उन्हें कई छोटे राजाओं के साथ संबंध बनाने होंगे और इसका मतलब यह भी था कि पिछली कई रियायतों पर फिर से बातचीत करनी होगी।

बंगाल प्रांत में संघर्ष तब भड़क उठा जब बंगाल के नवाब ने पिछले मुगल सम्राट द्वारा की गई प्रतिबद्धताओं का सम्मान करने से इनकार कर दिया क्योंकि उन्हें लगा कि यह उनके नागरिकों के हितों के खिलाफ है। इसके कारण **1757 में प्लासी की लड़ाई** और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि **1764 में बक्सर की लड़ाई** । जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने बक्सर की लड़ाई जीत ली तो उसे बंगाल, बिहार और उड़ीसा से राजस्व इकट्ठा करने का अधिकार मिल गया। जैसा कि ज्ञात था, 'दीवानी' प्रदान किया जाना एक बड़ा कदम था और इससे कंपनी के भीतर और ब्रिटिश सरकार के साथ उसके संबंधों की प्रकृति में कई बदलाव आए।

1765 से कंपनी को भारत के सबसे समृद्ध हिस्सों में राजस्व जुटाने का अधिकार था, फिर भी उसकी कोई ज़िम्मेदारियाँ नहीं थीं। इससे ऐसी स्थिति पैदा हो गई जहां कंपनी के कर्मचारी कंपनी की कीमत पर खुद को समृद्ध कर रहे थे। कर्मचारियों में व्यापक भ्रष्टाचार था। उन्होंने कंपनी को समृद्ध करने के बजाय अपने लिए बड़ा

हिस्सा रखते हुए राजस्व को अधिकतम करने के लिए किसानों पर अत्याचार करना शुरू कर दिया। इसने ब्रिटिश सरकार को कार्रवाई करने के लिए मजबूर किया।

ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कंपनी को जो मूल चार्टर दिया था, उसे हर बीस साल में बढ़ाया जाता था। बाद के वर्षों में, ब्रिटिश सरकार ने तेजी से विकसित हो रही स्थिति के आधार पर हर बार कंपनी के चार्टर को आगे बढ़ाते हुए बदलाव किए।

ईस्ट इंडिया कंपनी इतिहास समयरेखा

समय	**विवरण**
1608	शाही मंजूरी से विलियम हॉकिन्स द्वारा कारखाने की स्थापना की गई और प्रायोजन पर चर्चा करने के लिए जहांगीर दरबार पहुंचे।
1611	सूरत के मुगल शासक ने कैप्टन मिडलटन को अनुमति दे दी
1612	स्वाली की लड़ाई में पुर्तगालियों पर विजय प्राप्त की और सूरत सागर पर कब्ज़ा कर लिया।
1613	जहाँगीर की मंजूरी के बाद एल्डवर्थ ने सूरत में एक प्लांट शुरू किया।
1632	गोलकुंडा के सुल्तान से गोल्डन फ़रमान प्राप्त करने के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने व्यापार के लिए मंच तैयार किया।
1639	ईस्ट इंडिया कंपनी ने स्थानीय राजा से पट्टे पर लेकर मद्रास में फोर्ट सेंट जॉर्ज का निर्माण किया।
1662	पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन के साथ विवाह के बाद, चार्ल्स द्वितीय को उपहार के रूप में बॉम्बे प्राप्त हुआ।
1668	ईस्ट इंडिया कंपनी को बॉम्बे देने के बाद चार्ल्स द्वितीय को सालाना 10 पाउंड मिलने लगे और कंपनी का मुख्यालय सूरत से बॉम्बे चला गया।
1690	ईस्ट इंडिया कंपनी ने गोबिंदपुर , कोलकाता और सुतानुति से गांवों की खरीद के लिए कारखानों का निर्माण किया और फोर्ट विलियम्स को एक रक्षात्मक किलेबंदी के रूप में बनाया गया था।

1717	फरमान जारी करके मुगल बादशाह फर्रुखशियार से रहने और व्यापार करने की अनुमति प्राप्त हुई।

1773 का रेगुलेटिंग एक्ट

ईस्ट इंडिया कंपनी को कई नए विशेषाधिकार मिलने के बाद 1773 का रेगुलेटिंग एक्ट पारित किया गया। इसने कंपनी को भारत में अर्जित क्षेत्र को अपने पास रखने की अनुमति दी, लेकिन कंपनी में बढ़ते भ्रष्टाचार को देखते हुए, इसने कंपनी के कामकाज के तरीके को विनियमित करना शुरू करने का प्रयास किया।

पहली बार, **ब्रिटिश कैबिनेट को भारत में मामलों पर नियंत्रण रखने का अधिकार दिया गया** । इसी उद्देश्य से गवर्नर-जनरल के पद की शुरुआत की गई। उन्हें चार सदस्यीय समिति के साथ बंगाल के प्रशासन की देखरेख करनी थी, इससे पहले, इस क्षेत्र के लिए एक ही राज्यपाल था।

गवर्नर **को भी नवनियुक्त गवर्नर-जनरल को रिपोर्ट करना था** । भारत के पहले गवर्नर-जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स थे।

1773 के रेगुलेटिंग एक्ट के तहत एक सर्वोच्च न्यायालय की भी स्थापना की गई जिसमें एक मुख्य न्यायाधीश और तीन अन्य न्यायाधीश शामिल थे। हालाँकि, अदालत के पास सरकार या कंपनी के कर्मचारियों पर उनकी व्यावसायिक क्षमता का कोई अधिकार क्षेत्र नहीं था। उनके कार्य के निर्वहन के दौरान की गई किसी भी गतिविधि के लिए उनका मूल्यांकन नहीं किया जा सका।

1784 का पिट्स इंडिया एक्ट

- 1784 के पिट्स इंडिया एक्ट ने नियंत्रण की ' **दोहरी प्रणाली** ' की शुरुआत की। इसका मतलब यह था कि कंपनी को वाणिज्यिक गतिविधियों और प्रशासन पर अपना नियंत्रण रखने की अनुमति दी गई थी, लेकिन अब यह ब्रिटिश राज्य का एक विभाग बन गया और इसके द्वारा नियंत्रित क्षेत्र को अब से 'ब्रिटिश संपत्ति' के रूप में जाना जाने लगा ।
- 1784 के पिट्स इंडिया एक्ट के तहत गवर्नर-जनरल की परिषद में अब एक कमांडर-इन-चीफ सहित केवल 3 सदस्य थे।
- कंपनी के नागरिक, प्रशासनिक और सैन्य मामलों की देखरेख के लिए एक नियंत्रण बोर्ड की स्थापना की गई थी। इस बोर्ड में एक राज्य सचिव, राजकोष के चांसलर और प्रिवी काउंसिल के चार सदस्य शामिल थे।

1793 का चार्टर एक्ट

- गवर्नर-जनरल की शक्तियां, जिन्हें 1786 में लॉर्ड कॉर्नवालिस के तहत विस्तारित किया गया था, को अधिनियम का हिस्सा बनाया गया था।

- अब सभी वरिष्ठ अधिकारियों की नियुक्ति शाही अनुमति से की जानी थी। ऐसे किसी भी अधिकारी को बिना पूर्व अनुमति के भारत छोड़ने की अनुमति नहीं थी, ऐसा करना इस्तीफा माना जाएगा।
- काउंसिल के बोर्ड के सदस्यों और उनके कर्मचारियों के वेतन का भुगतान भारत में जुटाई जा रही कंपनी के राजस्व से किया जाना था।
- यह भी निर्णय लिया गया कि **कंपनी ब्रिटिश सरकार को हर वर्ष पाँच लाख पाउंड की धनराशि देगी** ।
- इसने **भारत में अगले 20 वर्षों के लिए कंपनी के व्यापार एकाधिकार की भी अनुमति दी** ।

1813 का चार्टर एक्ट

- इस अधिनियम के कारण ईस्ट इंडिया कंपनी में बड़े बदलाव हुए; कोई कह सकता है कि इसने इसकी मूल प्रकृति को प्रभावित किया।
- इस अधिनियम के तहत कंपनी का शासन फिर से अगले 20 वर्षों के लिए बढ़ा दिया गया, लेकिन **कंपनी ने भारत में अपना वाणिज्यिक एकाधिकार खो दिया।**
- हालाँकि, चाय, अफ़ीम के व्यापार और चीन के साथ व्यापार पर इसका एकाधिकार जारी रहा।
- इसने **मिशनरियों को भारत आने** और उन्हें धार्मिक धर्मांतरण में संलग्न होने की अनुमति दी।
- राज्य ने **रुपये की राशि अलग रखी।** भारतीय प्रजा की शिक्षा में सहायता हेतु **1 लाख रूपये की धनराशि ।**

1833 का चार्टर एक्ट

- इस अधिनियम ने राजस्व संग्रहण और क्षेत्रों पर नियंत्रण के संबंध में कंपनी के पट्टे को बढ़ा दिया लेकिन चाय के व्यापार और चीन के साथ व्यापार पर कंपनी का एकाधिकार समाप्त हो गया।
- इसने नियंत्रण बोर्ड को कंपनी पर पूर्ण अधिकार दे दिया और गवर्नर-जनरल की शक्तियों को और बढ़ा दिया।
- बंगाल के गवर्नर-जनरल का पद " **भारत के गवर्नर-जनरल** " में परिवर्तित कर दिया गया। उन्हें कंपनी के सभी नागरिक और सैन्य मामलों के अधीक्षक, नियंत्रण और निर्देशन का अधिकार दिया गया था।
- सारा राजस्व उसके नाम पर उठाया जाता था और व्यय पर उसका पूरा नियंत्रण होता था। सारा कारोबार उन्हीं के नाम पर होता था.
- भारतीय कानूनों को समेकित और संहिताबद्ध करने के लिए एक कानून आयोग की स्थापना की गई थी।
- गवर्नर-जनरल की परिषद में एक चौथा साधारण सदस्य जोड़ा गया। उन्हें कानून बनाने में कानूनी विशेषज्ञ बनना था।

- इस अधिनियम ने अंग्रेजों को भारत में स्वतंत्र रूप से बसने की अनुमति दे दी। इस प्रकार, इसने भारत में ब्रिटिश उपनिवेशीकरण को प्रभावी ढंग से वैध बना दिया।

ईस्ट इंडिया कंपनी की वाणिज्यिक गतिविधियों का विस्तार

दक्षिण पूर्व एशिया और भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व पर डचों द्वारा गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया था और वर्ष 1623 में अंबोयना आपदा के कारण डचों को इंडोनेशिया और पूर्वी द्वीपसमूह से निष्कासित कर दिया गया था। वर्ष 1625-1626 में एक नई फैक्ट्री शाखा का उद्घाटन हुआ। 1632 में मसूलीपट्टनम के आर्मागांव में व्यापार करने की अनुमति गोलकुंडा के सुल्तान ने दी और 1633 में हरिहरपुर के करीब एक कारखाने का निर्माण हुआ ।

ईस्ट इंडिया कंपनी और मद्रास प्रेसीडेंसी

ईस्ट इंडिया कंपनी ने वर्ष 1939 में चंद्रगिरि के राजा से मद्रासपट्टनम संपत्ति खरीदी और वहां फोर्ट सेंट जॉर्ज का निर्माण किया, यह भारत में उनके निवास की पहली स्थापना थी और 1653 में उन्हें राष्ट्रपति पद पर पदोन्नत किया गया था,

ईस्ट इंडिया कंपनी और बॉम्बे प्रेसीडेंसी

1665 में 10 पाउंड वार्षिक भुगतान के बदले में बॉम्बे को ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंपा गया था। शिवाजी मराठों ने सूरत की एक फैक्ट्री पर हमला करने की कोशिश की, लेकिन जॉर्ज ऑक्सेंडेन इसका सफलतापूर्वक बचाव किया। गेराल्ड औंगियर ने मुंबई में पहला प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया और बाद में इसे बॉम्बे के प्रेसीडेंसी कार्यालय के रूप में इस्तेमाल किया गया।

ईस्ट इंडिया कंपनी और बंगाल प्रेसीडेंसी

हुगली और कासिमबाजार को बंद कर दिया गया, जिससे कॉर्पोरेट अधिकारियों को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, और अगले 4 वर्षों के लिए बंगाल में व्यापार के लिए मुगलों से दूसरा शाही फरमान प्राप्त हुआ। जॉब चार्नोक ने प्रबलित कारखाने के स्थान के लिए हुगली के स्थान पर सुतनाती को चुना था और बाद में सुतनाती कलकत्ता महानगर के रूप में विकसित हुआ।

निष्कर्ष

इस प्रकार, हम देख सकते हैं कि सत्तर वर्षों से भी कम समय में, ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश राज्य के बीच संबंधों में भारी बदलाव आया; कंपनी की शुरुआत पूरी तरह से एक वाणिज्यिक उद्यम के रूप में हुई थी, लेकिन जैसे-जैसे इसका आकार और महत्व बढ़ता गया, ब्रिटिश राज्य इसके विनियमन में और अधिक शामिल हो गया और अंततः इस पर कब्ज़ा कर लिया और इसके क्षेत्रों और शक्तियों को अपने में समाहित कर लिया। कंपनी ब्रिटिश राज्य के अधीन एक विभाग बनकर रह गई; एक तरह से, कोई कह सकता है कि यह अपनी ही सफलता का शिकार बन गया। इसने इतना अच्छा प्रदर्शन किया कि इसने धीरे-धीरे अपनी पहचान खो दी।

भारत में अंग्रेजों की आर्थिक नीतियाँ

प्लासी की लड़ाई (23 जून 1757) ब्रिटिश भारत के आर्थिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी। इस युद्ध के बाद अंग्रेजों ने देश की आर्थिक नीतियों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों और उसके अधिकारियों के भ्रष्ट आचरण के कारण देश के व्यापार और नीतियों को गंभीर झटका लगा। 18वीं शताब्दी के अंत तक, देश के बड़े हिस्से में ब्रिटिश शासन स्थापित हो चुका था और वे चाहते थे कि भारत ब्रिटिश वस्तुओं के लिए एक आकर्षक बाज़ार बने। ब्रिटेन ने भारत में मध्ययुगीन आर्थिक संरचना को नष्ट कर आधुनिक अर्थव्यवस्था की नींव रखी। भारत में अपने शासन के दौरान, वे कई आर्थिक नीतियां लेकर आए , जिनका भारतीय समाज पर काफी प्रभाव पड़ा।

भारत के आर्थिक शोषण को तीन चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है

- **व्यापारिक चरण: 1757 से 1813 तक**
- **व्यापारिक पूंजीवाद चरण: 1813 से 1858 तक**
- **वित्त पूंजीवाद चरण: 1858 से 1947 तक**

व्यापारिक चरण के दौरान , व्यापार पर पूरी तरह से ईस्ट इंडिया कंपनी का एकाधिकार था। उन्होंने यूरोप और इंग्लैंड को निर्यात के लिए भारत के तैयार माल की कम कीमतों में हेरफेर करके भारत की संपत्ति को लूटना शुरू कर दिया। बंगाल प्रांतों से प्राप्त अधिशेष राजस्व का उपयोग निर्यात के लिए तैयार माल खरीदने के लिए किया जाता था।

व्यापारिक पूंजीवाद चरण में , भारत एक मुक्त बाजार में परिवर्तित हो गया था। ब्रिटिश व्यापारिक वर्ग ने कच्चा माल छीन लिया। इससे विनिर्मित वस्तुओं को भारत में विपणन के लिए वापस लाया गया और भारत से निर्यात कच्चे माल और खाद्यान्न तक ही सीमित हो गया।

वित्त पूंजीवाद चरण में , भारत में ब्रिटिश वस्तुओं के निवेश को बढ़ाने के लिए रेलवे, बैंकिंग, डाक और तार सेवाओं आदि का निर्माण किया गया और भारतीय पूंजी पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए प्रबंधन एजेंसी की प्रणाली को अपनाया गया।

अंग्रेजों की विभिन्न आर्थिक नीतियाँ

इन आर्थिक नीतियों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर काफी प्रभाव पड़ा। कई भारतीय विनिर्माण केंद्र नष्ट हो गए, और पुरानी ग्राम व्यवस्था नष्ट हो गई। कच्चे माल की आपूर्ति के लिए भारत ब्रिटेन का एक कृषि उपनिवेश बनकर रह गया। भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल चरित्र बदल दिया गया और भारत पूर्ण रूप से ब्रिटेन का उपनिवेश बन गया।

1. भू-राजस्व नीतियाँ

इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति ने अंग्रेजों को व्यापार, परियोजनाओं और देश के प्रशासन को बनाए रखने के लिए राजस्व इकट्ठा करने के लिए मजबूर किया।

- **1793 में** , अंग्रेजों ने बिहार और बंगाल प्रांतों में **स्थायी बंदोबस्त की शुरुआत की; 1822 में,** पंजाब, गंगा घाटी और उत्तर-पश्चिमी भारत में महलवारी प्रणाली शुरू की गई **थी ;** और 1820 में , दक्षिण भारत में **रैयतवाड़ी प्रणाली शुरू की गई।**
- स्थायी बंदोबस्त प्रणाली ने ईस्ट इंडिया कंपनी को एक निश्चित धनराशि दी और जमींदारों को भूमि का वंशानुगत मालिक बना दिया। इस राजस्व ने किसानों की कीमत पर ईआईसी के लिए आय उत्पन्न की। इन भू-राजस्व नीतियों ने किसानों की कीमत पर सरकार के लिए राजस्व उत्पन्न किया।
- **बहुत अधिक करों** के कारण , किसानों ने खाद्य फसलों के बजाय नकदी फसलें उगाईं और इससे खाद्य असुरक्षा और भुखमरी पैदा हुई। ब्रिटिश काल से पहले कृषि उपज पर कर मध्यम थे और अंग्रेजों ने इसे बहुत अधिक कर दिया।
- राजस्व के नकद भुगतान पर जोर देने के कारण किसानों में ऋणग्रस्तता बढ़ गई और साहूकार कालांतर में भूस्वामी बन गए। **बंधुआ मजदूरी का उदय इसलिए हुआ क्योंकि ऐसे किसानों/ मजदूरों को ऋण दिया जाता था जो इसे वापस नहीं कर पाते थे।**

2. रेलवे

उद्योगों के विकास में रेलवे सशक्त सहायक थी। 1853 में लॉर्ड डलहौजी ने पूरे देश के लिए एक रेलवे नेटवर्क का प्रस्ताव रखा।

- अंग्रेज भारतीय उद्योग को विकसित करने में रुचि नहीं रखते थे और **उन्होंने विभिन्न उद्देश्यों के लिए रेलवे नीति अपनाई। 1844 में लॉर्ड हार्डिंग ने युद्ध के कुशल अभियोजन** और साम्राज्य की सुरक्षा के लिए रेलवे विकास का समर्थन किया।
- रेलवे के कार्य मुख्यतः ब्रिटेन के हित में डिज़ाइन किये गये थे। **ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के आयात और भारतीय कच्चे माल के निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य** से दरों में हेरफेर किया गया था।
- रेलवे ने **राष्ट्रीय चेतना के विकास में सशक्त रूप से सहायता की** और बाहरी और आंतरिक व्यापार के विकास को बढ़ावा दिया।

3. कृषि का व्यावसायीकरण

यह 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उभरा और नए भूमि संबंधों और राजस्व प्रणाली की शुरुआत के परिणामों में से एक था। इस रूप में, गाँव के उपयोग के लिए उत्पादन का स्थान बाज़ार के लिए उत्पादन ने ले लिया।

- कृषि व्यावसायिक विचारों से प्रभावित होने लगी। किसान मुख्य रूप से भू-राजस्व का भुगतान करने और साहूकारों के पैसे को पूरा करने के लिए बाजार में अधिकतम नकदी प्राप्त करने के लिए ही उत्पादन करते थे।
- किसान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर बिक्री के लिए विशेष फसलें उगाते थे। गाँवों के समूहों की भूमि का उपयोग विशेष उपयुक्तता के आधार पर केवल एक ही फसल उगाने के लिए किया जाने लगा
- कृषि के व्यावसायीकरण का समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। किसान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार की सभी बुराइयों के अधीन हो गए और उन्हें अपने उत्पाद बेचने के लिए बिचौलियों पर निर्भर रहने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- जिन किसानों के पास आर्थिक भंडार की कमी थी, उन्हें फसल के समय अपना उत्पाद बिचौलिए को बेचना पड़ता था। भारतीय कृषि विश्व की कीमतों में उतार-चढ़ाव से प्रभावित होने लगी और किसानों को कृषि के व्यावसायीकरण से बेहतर प्रदर्शन नहीं मिला।

4. विऔद्योगीकरण

- 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के दौरान, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के कारण भारत को औद्योगिक गिरावट का सामना करना पड़ा। भारत औद्योगिक क्रांति के लाभों से बुरी तरह वंचित था।
- ब्रिटिश उद्योगों के लिए सस्ते कच्चे माल को सुरक्षित करने और ब्रिटेन के औद्योगिक रूप से उत्पादित माल के लिए भारत में तैयार बाजार का उपयोग करने के लिए ब्रिटिशों द्वारा इसे मुख्य रूप से कृषि प्रधान क्षेत्र माना गया था। पूरी प्रक्रिया को **विऔद्योगीकरण के रूप में वर्णित किया गया है** ।
- हस्तशिल्प को संरक्षण देने वाली और कारीगरों को नियमित रूप से रोजगार देने वाली स्वदेशी अदालतें लुप्त हो गईं।
- विऔद्योगीकरण का भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। हस्तशिल्प के खंडहरों के कारण उद्योगों का पतन हुआ, जिससे देश बेरोजगारी और तीव्र गरीबी की ओर बढ़ गया।

5. धन का नाश:

- ब्रिटिशों ने भारत के धन और संसाधनों का कुछ हिस्सा ब्रिटेन को निर्यात किया जिसके लिए भारत को कोई पर्याप्त आर्थिक या भौतिक रिटर्न नहीं मिला। यह ' **आर्थिक पलायन** ' ब्रिटिश शासन की विशेषता थी। अंग्रेज़ करों और आय का एक बड़ा हिस्सा भारत में नहीं बल्कि ब्रिटेन में खर्च करते थे।

- **धन के निकास का प्रत्यक्ष आयोजन 1765 में बंगाल की दीवानी के अधिग्रहण के साथ शुरू हुआ।** अंग्रेजी अधिकारियों के वेतन और अन्य आय और अंग्रेजी व्यापारियों के व्यापारिक भाग्य ने इंग्लैंड में अपना रास्ता बना लिया।
- धन के निकास ने भारत में पूंजी संचय को रोका और धीमा कर दिया, जिससे भारत का औद्योगीकरण धीमा हो गया। भारतीय उत्पाद और खजाना बिना पर्याप्त वापसी के इंग्लैंड चले गए।
- **दादाभाई नौरोजी ने इसे नैतिक पतन कहा क्योंकि इसने भारतीयों को विश्वास और जिम्मेदारी के पद से बाहर कर दिया।** इस सिद्धांत ने ब्रिटिश शासन के शोषणकारी चरित्र पर प्रकाश डाला।

निष्कर्ष

जाने के बाद हमारे देश की आर्थिक स्थितियाँ बहुत गंभीर हो गयीं। लगभग 200 वर्षों के औपनिवेशिक शासन ने भारतीयों को हर मामले में गरीब बना दिया। भारतीय अर्थव्यवस्था के दो स्तंभ-उद्योग और कृषि बहुत बुरी स्थिति में थे। औद्योगिक विकास का बुनियादी ढाँचा बहुत ख़राब हो गया था। इस पृष्ठभूमि में, भारत ने अपने देश की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए असंख्य कदम उठाए।

11. 1857 के विद्रोह से जुड़े महत्वपूर्ण नेता

1857 का सिपाही विद्रोह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रभुत्व के खिलाफ एक बड़े पैमाने पर विद्रोह था। इस विद्रोह को कंपनी के ख़िलाफ़ भारतीयों का पहला संगठित प्रतिरोध माना जाता है। वीडी सावरकर जैसे उस समय के प्रमुख लेखक भी इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मानते हैं।

इस सिपाही विद्रोह का सीधा कारण चर्बी वाले कारतूसों की अफवाह थी। नई राइफलों के कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी लगी होने की बात सिपाहियों के बीच जंगल की आग की तरह फैल गई। सिपाहियों को कारतूसों का उपयोग करने के लिए उन पर लगे कागज को काटने की जरूरत पड़ती थी। इस खबर ने मुसलमानों और हिंदुओं दोनों को अपमानित किया क्योंकि हिंदू गायों की पूजा करते थे और मुसलमान सूअरों को गंदा मानते थे।

यह सुनने के बाद, दोनों धार्मिक समूहों के सिपाहियों ने राइफलों का उपयोग करने से इनकार कर दिया। ज्यादा समय नहीं बीता जब विद्रोह पटना के पड़ोस से लेकर राजस्थान की सीमाओं तक फैल गया। विद्रोह के प्रमुख केंद्र लखनऊ, कानपुर, झाँसी, बरेली, बिहार में आरा और ग्वालियर थे। इन्हीं केन्द्रों से विभिन्न आकृतियाँ सामने आईं। इनमें बेगम हज़रत महल, नाना साहेब, रानी लक्ष्मीबाई , तांतिया टोपे और कई अन्य लोग शामिल थे जिन्होंने विद्रोह का नेतृत्व किया।

1857 के विद्रोह के दौरान, जिसे 1857 का भारतीय विद्रोह या प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है, भारत के विभिन्न क्षेत्रों से कई प्रमुख नेता उभरे। यहां इन नेताओं और उनके योगदान का विस्तृत विवरण दिया गया है:

1. मंगल पांडे (बैरकपुर)

मंगल पांडे 34वीं बंगाल नेटिव इन्फेंट्री के एक युवा सैनिक थे। वह विद्रोह का प्रतीक बन गए जब उन्होंने 29 मार्च, 1857 को अपनी रेजिमेंट के सहायक लेफ्टिनेंट बॉघ पर हमला किया। जानवरों की चर्बी वाले कारतूसों के इस्तेमाल के खिलाफ उनके अवज्ञा के कृत्य ने सिपाहियों के बीच व्यापक विद्रोह को जन्म दिया।

2. जनरल बख्त खान (दिल्ली)

दिल्ली में विद्रोह का नेतृत्व बख्त खान ने किया था। वह 3 जुलाई, 1857 को दिल्ली पहुंचे और कमांडर-इन-चीफ की भूमिका निभाई। बख्त खान ने नाममात्र के नेता बहादुर शाह जफर के नाम पर विद्रोह को नियंत्रित करने के लिए सैनिकों और नागरिकों की एक अदालत का गठन किया।

3. नाना साहेब (कानपुर)

निर्वासित पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब ने कानपुर के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 6 जून, 1857 को उन्होंने 53वीं नेटिव इन्फैंट्री के ब्रिटिश सैनिकों पर हमले का नेतृत्व किया। बाद में उन्होंने जनरल सर ह्यू व्हीलर के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना को घेर लिया और उस पर कब्ज़ा कर लिया। नाना साहब ने स्वयं को कानपुर का शासक पेशवा घोषित किया।

4. बेगम हज़रत महल (लखनऊ)

अवध के नवाब वाजिद अली शाह की पत्नी बेगम हजरत महल ने लखनऊ में विद्रोह का नेतृत्व किया। अंग्रेजों द्वारा उनके पति को कैद करने और अवध पर कब्ज़ा करने के बाद, उन्होंने ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए लोगों को एकजुट किया। उन्होंने अपने बेटे, बिरजिस खादिर को अवध का नवाब घोषित किया और उनकी ओर से शासन किया, ब्रिटिश सैनिकों को चुनौती दी और लोगों में देशभक्ति को प्रोत्साहित किया।

5. रानी लक्ष्मीबाई (झांसी)

रानी लक्ष्मीबाई एक साहसी रानी थीं जिन्होंने ब्रिटिश शासन का जमकर विरोध किया। अपने पति की मृत्यु और झाँसी पर कब्ज़ा होने के बाद, उन्होंने हथियार उठाये और बुन्देलखण्ड में विद्रोहियों का नेतृत्व किया। भारी बाधाओं का सामना करने के बावजूद, उन्होंने ह्यूग रोज़ के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना के खिलाफ बहादुरी से झाँसी की रक्षा की। बाद में उन्होंने ग्वालियर में तात्या टोपे के साथ लड़ाई लड़ी।

6. कुँवर सिंह (बिहार)

बिहार के आरा क्षेत्र के एक बुजुर्ग जमींदार (ज़मींदार) कुँवर सिंह ने अंग्रेजों के खिलाफ प्रतिरोध संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 80 साल की उम्र में, उन्होंने बिहार में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के खिलाफ सैनिकों के एक अलग दल का नेतृत्व किया, और ब्रिटिश शासन को चुनौती देने के लिए नागरिक और सैन्य विद्रोहों का विलय किया।

7. तात्या टोपे (कानपुर/ग्वालियर)

तात्या टोपे एक प्रभावशाली विद्रोही नेता थे जिन्होंने कानपुर और बाद में ग्वालियर में विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने गुरिल्ला युद्ध रणनीति अपनाई और नाना साहेब का अधिकार स्थापित करते हुए, कानपुर पर कब्ज़ा कर लिया। ब्रिटिश सेना के पीछे हटने के बाद, वह ग्वालियर चले गए लेकिन राजा मान सिंह ने उन्हें धोखा दिया। अंततः टोपे को अंग्रेजों ने पकड़ लिया और मार डाला।

8. मौलवी लियाकत अली (इलाहाबाद)

मौलवी लियाकत अली, जो शुरू में ब्रिटिश सेना में कार्यरत थे, उनके खिलाफ हो गए और भारतीय सैनिकों के बीच ब्रिटिश विरोधी भावनाएँ फैलाना शुरू कर दिया। सेना से बर्खास्त होने के बाद, उन्होंने अपने गाँव महगाँव में अपनी गतिविधियाँ जारी रखीं। अली ने इलाहाबाद पर हमले का नेतृत्व किया, ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना को हराया और खुद को अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर का प्रतिनिधि घोषित किया। हालाँकि, उन्हें युद्ध का मैदान छोड़ना पड़ा

12.राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी की भूमिका

राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में महात्मा गांधी का आगमन एक अमिट मील का पत्थर था। उन्होंने सत्य और अहिंसा की सुप्त विचारधारा को पुनर्जीवित करके राष्ट्रीय आंदोलन को सक्रिय किया और अंग्रेजों को जल्द से जल्द देश छोड़ने के लिए मजबूर किया। 19वीं सदी के सुधारवादी महात्मा गांधी ने अपने विचारों, कार्यप्रणाली और आंदोलन से राष्ट्रीय आंदोलन के स्वरूप को बदल दिया। महात्मा गांधी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे। उनके आगमन से पहले, राष्ट्रीय आंदोलन की प्रकृति अलग थी, लेकिन 1915 के बाद इस आंदोलन ने एक जन आंदोलन का रूप ले लिया।

गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। 18 साल की उम्र में, वह इंग्लैंड गए और बार के लिए योग्यता प्राप्त की। उन्होंने सत्य और अहिंसा का पहला पाठ राजचंद्र से सीखा रावजीभाई . वह अपने मित्र के व्यावसायिक कार्य के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका गये। दक्षिण अफ्रीका में, उन्होंने औपनिवेशिक सत्ता के तहत नस्लवाद और रंग के लोगों के शोषण के खिलाफ सत्याग्रह के हथियार को अभ्यास में लाया। उनमें संघर्ष का नेतृत्व करने का आत्मविश्वास भी विकसित हुआ। 1915 में वह बड़ा नाम

जीतकर भारत लौट आये। **गांधीजी ने 1917 में बिहार के चंपारण में सत्याग्रह के साथ भारत के राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश किया।**

अहिंसा, सत्याग्रह की विचारधारा का जन्म:

गांधीजी की अहिंसा और सत्याग्रह की विचारधारा ने राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा को एक अलग दिशा में बदल दिया। गांधीजी के आगमन से पहले ये सिद्धांत लोगों में गहराई तक जड़ें नहीं जमा पाए थे और आज़ादी का संघर्ष दिशाहीन था। गांधीजी के आगमन के बाद ही स्वतंत्रता संग्राम को एक सार्थक दिशा मिली। समय के साथ, इन सिद्धांतों ने ही भारत को ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद की। गांधी जी अपने सिद्धांतों के बहुत पक्के थे और असहयोग आन्दोलन इसका उदाहरण था। सत्याग्रह के सिद्धांत ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया।

चंपारण सत्याग्रह भारत में अंग्रेजों के उत्पीड़न के खिलाफ एक सफल संघर्ष के रूप में उभरा। सरकार को किसानों की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए एक समिति गठित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। 1918 में, उन्होंने अहमदाबाद के श्रमिकों और मिल मालिकों के बीच एक विवाद में हस्तक्षेप किया और समझौते के लिए मजबूर करने के लिए आमरण अनशन किया। मिल मालिक श्रमिकों का वेतन 35 प्रतिशत बढ़ाने पर सहमत हुए। उन्होंने फसल खराब होने के बाद भू-राजस्व की वसूली के खिलाफ खेड़ा के किसानों के आंदोलन का भी समर्थन किया। **इन तीन घटनाओं ने गांधीजी को सुर्खियों में ला दिया। गांधीजी के हथियार- सत्याग्रह, अहिंसा और सत्य, उद्देश्य की प्राप्ति में कारगर साबित हुए।**

गांधी और उनका जन आंदोलन:

जनवरी 1919 में ब्रिटिश सरकार ने रोलेट एक्ट पारित किया। इस अधिनियम ने सरकार को किसी भी व्यक्ति को अदालत में मुकदमे और दोषसिद्धि के बिना जेल में डालने का अधिकार दिया। यह भारत सरकार की क्रांतिकारियों को दबाने की नीति के क्रम में था। महात्मा गांधी ने एक सत्याग्रह अभियान की घोषणा की और एक सत्याग्रह सभा का गठन किया जिसके सदस्यों ने अहिंसक तरीके से इस अधिनियम का उल्लंघन करने की प्रतिज्ञा की। इस बीच कुछ स्थानों पर हिंसा होने पर गांधीजी ने आंदोलन स्थगित कर दिया। इससे कोई सफलता नहीं मिली, लेकिन इसने लोगों को राष्ट्र के लिए शांतिपूर्ण बलिदान देना अवश्य सिखाया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (नमक सत्याग्रह) के दौरान गांधी ने पूरे भारत से लोगों को संगठित किया, गांधी जानते थे कि नमक **समाज के हर वर्ग के लिए बहुत महत्वपूर्ण है** और इस पर कर उन पर प्रभाव डालता है। गांधी जी के ऐसे कदम **(नमक सत्याग्रह)** ने आंदोलन को एक अलग दिशा देने में मदद की।

लोगों का जगाया आत्मविश्वास:

गांधीजी के राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश के बाद, भारत ने वर्ष 1917-18 में चंपारण , खेड़ा और अहमदाबाद में तीन जीत देखीं। इससे भारतीयों का खोया हुआ आत्मविश्वास पुनः प्राप्त हुआ और उन्हें महसूस हुआ कि वे आधुनिक हथियारों और गोला-बारूद की सहायता के बिना भी अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ सकते हैं।

राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित:

गांधीवादी आंदोलन ने लोगों में राष्ट्रवादी भावनाओं को प्रेरित किया। असहयोग आंदोलन के समय लोगों ने स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार किया और राष्ट्र के हितों का प्रतिनिधित्व किया। इसने भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए सभी वर्गों के लोगों को एकजुट किया। उन्होंने भारतीयों पर अंग्रेजों के अन्याय के खिलाफ अहिंसक सविनय अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व किया। लोगों की सक्रिय भागीदारी से लोगों में राष्ट्रवादी भावनाएँ जागृत हुईं।

हिंदू मुस्लिम एकता:

गांधीवादी चरण में हिंदू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया गया। वे भलीभांति जानते थे कि हिंदू-मुसलमानों की एकता के बिना भारत को आजादी नहीं मिल सकती। गांधीजी ने खिलाफत आंदोलन को राष्ट्रीय मोर्चे पर हिंदुओं और मुसलमानों को एक साथ लाने के एक सुनहरे अवसर के रूप में देखा। मुसलमानों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल करने के लिए गांधीजी असहयोग आंदोलन के साथ राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हो गये। गांधीजी ने सदैव साम्प्रदायिक सौहार्द पर जोर दिया।

लोगों के विभिन्न समूहों की भागीदारी:

गांधीजी जानते थे कि समाज के हर वर्ग की भागीदारी और समर्थन के बिना भारत को आजादी नहीं मिल सकती। गांधीजी की भागीदारी से पहले यह आंदोलन केवल कांग्रेस-प्रभुत्व वाले लोगों तक ही सीमित था लेकिन बाद में इस आंदोलन में समाज के विभिन्न वर्ग शामिल हुए।

निम्न वर्ग: गांधीजी भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में हरिजन या दलित व्यक्ति के महत्व को अच्छी तरह से जानते थे। वे सदैव हरिजनों के उत्थान की बात करते थे। 1932 में, उन्होंने निम्न और पिछड़े वर्गों की सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए एक संगठन की स्थापना की।

महिलाएं: भले ही भारत एक बहुत ही पितृसत्तात्मक समाज था, गांधीवादी आंदोलनों ने महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधीवादी चरण के दौरान राष्ट्रीय आंदोलन ने महिलाओं को आगे आने के लिए सशक्त बनाया। **महिलाओं ने असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया। गांधीजी के विनिर्माण कार्यक्रम जैसे खादी को बढ़ावा देने में महिलाओं ने अद्वितीय भूमिका निभाई, जिससे अराजकता समाप्त हुई। अनसूया साराभाई** गांधीजी की यात्राओं में उनके साथ रहीं और उन्होंने 1918 में अहमदाबाद में कपड़ा उद्योग पर हुई

हड़ताल में सक्रिय भाग लिया। **सरोजिनी नायडू** - गांधी की गिरफ्तारी के बाद सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान **धरसाना नमक कारखाने पर छापे का नेतृत्व किया ।**

व्यवसायी वर्ग: गांधीवादी चरण में आंदोलन में व्यवसायी वर्ग की भागीदारी देखी गई। उन्होंने कुटीर एवं ग्रामीण उद्योगों के विकास पर जोर दिया। यह देखा गया कि ये कुटीर उद्योग बढ़ रहे थे और लोग अधिक आत्मनिर्भर हो गए थे। इससे भारतीयों को अन्य देशों और ब्रिटिशों से आयात पर कम निर्भर होने में मदद मिली।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि गांधीवादी आंदोलन ने भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद की। गांधी जी ने अपनी अहिंसक पद्धति से ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी और महान साम्राज्य को परास्त किया।

स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानंद सरस्वती आर्य समाज के निर्माता और आधुनिक भारत के निर्माताओं में से एक थे। अपने परिवार से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह एक प्रतिभाशाली वैदिक विद्वान बन गए। आत्मज्ञान और सत्य की खोज में, उन्होंने अपना सांसारिक अस्तित्व त्याग दिया और भारत के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में चले गये।

उनका इरादा भारत में स्वदेशी दृष्टिकोण से एक आधुनिक सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण करना था। स्वामी दयानंद सरस्वती न सिर्फ एक भारतीय धार्मिक नेता थे, बल्कि उनका भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव भी था। उन्होंने मूर्तिपूजा और खोखले संस्कारों और रीति-रिवाजों पर व्यर्थ जोर देने के साथ-साथ महिलाओं को वेद पढ़ने से रोकने वाले मानव निर्मित नियमों के खिलाफ बात की । इस तथ्य के बावजूद कि वह कभी भी व्यक्तिगत रूप से राजनीति में शामिल नहीं हुए, उनकी अंतर्दृष्टि ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कई राजनीतिक हस्तियों को प्रेरित किया। दयानंद सरस्वती का मूल संदेश हिंदुओं के लिए था कि वे अपने धर्म की नींव - वेदों की ओर लौटें। उनका मानना था कि ऐसा करने से हिंदू उस युग के दौरान देश की निराशाजनक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों को कम करने में सक्षम होंगे।

स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानंद सरस्वती के सामाजिक सुधार

- दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की 7 अप्रैल, 1875 को बंबई में। यह एक हिंदू सुधार आंदोलन था जिसका अर्थ था "महान समाज।" हिंदू समाज का लक्ष्य हिंदू धर्म को मिथ्या धारणाओं से दूर करना था। समाज का आदर्श वाक्य " **कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम्** " था, जिसका अर्थ था " **इस संसार को सम्माननीय बनाओ** ।" आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य दुनिया में अच्छा करना है, जिसमें सभी की शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक भलाई को बढ़ावा देना शामिल है। आर्य समाज ने न केवल भारतीय मानसिकता को आध्यात्मिक रूप से पुनर्गठित करने का प्रयास किया, बल्कि कई सामाजिक कठिनाइयों को भी खत्म करने का प्रयास किया। विधवा पुनर्विवाह और स्त्री शिक्षा दो सबसे

महत्वपूर्ण थे। 1880 के दशक में, समाज ने विधवाओं को पुनर्विवाह में मदद करने के प्रयास शुरू किए। महर्षि दयानंद ने महिला शिक्षा की आवश्यकता पर भी जोर दिया और बाल विवाह के खिलाफ बात की। उन्होंने घोषणा की कि एक शिक्षित व्यक्ति को समग्र रूप से समाज के लिए एक शिक्षित पत्नी की आवश्यकता होती है ।

- महर्षि दयानंद ने उन लोगों को हिंदू धर्म से पुनः परिचित कराने के लिए शुद्धि आंदोलन की स्थापना की, जो स्वतंत्र रूप से या अनिच्छा से इस्लाम या ईसाई धर्म जैसे अन्य धर्मों में परिवर्तित हो गए थे। जो लोग हिंदू धर्म में लौटना चाहते थे, उन्हें शुद्धि दी गई, और समाज ने समाज के विभिन्न वर्गों में प्रवेश करने और दलित वर्गों को हिंदू धर्म में वापस लाने का अच्छा काम किया। कहा जाता है कि दयानंद सरस्वती सभी गैर-वैदिक सिद्धांतों के पूर्णतः विरोधी थे। परिणामस्वरूप, आर्य समाज ने मूर्तिपूजा, पशु बलि, समधर्मी धर्म, पवित्र स्थानों, मंदिर में प्रसाद, जातिवाद और कम उम्र में विवाह का स्पष्ट रूप से विरोध किया और दावा किया कि इनमें से किसी को भी वेदों द्वारा अनुमोदित नहीं किया गया था। इसकी आकांक्षा वेदों की वैधता पर आधारित एक एकीकृत चर्च बनाने की थी। इस्लाम में परिवर्तित हो चुके हिंदुओं को फिर से धर्मांतरित करने की शुद्धि प्रक्रिया का अनुसरण संगठन आंदोलन द्वारा किया गया, जिसने हिंदुओं को एकजुट करने की मांग की।

- वह जाति व्यवस्था और ब्राह्मणों के सामाजिक प्रभुत्व के ख़िलाफ़ थे। उन्होंने वैदिक साहित्य पर ब्राह्मणों के अधिकार का भी विरोध किया और उम्र, धर्म या नस्ल की परवाह किए बिना वेदों को सीखने के मानव अधिकार के लिए तर्क दिया। अस्पृश्यता भी एक ऐसी चीज़ थी जिसकी दयानंद ने निंदा की। उन्होंने वेद में वर्णित वर्ण व्यवस्था की पुनर्व्याख्या की। इसे सामाजिक व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए बनाया गया था। गुण , कर्म और स्वभाव के सिद्धांतों के अनुसार , समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जैसे अलग-अलग वर्णों में विभाजित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक की अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ थीं जैसे कि पूजा, देश की रक्षा, वाणिज्य और दूसरे की सेवा। तीन जातियाँ. यह नौकरी का शीर्षक विनिमेय था। उन्होंने इस सामाजिक अलगाव की राजनीतिक आवश्यकता पर बल दिया।

- उन्होंने लैंगिक असमानता के खिलाफ अभियान चलाया और महिलाओं के अधिकारों में सुधार करने की कोशिश की। वह अन्य बातों के अलावा बाल विवाह, 'पर्दा' प्रथा और 'सती प्रथा' के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने वैदिक सिद्धांतों का हवाला देकर प्रदर्शित किया कि महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार होने चाहिए। आर्य समाज के सदस्य अंतर्जातीय विवाह और अंतर्भोजन में लगे हुए थे । उन्होंने पूरे वैदिक काल में महिलाओं के महत्व पर जोर दिया। परिणामस्वरूप, उन्होंने पुरुषों और महिलाओं के लिए समान अधिकारों के लिए अभियान चलाया। उनके अनुसार, एक अशिक्षित महिला अपने पति, बच्चों और पूरे परिवार के लिए एक दायित्व है। उन्होंने महिलाओं के संपत्ति अधिकारों के लिए भी तर्क दिया। उन्होंने महिला शिक्षा पर ज़ोर दिया और डीएवी स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने के कार्यक्रम स्थापित

किये। वह बाल विवाह के खिलाफ थे और इस प्रथा को समाप्त करने के लिए कानून बनाने की वकालत करते थे। इसी तरह उन्होंने बहुविवाह और बहुपति प्रथा की भी निंदा की। उनकी पहल से महिलाओं का मनोबल बढ़ा और उनकी उन्नति में सहायता मिली।

- दयानंद ने भारत के गौरव को पुनर्स्थापित करने के लिए वैदिक शिक्षा पर जोर दिया, जो नैतिकता पर केंद्रित थी। दयानंद ने शैक्षणिक संस्थानों में उपचार की समानता पर जोर दिया। नैतिक आधारित शिक्षा पर ध्यान देने के साथ छात्रों के चरित्र विकास पर जोर दिया जाना था। उन्होंने अच्छे, सम्माननीय शिक्षकों की भी तलाश की जो उनके क्षेत्र में विशेषज्ञ हों। दयानंद के अनुसार, शिक्षा में आत्म-नियंत्रण और चरित्र विकास पर जोर दिया जाना चाहिए।

- स्वामी दयानंद के सुधारों ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक नया आकार और प्रमाण प्रदान किया। भारत का हर किसी को कुछ न कुछ देने का अपना महान इतिहास है। उन्होंने यह भी महसूस किया कि स्वतंत्रता के बिना, सामाजिक और आर्थिक बहाली की किसी भी व्यापक परियोजना को लागू करना असंभव होगा। स्वतंत्रता-पूर्व भारत में, आर्य समाज ने सामाजिक-धार्मिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दयानंद एक रूढ़िवादी और धार्मिक प्रचारक थे जिनका कहना था कि हिंदू धर्म अन्य सभी धर्मों से श्रेष्ठ है, फिर भी वे आधुनिक भारत के निर्माताओं में से एक थे।

1857 से पहले की न्यायिक व्यवस्था - पृष्ठभूमि

- **क्राउन ने सत्रहवीं सदी की शुरुआत में चार्टर की एक श्रृंखला** के माध्यम से बंबई, मद्रास और कलकत्ता के भारतीय शहरों में एक न्यायिक प्रणाली की स्थापना की , मुख्य रूप से **ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी** के प्रतिष्ठानों के भीतर न्याय प्रशासन के उद्देश्यों के लिए।

- इन न्यायिक प्रणालियों को इन शहरों के गवर्नर और परिषद द्वारा स्वतंत्र रूप से विकसित किया गया था।

- बम्बई और मद्रास में **नौवाहनविभाग न्यायालय स्थापित किए गए, जबकि** कलकत्ता में **कलेक्टर न्यायालय स्थापित किए गए।**

- **दीवानी और फौजदारी दोनों मामलों** पर शासन करने का अधिकार दिया गया था।

- आश्चर्यजनक रूप से, अदालतों ने अपना अधिकार क्राउन के बजाय **ईस्ट इंडिया कंपनी से प्राप्त किया।** वॉरेन हेस्टिंग्स के तहत सुधार

वॉरेन हेस्टिंग्स के तहत सुधार (1772-1785) -वारेन हेस्टिंग्स द्वारा विवादों के समाधान के लिए दो न्यायिक व्यवस्थाओं की व्यवस्था की गई थी - जिला दीवानी अदालत के लिए नागरिक विवाद और जिला फौजदारी के लिए आपराधिक विवाद। अदालतें।

जिला दीवानी अदालत

- इसका गठन जिलों में कलेक्टर के अधिकार क्षेत्र में आने वाले नागरिक विवादों का निपटारा करने के लिए किया गया था।
- इस अदालत में हिंदू कानून हिंदुओं पर और मुस्लिम कानून मुसलमानों पर लागू होता था।
- **सदर दीवानी अदालत** में जाना पड़ता था , जिसका नियंत्रण एक अध्यक्ष और दो सर्वोच्च परिषद सदस्यों द्वारा किया जाता था।

जिला फौजदारी अदालत

- इसकी स्थापना उन आपराधिक मामलों से निपटने के लिए की गई थी जो **काजियों** और **मुफ्तियों द्वारा सहायता प्राप्त भारतीय अधिकारियों को भेजे जाते थे** ।
- इस न्यायालय के संपूर्ण संचालन के लिए कलेक्टर उत्तरदायी था। इस न्यायालय में मुस्लिम कानून लागू किया जाता था।
- सदर **निज़ामत अदालत** , जिसका नेतृत्व एक **उप निज़ाम द्वारा किया जाता है** और **मुख्य क़ाज़ी और मुख्य मुफ़्ती द्वारा सहायता प्रदान की जाती है, ने** मृत्युदंड और अधिग्रहण के लिए अपनी सहमति दी।
- कलकत्ता के सर्वोच्च न्यायालय का मूल और अपीलीय क्षेत्राधिकार **1773 के विनियमन अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया था** ।

कॉर्नवालिस के तहत सुधार (1786-1793)

- जिला फौजदारी न्यायालय को भंग कर दिया गया और **कलकत्ता, डेक्कन, मुर्शिदाबाद और पटना** में **सर्किट कोर्ट स्थापित किए गए** ।
- यह दीवानी और फौजदारी दोनों मामलों के लिए अपील की अदालत के रूप में कार्य करता है और इसकी अध्यक्षता यूरोपीय न्यायाधीश करते हैं।

- **सदर निज़ामत अदालत को कलकत्ता** में स्थानांतरित कर दिया गया और इसे गवर्नर-जनरल और सुप्रीम काउंसिल के सदस्यों के नियंत्रण में रखा गया, जिन्हें मुख्य काजी और मुख्य मुफ्ती द्वारा सहायता प्रदान की गई।
- जिला **दीवानी अदालत का नाम बदलकर** जिला **, शहर या जिला न्यायालय कर दिया गया** और इसका प्रशासन जिला न्यायाधीश द्वारा किया जाता था।
- कलेक्टर अब केवल राजस्व प्रशासन का प्रभारी था और उसके पास कोई मजिस्ट्रियल शक्तियाँ नहीं थीं।
- उन्होंने हिंदू और मुस्लिम सिविल अदालतों के साथ-साथ **मुंसिफ कोर्ट, रजिस्ट्रार कोर्ट, डिस्ट्रिक्ट कोर्ट, सदर दीवानी अदालत और किंग-इन-काउंसिल में भी उन्नयन की स्थापना की।**
- उन्हें कानून की पूर्ण संप्रभुता का विचार स्थापित करने के लिए जाना जाता है।
- **कॉर्नवालिस कोड** इस प्रकार था:
    - राजस्व और न्याय प्रशासन के बीच एक विभाजन था।
    - यूरोपीय प्रजा भी अधिकार क्षेत्र के अधीन थी।
    - सरकारी अधिकारियों को उनकी आधिकारिक क्षमता में किए गए कार्यों के लिए सिविल अदालतों में जवाबदेह ठहराया गया था।
    - कानूनी संप्रभुता का सिद्धांत स्थापित किया गया।

विलियम बेंटिक के तहत सुधार (1828-33)

- चार सर्किट न्यायालयों को विलियम बेंटिक द्वारा भंग कर दिया गया था, जिन्होंने विघटित न्यायालय की शक्तियों को कलेक्टरों को हस्तांतरित कर दिया था, जिनकी देखरेख राजस्व और सर्किट आयुक्त द्वारा की जाती थी।
- ऊपरी प्रांतों के लोगों के लाभ के लिए **इलाहाबाद में** एक सदर दीवानी अदालत और एक सदर निज़ामत अदालत की स्थापना की गई।
- **फ़ारसी** और एक **स्थानीय भाषा को आधिकारिक भाषा** के रूप में और **सर्वोच्च न्यायालय की** कार्यवाही के लिए **अंग्रेजी को आधिकारिक भाषा** के रूप में नामित किया।
- अपने शासनकाल के दौरान, **मैकाले ने** भारतीय कानूनों को संहिताबद्ध करने के लिए एक **विधि आयोग की स्थापना की।**

- इस पैनल ने **1859 की सिविल प्रक्रिया संहिता, 1860 की भारतीय दंड संहिता और 1861 की आपराधिक प्रक्रिया संहिता तैयार की** ।

न्यायिक प्रणाली का मूल्यांकन

सकारात्मक पहलुओं

- कानून का राज स्थापित हुआ.
- संहिताबद्ध कानूनों ने शासकों के धार्मिक और व्यक्तिगत कानूनों का स्थान ले लिया।
- यहाँ तक कि यूरोपीय विषयों को भी अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत लाया गया, हालाँकि आपराधिक मामलों की सुनवाई केवल यूरोपीय न्यायाधीशों द्वारा ही की जा सकती थी।
- सरकारी कर्मचारियों को दीवानी अदालतों के प्रति जवाबदेह बना दिया गया।

नकारात्मक पहलु

- न्यायिक प्रणाली लगातार जटिल और महंगी होती गई। अमीरों के पास सिस्टम में हेरफेर करने की क्षमता होती है ।
- धोखे, धोखे और चालाकी के लिए बहुत जगह थी।
- लंबी मुकदमेबाजी का मतलब था कि न्याय में देरी हुई।
- मुकदमेबाजी बढ़ने से अदालतों पर बोझ बढ़ गया।
- अक्सर, यूरोपीय न्यायाधीश भारतीय उपयोग और परंपराओं से अपरिचित थे।

निष्कर्ष

अंग्रेजों ने भारत पर 190 वर्षों से अधिक समय तक शासन किया और फिर भी वे भारत के लिए जो न्यायिक प्रणाली प्रदान कर सके वह अंग्रेजों की एक घटिया नकल थी। हालाँकि, पिछले कुछ वर्षों में किए गए पर्याप्त बदलावों और सुधारों के साथ, भारत में अब एक संहिताबद्ध कानूनी प्रणाली है। क्योंकि न्याय की अवधारणा जटिल रूप से धर्म से जुड़ी हुई थी और ब्रिटिश नियंत्रण से पहले सामाजिक रूप से स्तरीकृत जाति समूहों के नियमों के साथ जुड़ी हुई थी, भारतीय न्यायिक प्रणाली एकीकृत, संहिताबद्ध और मानकीकृत थी।

13 धन निष्कासन सिद्धांत - पृष्ठभूमि - दादाभाई नौरोजी

- प्रतिकूल व्यापार संतुलन के परिणामस्वरूप सोना और चांदी देश छोड़ देते हैं।

- **प्लासी की लड़ाई से पहले के 50 वर्षों** में , ईस्ट इंडिया कंपनी ने **आयात किया** भारतीय आयात के मुकाबले अपने निर्यात को संतुलित करने के लिए भारत में **$20 मिलियन का सराफा ।**
- **प्लासी की लड़ाई** के बाद स्थिति उलट गई और धन का निकास बाहर की ओर हो गया क्योंकि इंग्लैंड ने धीरे-धीरे भारतीय अर्थव्यवस्था पर एकाधिकार प्राप्त कर लिया।
- **'विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति'** प्राप्त हुई और, परिणामस्वरूप, दस्तक, दस्तूर के माध्यम से धन **प्राप्त हुआ । , नज़राना , और निजी व्यापार।**
- ब्रिटिश सरकार ने देश में भारतीय वस्त्रों के आयात को प्रतिबंधित या प्रतिबंधित करने के लिए कई उपाय किए।
- अन्य उपायों के अलावा, ब्रिटिश सरकार ने 1720 में इंग्लैंड में भारतीय रेशम और कपास पहनने या उपयोग करने पर प्रतिबंध लगा दिया, और बुनकर और विक्रेता दोनों पर जुर्माना लगाया। विशेषताएँ

धन निष्कासन सिद्धांत - विशेषताएँ

- भारतीय संसाधनों का शोषण औपनिवेशिक काल की पहचान थी।
- भारत पर विजय प्राप्त करने के लिए ब्रिटेन की प्राथमिक प्रेरणा ब्रिटेन में अपने औद्योगिक आधार को खिलाने के लिए सस्ते कच्चे माल का एक निरंतर स्रोत होना था।
- भारतीयों की आय ब्रिटेन से तैयार माल के महंगे आयात पर खर्च की गई, जिससे ब्रिटेन भारत की कीमत पर अमीर हो गया।
- इसके अलावा, ब्रिटिश सरकार ने भारत के बाहर अपने औपनिवेशिक आधार का विस्तार करने के लिए भारतीय श्रम का उपयोग किया। ब्रिटिश सेना में सेवा करने के लिए भारतीयों को अपने ब्रिटिश समकक्षों की तुलना में कम वेतन दिया जाता था।
- भारत में औपनिवेशिक शासन को प्रबंधित करने के लिए ब्रिटिश सरकार के युद्ध और प्रशासनिक खर्चों का भुगतान भारत से एकत्र राजस्व और भारत के विदेशी व्यापार द्वारा उत्पन्न निर्यात अधिशेष से किया जाता था।
- परिणामस्वरूप, ब्रिटिश शासन ने अपने हितों की पूर्ति के लिए भारतीय धन को ख़त्म कर दिया।

धन निष्कासन सिद्धांत - प्रक्रिया

- **भारत से एकत्र किए गए राजस्व का** उपयोग भारत में काम करने वाले ब्रिटिश नागरिक और सैन्य अधिकारियों के **वेतन और पेंशन ,** भारतीय सरकार द्वारा लिए गए **ऋणों पर ब्याज और भारत में**

ब्रिटिश पूंजीपतियों के मुनाफे का भुगतान करने के लिए किया जाता था। यह एक ऐसा तरीका था जिसके द्वारा भारत से पैसा चूसा जा रहा था।

- यह गिरावट आयात की तुलना में निर्यात की अधिकता के रूप में प्रकट हुई जिसके लिए भारत को कोई आर्थिक या भौतिक लाभ नहीं मिला।
- यूरोपीय कर्मचारियों द्वारा अपने परिवारों के समर्थन और अपने बच्चों की शिक्षा के लिए इंग्लैंड को भेजा गया धन-सरकार की औपनिवेशिक प्रणाली की एक विशेषता।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारी बचत भेजते थे क्योंकि वे घर पर निवेश करना पसंद करते थे।
- ब्रिटिश कर्मचारियों द्वारा वांछित ब्रिटिश वस्तुओं की खरीद के लिए प्रेषण, साथ ही भारत में ब्रिटिश वस्तुओं की खरीद
- सरकार ने ग्रेट ब्रिटेन में बनी दुकानों की खरीदारी की।
- ब्रिटेन में रखे गए सार्वजनिक ऋण पर ब्याज शुल्क (जिसमें रेलवे ऋण और उत्पादक कार्यों के लिए किए गए अन्य ऋणों पर ब्याज भुगतान शामिल नहीं है)।
- भारतीय राजकुमारों और अन्य बंगाल निवासियों से **अवैध उपहार और अनुलाभों** के रूप में निजी संपत्ति अर्जित की।
- **अंतर्देशीय व्यापार** में भाग लेकर खूब पैसा कमाया।
- ईस्ट **इंडिया कंपनी ने** प्रतिद्वंद्वी दावेदार के खिलाफ सत्ता के संघर्ष में भारतीय राजकुमारों को सैन्य सहायता प्रदान की। इस धन का एक बड़ा हिस्सा ब्रिटिश नागरिकों की जेब में चला गया।
- आर्थिक राष्ट्रवादियों ने तर्क दिया कि भारत में ब्रिटिश नीति का मुख्य लक्ष्य भारत को घरेलू देश के लिए एक मूल्यवान बाजार में बदलना और भारत को सस्ते और सुरक्षित कच्चे माल उत्पादक कृषि प्रधान देश के आपूर्तिकर्ता में बदलना था।

बाह्य अपवाह का कारण बनने वाले कारक

- भारत में बाहरी शासन एवं प्रशासन.
- धन और श्रम आप्रवासियों द्वारा लाया गया था लेकिन भारत ने आप्रवासियों को आकर्षित नहीं किया।
- ब्रिटेन के सभी नागरिक प्रशासन और सेना का खर्च भारत द्वारा वहन किया जाता था।
- भारत भारत के अंदर और बाहर दोनों जगह क्षेत्र निर्माण का भार वहन कर रहा था।

- देश को मुक्त व्यापार के लिए खोलकर भारत का और अधिक शोषण किया गया।
- ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में मुख्य कमाई करने वाले विदेशी थे। उन्होंने जो पैसा कमाया वह कभी भी भारत में निवेश नहीं किया गया।
- भारत ब्रिटेन को रेलवे, सड़क आदि विभिन्न सेवाओं के माध्यम से बड़ी धनराशि दे रहा था।
- ईस्ट इंडिया कंपनी उस पैसे से भारत से उत्पाद खरीदकर ब्रिटेन को निर्यात कर रही थी।

धन निष्कासन सिद्धांत - परिणाम

- इन संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा, जिसे भारत में निवेश किया जा सकता था, ले जाया गया और इंग्लैंड ले जाया गया।
- सरकार के बड़े पैमाने पर सार्वजनिक ऋण और ब्याज भुगतान के कारण भारत के लोगों पर कर का बोझ बढ़ाना आवश्यक हो गया, जो प्रकृति में अत्यधिक प्रतिगामी था।
- दादाभाई नौरोजी के अनुमान के अनुसार, **1886 में भारत में कर का बोझ कुल आय का 14.3 प्रतिशत था** , जो इंग्लैंड के 6.93 प्रतिशत से काफी अधिक था।
- इन कर आय का उपयोग अधिकतर भारतीय सामाजिक सेवाओं और कल्याण के बजाय ब्रिटिश लेनदारों को भुगतान करने के लिए किया जाता था।
- **18वीं और 19वीं शताब्दी में** देश की आर्थिक स्थिरता के लिए काफी हद तक जिम्मेदार था।
- धन के निष्कासन ने **पूंजी निर्माण को धीमा कर दिया भारत में** क्योंकि अधिकांश अधिशेष देश के बाहर चला गया, जबकि धन के उसी हिस्से ने **ब्रिटिश अर्थव्यवस्था के विकास को गति दी** ।
- ब्रिटिश अर्थव्यवस्था से अधिशेष को वित्तीय पूंजी के रूप में भारत में पुनः प्रवेश कराया गया, जिससे देश की संपत्ति और भी खत्म हो गई। इसका भारत में आय और रोजगार के अवसरों पर भारी प्रभाव पड़ा।
- जल निकासी ने **भारत की उत्पादक पूंजी को प्रभावी ढंग से समाप्त कर दिया** , जिसके परिणामस्वरूप पूंजी की कमी हो गई जिससे औद्योगिक विकास में बाधा उत्पन्न हुई।
- हालाँकि अंग्रेजों ने कानून और व्यवस्था, केंद्रीकृत राजनीतिक और न्यायिक प्रशासन, सड़क, रेलवे आदि को बनाए रखने की जिम्मेदारी ली , लेकिन संसाधनों की निकासी की सीमा अत्यधिक थी जिससे अर्थव्यवस्था में स्थिरता आ गई।

- दादाभाई नौरोजी ने तर्क दिया कि जो बाहर निकाला जा रहा था वह "संभावित अधिशेष" था, जिसे अगर भारत में निवेश किया जाए, तो अधिक आर्थिक विकास हो सकता है।

निष्कर्ष

धन निष्कासन का सिद्धांत मुख्य रूप से भारत में गरीबी के मूल कारणों का विश्लेषण करने के लिए भारतीय राष्ट्रवादी विचारकों द्वारा विकसित किया गया था। जैसा कि राष्ट्रवादियों द्वारा परिभाषित किया गया है, नाली, भारत से इंग्लैंड को बिना किसी आर्थिक, वाणिज्यिक या भौतिक रिटर्न प्राप्त किए धन और वस्तुओं का हस्तांतरण था। परिणामस्वरूप, भारतीय संदर्भ में अपवाह ने अनिवार्य रूप से आयात की तुलना में निर्यात की अधिकता का रूप ले लिया। धन की निकासी को आमतौर पर **"औपनिवेशिक शासन की एक घटना" के रूप में जाना जाता था।**

दादाभाई नौरोजी - योगदान और उपलब्धियाँ

- **1867** में , उन्होंने ब्रिटिश जनता के सामने भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लक्ष्य के साथ **लंदन में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की** स्थापना की , जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अग्रणी संगठनों में से एक था।
- **1874** में , उन्हें **बड़ौदा का दीवान नियुक्त किया गया** , लेकिन महाराजा और रेजिडेंट के साथ असहमति के कारण एक साल बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया।
- **जुलाई 1875** में , वह **बॉम्बे नगर निगम** के लिए चुने गए। 1876 में उन्होंने इस्तीफा दे दिया और लंदन चले गये।
- **1883** में , उन्हें **शांति न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया** , उन्होंने **'वॉयस ऑफ इंडिया' की स्थापना की** और दूसरी बार बॉम्बे नगर निगम के लिए चुने गए।
- **अगस्त 1885** में , उन्होंने **बॉम्बे विधान परिषद** में शामिल होने **के लिए गवर्नर लॉर्ड रेडी** का निमंत्रण स्वीकार कर लिया।
- जब **31 जनवरी, 1885 को बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन का** गठन हुआ , तो उन्हें इसके **उपाध्यक्षों में से एक के रूप में चुना गया।**
- **उसी वर्ष के अंत में, उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 1886, 1893 और 1906 में तीन बार इसके अध्यक्ष बने।**
- वह **पहले ब्रिटिश भारतीय सांसद थे** जब उन्हें **1902 में** सेंट्रल फिन्सबरी का प्रतिनिधित्व करते हुए **लिबरल पार्टी** के सदस्य के रूप में हाउस ऑफ कॉमन्स के लिए चुना गया था।

- विदेश यात्रा ने उनके चरित्र और व्यक्तित्व को आकार दिया। वह उदार पश्चिमी शिक्षा के उत्पाद के रूप में पश्चिमी शिक्षा प्रणाली के समर्थक थे।
- भारत में उनके मित्रों में समाज सुधारक सोराबजी बंगाली, खुर्सेटजी कामा, कैसोंदास शामिल थे मुलजी , प्राच्यविद केआर कामा, नौरोजी फुरदूनजी , जमशेदजी टाटा, आदि।
- **संसदीय लोकतंत्र** के कट्टर समर्थक थे । भारतीय आर्थिक चिंतन के इतिहास में, उन्हें **भारत की राष्ट्रीय आय की गणना में उनके अग्रणी कार्य के लिए याद किया जाता है** ।
- उन्होंने कई महत्वपूर्ण संगठनों की स्थापना की और भारत और यूनाइटेड किंगडम दोनों में कई अग्रणी समाजों और संस्थानों के सदस्य थे।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, लंदन में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बॉम्बे और अन्य महत्वपूर्ण संगठनों को स्थापित करने में उन्होंने मदद की, जिनमें इंडियन नेशनल कांग्रेस, लंदन में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन और रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बॉम्बे शामिल हैं। .
- उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में वे एक अग्रणी समाज सुधारक थे।
- वह जातियों में विश्वास नहीं करते थे और महिला शिक्षा के साथ-साथ पुरुषों और महिलाओं के लिए समान अधिकारों के समर्थक थे।
- अपनी पुस्तक **'द ड्यूटीज ऑफ द पारसी' में,** उन्होंने ह्यूम, वेडरबर्न, बदरुद्दीन तैयबजी, डॉ. भाऊ दाजी, केटी तेलंग और जीके जैसे गैर-पारसियों के दोस्तों के साथ विचार, भाषण और कार्य में शुद्धता की आवश्यकता को उजागर किया। गोखले.
- वे प्रगतिशील विचारों वाले प्रसिद्ध राष्ट्रवादी थे। वह उदारवादी विचारधारा के थे और संवैधानिक तरीकों में दृढ़ विश्वास रखते थे।
- स्वदेशी के समर्थन के बावजूद, वह देश में प्रमुख उद्योगों को व्यवस्थित करने के लिए मशीनों के उपयोग के विरोधी नहीं थे। उन्होंने टाटा से अपने लौह और इस्पात संयंत्रों के लिए भारतीय वित्त पोषण सुरक्षित करने का आग्रह किया।

निष्कर्ष

'द ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया' के नाम से भी जाना जाता है , 1845 से 1917 तक एक प्रसिद्ध सार्वजनिक व्यक्ति थे। उन्होंने भारतीय लोगों की शिकायतों को आवाज दी और उनके लक्ष्यों, आदर्शों और आकांक्षाओं को दुनिया के सामने रखा। वे जिन समाजों और संगठनों से जुड़े थे, साथ ही जनमत के अंगों में उनके योगदान

के बारे में भी बताया। उन्होंने कई मोर्चों पर आसानी से उच्च गौरव हासिल किया और उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में याद किया जाएगा।

14.सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों का परिचय

वीं सदी के भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन समाज को आधुनिक बनाने और सुधारने के लिए सामाजिक और धार्मिक मुद्दों को संबोधित करने के प्रयास थे। इन आंदोलनों ने जाति व्यवस्था जैसी प्रथाओं को खत्म करने **, शिक्षा और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और औपनिवेशिक शासन से भारत की स्वतंत्रता पर जोर देने की मांग की** । सबसे प्रभावशाली आंदोलनों में से कुछ में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी, गांधी का अहिंसा आंदोलन, दलित आंदोलन और महिला अधिकार आंदोलन शामिल हैं।

उनके लक्ष्य के आधार पर, सुधार आंदोलनों को मोटे तौर पर वर्गीकृत किया जा सकता है:

- **सुधारवादी आंदोलन** : भारतीय समाज की मौजूदा सामाजिक और धार्मिक संरचनाओं में परिवर्तन और आधुनिकीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया गया। उदाहरण के लिए, **ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज आदि।**
- **पुनरुत्थानवादी आंदोलन** : पारंपरिक भारतीय मूल्यों और प्रथाओं की ओर लौटने की आवश्यकता पर जोर दिया गया जिन्हें पश्चिमी प्रभाव से खतरे के रूप में देखा जाता था। **जैसे, आर्य समाज और देवबंद आंदोलन आदि।**

भारतीय पुनर्जागरण

- भारतीय पुनर्जागरण भारत में **महान सांस्कृतिक, सामाजिक और बौद्धिक जागृति का काल है।** भारतीय पुनर्जागरण को भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि माना जाता है , क्योंकि इसने **20 वीं शताब्दी में होने वाले** राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों और 1947 में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारत की अंततः स्वतंत्रता के लिए मंच तैयार किया था।
- इस अवधि को **पश्चिमी विचारधारा और विचारों में शिक्षित** भारतीयों **की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि** और **राष्ट्रीय गौरव की बढ़ती भावना से चिह्नित किया गया है** । इस समय के कई प्रमुख व्यक्ति थे जैसे **राजा राममोहन राय (भारतीय पुनर्जागरण के जनक माने जाते हैं)** , **स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण और कई अन्य जो इस आंदोलन की अग्रणी आवाज बने** ।
- **भारत में 19वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने भारतीय पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई:**

- इन सुधार आंदोलनों ने महिलाओं की स्थिति, जाति व्यवस्था और धार्मिक प्रथाओं जैसे **विभिन्न सामाजिक और धार्मिक मुद्दों को संबोधित करने की मांग की और उन्होंने इन क्षेत्रों में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।**

- सुधार आंदोलनों ने भारतीय नवजागरण में जिन मुख्य तरीकों से योगदान दिया उनमें से एक था **शिक्षा पर जोर देना** । कई सुधारकों का मानना था कि शिक्षा प्रगति और विकास की कुंजी है, और उन्होंने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की स्थापना की, विशेष रूप से महिलाओं और निचली जातियों के लिए, जिन्हें पारंपरिक रूप से शिक्षा तक पहुंच से वंचित रखा गया था।

- गणित और अंग्रेजी साहित्य जैसे नए विषयों की शुरूआत हुई और इसके अलावा, **अंग्रेजी, बंगाली और अन्य भाषाओं में भारतीय प्रेस ने नए विचारों और सूचनाओं के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे भारत के इतिहास, संस्कृति और सभ्यता की एक नई समझ पैदा हुई।**

- अंततः, सुधार आंदोलनों ने कला और संस्कृति के विकास में योगदान दिया जो भारतीय पुनर्जागरण की एक प्रमुख विशेषता थी। कई सुधारक लेखक, कवि, कलाकार और संगीतकार भी थे और उन्होंने अपने काम का उपयोग भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को व्यक्त करने और उसका जश्न मनाने के लिए किया। · इससे राजनीतिक नेताओं की एक नई पीढ़ी का उदय हुआ जो भारतीय स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। आंदोलन।

कारण 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलनों (या भारतीय पुनर्जागरण) के उदय के लिए:

- **पश्चिमी विचारों और मूल्यों का प्रभाव** : ब्रिटिश उपनिवेशवाद के साथ आए लोकतंत्र, समानता और व्यक्तिगत अधिकारों के पश्चिमी विचारों के संपर्क ने कुछ भारतीयों को अपने समाज के बारे में सोचने और इसे कैसे बेहतर बनाया जा सकता है, के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया।

- **भारतीय समाज में सुधार और आधुनिकीकरण की इच्छा** : कई सुधारकों का मानना था कि पारंपरिक भारतीय समाज विभिन्न बुराइयों से ग्रस्त था और उसे आधुनिकीकरण की आवश्यकता थी और प्रगति और विकास लाने के लिए सुधार की आवश्यकता थी।

- **महिलाओं की स्थिति:** महिलाएं शिक्षा और समानता के अधिकार से वंचित थीं। इसके अलावा, **सती प्रथा , बाल विवाह और कन्या भ्रूण हत्या** जैसी प्रथाएँ महिलाओं की स्थिति को और भी हाशिए पर धकेल दिया ।

- **विद्वानों और बुद्धिजीवियों का प्रभाव** : भारतीय पुनर्जागरण आंशिक रूप से उन विद्वानों और बुद्धिजीवियों के काम से प्रेरित था जिन्होंने भारत के अतीत को फिर से खोजने और पुनः प्राप्त करने की कोशिश की, और जिन्होंने सुधार आंदोलनों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। **फोर्ट विलियम कॉलेज से जुड़े भारतीय विद्वान - मृत्युंजय विद्यालंकार , रामजय तारकालंकार और राम राम बसु** - ने बंगाली गद्य को परिपक्वता हासिल करने और पुनर्जागरण में सीधे योगदान देने में मदद की।
- **मिशनरी गतिविधि का प्रभाव : ईसाई मिशनरियों ने पश्चिमी विचारों के प्रसार और शिक्षा को बढ़ावा देने** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई , खासकर बंगाल और महाराष्ट्र जैसे क्षेत्रों में।
- **उपनिवेशवाद और आर्थिक परिवर्तन का प्रभाव** : ब्रिटिश शासन द्वारा लाए गए परिवर्तनों, जिसमें एक केंद्रीकृत सरकार की स्थापना और आधुनिक उद्योगों का विकास शामिल था, ने सामाजिक और आर्थिक व्यवधान पैदा किया और कुछ भारतीयों में असंतोष की भावना पैदा की।
- **बाहरी दुनिया से संपर्क : 19वीं सदी के आखिरी कुछ दशकों में दुनिया भर में राष्ट्रवादी आंदोलनों (जैसे इटली आदि)** का उदय हुआ और कई सुधारक इन परिवर्तनों से प्रेरित हुए।

सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों की विशेषताएँ, महत्व और सीमाएँ

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की विशेषताएँ

- सुधार आन्दोलन **एक विशेष क्षेत्र तक ही सीमित थे** । ब्रह्म समाज और आर्य समाज की शाखाएँ देश के विभिन्न हिस्सों में थीं, फिर भी वे **कहीं और की तुलना में क्रमशः बंगाल और पंजाब में अधिक लोकप्रिय थे।**
- ये आंदोलन **विशेष धर्मों या जातियों तक ही सीमित थे** ।
- ये आंदोलन देश के विभिन्न हिस्सों में **अलग-अलग समय पर उभरे ।** उदाहरण के लिए, **बंगाल में , सुधार के प्रयास उन्नीसवीं सदी** की शुरुआत में चल रहे थे , लेकिन केरल में, वे **उन्नीसवीं सदी के अंत** में ही सामने आए ।
- इसके बावजूद उनके उद्देश्यों और दृष्टिकोणों में काफी समानता थी।
- **नेतृत्व:** इन आंदोलनों के कई नेता शिक्षित, मध्यमवर्गीय व्यक्ति थे जो सामाजिक और धार्मिक सुधार के लिए प्रतिबद्ध थे। वे अक्सर पश्चिमी विचारों और मूल्यों से अच्छी तरह वाकिफ थे और इस ज्ञान का उपयोग भारतीय समाज में परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए करते थे।
- **लक्ष्य:** सभी आंदोलन सामाजिक और शैक्षिक सुधारों के माध्यम से समाज के उत्थान से चिंतित थे, भले ही उनके तरीकों में अंतर हो।

- सार्वभौम दृष्टिकोण पर जोर दिया गया है।
- **जाति और लिंग भेदभाव पर ध्यान** : एक संस्था के रूप में जाति का विरोध किया गया और इसे समानता के मूल विचार के विरुद्ध माना गया। उन्होंने स्पष्ट रूप से जाति व्यवस्था के उन्मूलन की वकालत की, जैसा कि **ज्योतिबा फुले और श्री नारायण गुरु द्वारा शुरू किए गए आंदोलनों से स्पष्ट है।**
- **महिलाओं और दलितों** की मुक्ति .
- **मानवतावाद पर जोर देने** से वंचितों और पिछड़े वर्गों का सुधार हुआ।
- भारतीय धर्म की कुरीतियों को रोकने के लिए भारतीयों में **आत्म-सम्मान और आत्मनिर्भरता की अवधारणा का प्रचार-प्रसार ।**
- इसलिए, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय पुनर्जागरण भारतीय समाज का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया, जिसने धीरे-धीरे **बुद्धिवाद और मानवतावाद का निर्माण किया।**

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का महत्व

आधुनिक भारत के विकास में उन्नीसवीं सदी के सुधार आंदोलनों ने बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे इसके लिए खड़े थे

- समाज का लोकतंत्रीकरण,
- अन्धविश्वास एवं घृणित रीति-रिवाजों को दूर करना,
- ज्ञान का प्रसार और
- तर्कसंगत एवं आधुनिक दृष्टिकोण का विकास।
- इन सुधार आंदोलनों ने समाज के सभी वर्गों को प्रभावित किया। जैसे,

1. **कादियान के मिर्जा गुलाम अहमद** की प्रेरणा से **अहमदिया आंदोलन ने जिहाद का विरोध किया, लोगों के बीच भाईचारे के संबंधों की वकालत की** और पश्चिमी उदार शिक्षा का समर्थन किया।
2. **अलीगढ़ आंदोलन ने बहुविवाह का विरोध करके** और विधवा **विवाह की वकालत करके मुसलमानों के बीच** एक नया सामाजिक लोकाचार पैदा करने का प्रयास किया । यह कुरान की उदार व्याख्या और **पश्चिमी शिक्षा के प्रसार के लिए खड़ा था** ।

3. विभिन्न आंदोलनों ने प्रथाओं के सही सेट के लिए वेदों की व्याख्या पर ध्यान केंद्रित किया जो मूर्ति पूजा से लेकर महिलाओं के अधिकारों तक से संबंधित थे।

- इन सभी आंदोलनों में समाज के तत्कालीन प्रचलित मूल्यों को बदलने का प्रयास स्पष्ट है। यह प्रयास सामंती समाज के आधिपत्यवादी मूल्यों को बदलने और बुर्जुआ व्यवस्था की विशेषता वाले मूल्यों को पेश करने का था।

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की सीमाएँ

- ये सुधार आंदोलन मुख्य रूप से **शहरी घटनाएँ थीं।**
- सुधार आंदोलन **ऊंची जातियों और वर्गों तक ही सीमित थे। (आर्य समाज और निचली जाति के आंदोलनों को छोड़कर)।** उदाहरण के लिए, **बंगाल में ब्रह्म समाज** मुस्लिम उच्च वर्गों के साथ भद्रलोक और अलीगढ़ आंदोलन की समस्याओं से चिंतित था। जनता आम तौर पर अप्रभावित रही।
- **ब्रिटिश न्याय की भावना पर** बहुत भरोसा था और वे भारत को 19वीं सदी के ब्रिटेन की तरह बनाना चाहते थे।

राजा राम मोहन राय

- रामचन्द्र गुहा के अनुसार, रॉय निर्विवाद रूप से दक्षिण एशिया के पहले व्यक्ति थे जो आधुनिकता द्वारा पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं और अस्तित्व के तौर-तरीकों के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों से गंभीरता से जुड़े। वह **पहले भारतीयों में से एक थे** जिनके विचार और व्यवहार रिश्तेदारों, जाति और धर्म की बाधाओं से बंधे नहीं थे।
- वह एक साथ धर्म, राजनीति, कानून, न्यायशास्त्र, वाणिज्य और कृषि उद्यम, संविधान और नागरिक अधिकारों, महिलाओं के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार और भारतीय गरीबों की भयावह स्थिति में रुचि रखते थे।
- **मुगल सम्राट अकबर द्वितीय द्वारा** 'राजा' की उपाधि दी गई।

सामाजिक-धार्मिक सुधार

- रॉय की पहली प्रकाशित कृति, **तुहफ़ात-उल-मुवाहिद्दीन थी (ईश्वरवादियों/एकेश्वरवाद को एक उपहार)** 1803 में प्रकाशित रहस्योद्घाटन, पैगम्बरों, चमत्कारों आदि में हिंदुओं की अतार्किक धार्मिक मान्यताओं और भ्रष्ट प्रथाओं को उजागर किया।

- **आत्मीय सभा : 1814 में, उन्होंने** वेदांत में एकेश्वरवाद पर दार्शनिक चर्चा को बढ़ावा देने और मूर्तिपूजा, जातिवाद, बाल विवाह और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अभियान चलाने के लिए आत्मीय सभा **(दोस्तों की सोसायटी) की शुरुआत की।** आत्मीय सभा ने 1828 में ब्रह्म सभा के लिए रास्ता बनाया, जिसकी स्थापना रवींद्रनाथ टैगोर के पिता देबेंद्रनाथ टैगोर ने की थी।
- **शिक्षा: 1817 में, उन्होंने स्कॉटिश परोपकारी डेविड हेयर के साथ मिलकर हिंदू कॉलेज** (अब, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय) की स्थापना की।
- इसके बाद उन्होंने **1822 में एंग्लो-हिंदू स्कूल शुरू किया।**
- 1825 में, उन्होंने **वेदांत कॉलेज की स्थापना की जहां** भारतीय शिक्षा और पश्चिमी सामाजिक और भौतिक विज्ञान दोनों में पाठ्यक्रम पेश किए गए।
- 1830 में, अलेक्जेंडर डफ को जनरल असेंबली इंस्टीट्यूशन स्थापित करने में सहायता की, जो बाद में स्कॉटिश चर्च कॉलेज बन गया।
- **सती का उन्मूलन:** ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे समकालीनों के साथ उनकी अथक वकालत के कारण **1829 में गवर्नर जनरल विलियम बेंटिक के नेतृत्व में सती प्रथा का उन्मूलन हुआ।** उन्होंने सती को हर मानवीय और सामाजिक भावना का उल्लंघन और एक जाति के नैतिक पतन का लक्षण बताया। उन्होंने **बाल विवाह, महिलाओं की अशिक्षा** और विधवाओं की अपमानित स्थिति पर हमला किया और महिलाओं के लिए विरासत और संपत्ति के अधिकार की मांग की और प्रेस की स्वतंत्रता के लिए याचिका दायर की (1829 और 1830 में)।

ब्रह्म समाज

- रॉय ने 1828 में ब्रह्म सभा की स्थापना की, बाद में इसका **नाम बदलकर ब्रह्म समाज कर दिया गया।**
- **उद्देश्य: शाश्वत ईश्वर की पूजा** ; पुरोहितवाद, अनुष्ठानों और बलिदानों के खिलाफ थे और सभी धर्मों की एकता में विश्वास करते थे। यह प्रार्थना, ध्यान और धर्मग्रंथों के पढ़ने पर केंद्रित था।
- ब्रह्म समाज आधुनिक भारत का **पहला बौद्धिक सुधार आंदोलन था।** इससे भारत में बुद्धिवाद और ज्ञानोदय का उदय हुआ और परोक्ष रूप से राष्ट्रवादी आंदोलन की नींव पड़ी।
- ब्रह्म समाज **दो भागों में विभाजित हो गया** (i) **केशुब चंद्र सेन के नेतृत्व में भारत का ब्रह्म समाज (ii) देवेन्द्रनाथ टैगोर के नेतृत्व में आदि ब्रह्म समाज।**

आर्थिक और राजनीतिक सुधार

- **नागरिक स्वतंत्रताएँ** : रॉय संवैधानिक सरकार की ब्रिटिश प्रणाली से प्रभावित थे और उसकी प्रशंसा करते थे लोगों को दी गई नागरिक स्वतंत्रता के लिए।
- **प्रेस की स्वतंत्रता** : अपने लेखन और गतिविधियों के माध्यम से, उन्होंने **भारत में स्वतंत्र प्रेस का समर्थन किया और प्रेस की स्वतंत्रता के लिए याचिका दायर की (1829 और 1830 में)।** जब 1819 में लॉर्ड हेस्टिंग्स द्वारा प्रेस सेंसरशिप में ढील दी गई, तो उन्होंने तीन पत्रिकाओं की स्थापना की: (i) **ब्राह्मणिकल मैगज़ीन (1821) (ii) संवाद कौमुदी (1821), एक बंगाली साप्ताहिक (iii) मिरात- उल -अकबर,** एक फ़ारसी साप्ताहिक।
- **कराधान सुधार** : रॉय ने बंगाली जमींदारों की दमनकारी प्रथाओं की निंदा की और न्यूनतम लगान तय करने की मांग की और कर-मुक्त भूमि पर करों को समाप्त करने की मांग की। विदेशों में भारतीय वस्तुओं पर निर्यात शुल्क कम करने और ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक अधिकारों को समाप्त करने का आह्वान किया गया।
- **प्रशासनिक सुधार: बेहतर सेवाओं के भारतीयकरण** और कार्यपालिका को न्यायपालिका से अलग करने की मांग की गई । उन्होंने भारतीयों और यूरोपीय लोगों के बीच समानता की मांग की।

राजा राम मोहन राय की साहित्यिक कृतियाँ

- तुहफ़त-उल-मुवाहिदीन (1804)
- वेदांत गंथा (1815)
- वेदांत सार के संक्षिप्तीकरण का अनुवाद (1816)
- मुंडका उपनिषद (1819)
- केनोपनिषद (1816)
- ईशोपनिषद (1816)
- कठोपनिषद (1817)
- विधवाओं को जिंदा जलाने की प्रथा के पक्षधर और विरोधी के बीच एक सम्मेलन (1818)
- रक्षा (1820)
- यीशु के उपदेश- शांति और खुशी की मार्गदर्शिका (1820)
- बंगाली व्याकरण (1826)

- सार्वभौमिक धर्म (1829)
- भारतीय दर्शन का इतिहास (1829)
- गौड़ीय व्याकरण (1833)

नैतिकता, सत्यनिष्ठा और योग्यता के लिए मूल्य

- एक समृद्ध उच्च जाति के ब्राह्मण परिवार में जन्मे, रॉय अपने समय की रूढ़िवादी जाति प्रथाओं के ढांचे के भीतर बड़े हुए, बाल विवाह, बहुविवाह और दहेज उच्च जातियों में प्रचलित थे, और उन्होंने खुद बचपन में एक से अधिक बार शादी की थी। परिवार की समृद्धि ने उन्हें सर्वोत्तम शिक्षा भी सुलभ करा दी थी।
- रॉय की भाभी उनके बड़े भाई की मृत्यु के बाद सती प्रथा का शिकार हो गई थी और यह एक ऐसा घाव था जो उनके साथ रहा।
- अपनी विरासत की ताकत के बारे में आश्वस्त और अन्य संस्कृतियों से उन चीजों को ग्रहण करने के लिए तैयार हैं जिनके बारे में उनका मानना था कि वे **सुधारात्मक प्रथाएं हैं।**

15. नमक सत्याग्रह, 1930

- भारत में नमक पर **मौर्य काल से ही कर लगाया जाता रहा है** । ब्रिटिश शासन के दौरान **इसमें बढ़ोतरी की गई** और इसमें अन्य शुल्क भी जोड़ दिए गए जो आम आदमी पर बड़ा बोझ बन गए।
- **प्लासी की लड़ाई के बाद** , अंग्रेजों ने भूमि किराया (बंगाल में जहां नमक का उत्पादन किया जाता था) और नमक के परिवहन पर अस्थायी शुल्क बढ़ा दिया।
- **बक्सर की लड़ाई के बाद** , उन्होंने नमक के निर्माण पर अंग्रेजों का एकमात्र एकाधिकार बना दिया।
- **बाद में नमक अधिनियम द्वारा, भारत** और विशेष रूप से, बंगाल और इसके आसपास के प्रांतों को लिवरपूल और अन्य जगहों से आयातित नमक पर निर्भर बना दिया गया। यह आयातित नमक **भारतीय नमक से निम्न गुणवत्ता का था** । स्वदेशी उद्योग फालतू आरोपों के बोझ से दबा हुआ था और अपने अंग्रेजी प्रतिद्वंद्वी के साथ प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ था। **एक परिवार की वार्षिक आवश्यकता पर नमक कर/शुल्क एक समय में एक** मजदूर की लगभग दो महीने की मजदूरी के बराबर होता था ।
- नमक कर से **राजकोष में भारी मात्रा में धन जमा होता था** ।

नमक कर के विरुद्ध गांधीजी का आंदोलन

- कांग्रेस की शुरुआती मांगों में से एक नमक कर को समाप्त करना था, और 1885 के कांग्रेस सत्र (प्रथम कांग्रेस सत्र) में एक सदस्य ने दृढ़ता से यह बात रखी थी कि नमक कर आम भारतीय पर एक बड़ा बोझ था।
- उन्होंने द वेजिटेबल और हिंद स्वराज जैसे पत्रों में **नमक कर के खिलाफ लिखना शुरू किया।**
- कांग्रेस के **लाहौर अधिवेशन में गांधीजी के समर्थन के कारण जवाहरलाल नेहरू को अध्यक्ष बनाया गया।** इस अधिवेशन में सविनय अवज्ञा के एक कार्यक्रम को अधिकृत किया गया, **जिसमें करों का भुगतान न करना और 'पूर्ण स्वराज' का नारा शामिल था।** 'इससे महात्मा गांधी को सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने का पूरा अधिकार मिल गया।
- इसके बाद गांधीजी ने वायसराय लॉर्ड इरविन को 11 सूत्रीय अल्टीमेटम भेजा और मांगें पूरी न होने पर सविनय अवज्ञा की धमकी दी। लॉर्ड इरविन ने इन मांगों को नजरअंदाज कर दिया। ये मांगें थीं:
    - **सामान्य हित के मुद्दे**
        - सेना और सिविल सेवाओं पर ख़र्च 50 प्रतिशत कम करें।
        - पूर्ण शराबबंदी लागू करें.
        - आपराधिक जांच विभाग (सीआईडी) में सुधार करें।
        - लाइसेंस के मुद्दे पर लोकप्रिय नियंत्रण की अनुमति देते हुए शस्त्र अधिनियम में बदलाव करें।
        - राजनीतिक बंदियों को रिहा करो.
        - डाक आरक्षण बिल स्वीकार करें.
    - **विशिष्ट बुर्जुआ माँगें**
        - रुपया-स्टर्लिंग विनिमय अनुपात को घटाकर 1s 4d करें
        - कपड़ा संरक्षण का परिचय दें।
        - भारतीयों के लिए तटीय शिपिंग आरक्षित करें।
    - **विशिष्ट किसान मांगें**
        - भू-राजस्व 50 प्रतिशत कम करें।
        - नमक कर और सरकार के नमक एकाधिकार को समाप्त करें।

- इन मांगों पर सरकार की ओर से कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिलने पर, कांग्रेस कार्य समिति ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने के लिए गांधीजी को पूरी शक्तियां दे दीं।
- गांधीजी ने साबरमती आश्रम के 78 स्वयंसेवकों के एक समूह के साथ साबरमती से दांडी तक 240 मील की यात्रा शुरू की। उन्होंने घोषणा की थी कि दांडी तट पर पहुंचकर वे समुद्र तट से नमक इकट्ठा करके नमक कानून तोड़ देंगे। इस प्रकार, नमक सत्याग्रह शुरू हुआ।

नमक चुनने का कारण

- गांधी के अनुसार, नमक सबसे अमानवीय चुनाव कर है जिसे मनुष्य की चतुराई से तैयार किया जा सकता है। · नमक से बहुत छोटी लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण आय होती है। · यह सामूहिक पीड़ा के साथ एक प्रतीकात्मक पहचान का अवसर है।
- हजारों लोग उनके समर्थन में सामने आए और **गांधीजी ने लोगों से अहिंसक तरीके से नमक कानून का उल्लंघन करने का आग्रह किया।** दांडी पहुंचने पर, गांधीजी ने एक मुट्ठी नमक उठाया और इस प्रकार सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया।
- बहुत से लोगों को कांग्रेस में भर्ती किया जा रहा था ताकि जमीनी स्तर पर कांग्रेस समितियाँ बनाई जा सकें। इससे गांवों से भी सत्याग्रह शुरू हो सकेगा। धन एकत्र किया जा रहा था, सत्याग्रह के लिए स्थल चुने जा रहे थे और स्वयंसेवक तैयार किये जा रहे थे। पूरे भारत में नमक कानून का उल्लंघन शुरू हो गया।
    - **मालाबार में,** के केलप्पन (वाइकोम सत्याग्रह के नायक) ने विद्रोह शुरू कर दिया।
    - **तमिलनाडु में, सी राजगोपालाचारी ने** तिरुचिरापल्ली से वेदारन्नियम तक नमक मार्च का नेतृत्व किया ।
    - **असम में** लोग नमक कानून तोड़ने के लिए सिलहट से नोआखली (बंगाल तट) तक पैदल चले।
    - **उड़ीसा में गांधीवादी नेता ने कटक से** बालासोर के इंचुडी तक नमक सत्याग्रहियों के पहले जत्थे का नेतृत्व किया ।
    - **आंध्र में** , नमक सत्याग्रह के मुख्यालय के रूप में विभिन्न जिलों में सिबिराम (सैन्य शिविर) स्थापित किए गए थे ।
- **एनडब्ल्यूएफपी में, खान अब्दुल गफ्फार खान** , अपने संगठन, खुदाई के माध्यम से खिदमतगार या रेड शर्ट संगठन ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ विद्रोह किया। गफ्फार खान की गिरफ्तारी के

बाद बड़े पैमाने पर विद्रोह हुआ, गढ़वाल रेजिमेंट (ज्यादातर हिंदू) ने देशभक्तिपूर्ण आत्म-बलिदान, अहिंसा और सांप्रदायिक सौहार्द प्रदर्शित करने वाले दंगाइयों की भीड़ पर गोली चलाने से इनकार कर दिया।

- **धरसाना साल्ट वर्क्स पर छापा मारेंगे ,** जो ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रशासित था। इसके चलते उनकी गिरफ्तारी हुई और पूरे भारत में इसके खिलाफ विद्रोह भड़क उठा।
- **धरसाना क्रूरता** : सरोजिनी नायडू (कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में पहली भारतीय महिला), इमाम साहब और मणिलाल (गांधीजी के पुत्र) ने 2000 स्वयंसेवकों के साथ धरसाणा साल्ट वर्क्स (गुजरात) की ओर मार्च किया 'पुलिस ने विरोध न करने वाले सत्याग्रहियों पर हिंसक हमला किया। सत्याग्रहियों की पहली पंक्ति बुरी तरह घायल हो जाएगी, और उन्हें स्ट्रेचर पर ले जाया जाएगा, और एक नई पंक्ति आगे आएगी और उनकी जगह लेगी, जो पीटने के लिए तैयार होगी। यह काफी समय तक जारी रहा, जिसके परिणामस्वरूप 320 लोग घायल हो गए और दो की मौत हो गई। धरसाणा के सत्याग्रहियों की दृढ़ वीरता की यह घटना सर्वत्र प्रतीक बन गई।
- इसके कारण कई स्थानों पर सत्याग्रह हुए: बंबई, कर्नाटक, मद्रास, आंध्र प्रदेश, बंगाल और उड़ीसा।
- **नमक कर के ख़िलाफ़ सत्याग्रह लगभग एक वर्ष तक जारी रहा, जो गांधी की जेल से रिहाई और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में वायसराय लॉर्ड इरविन के साथ बातचीत के साथ समाप्त हुआ** । नमक सत्याग्रह के कारण 60,000 से अधिक भारतीयों को जेल में डाल दिया गया। हालाँकि, यह अंग्रेजों से महत्वपूर्ण रियायतें दिलाने में विफल रहा।
- **इस आंदोलन के तीन मुख्य प्रभाव थे:**
  - **भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को पश्चिमी मीडिया में सुर्खियों में** लाया और अपने साथ विभिन्न प्रकार की अवज्ञा और जोरदार बहिष्कार लाया।
  - बी **ने महिलाओं और दलित वर्गों सहित बहुत से लोगों को सीधे स्वतंत्रता आंदोलन के संपर्क में लाया** । उन्होंने नशीली दवाओं और शराब के सेवन में सक्रिय रूप से भाग लिया।
  - एस ने साम्राज्यवाद से लड़ने में एक उपकरण के रूप में **अहिंसक सत्याग्रह की शक्ति को दर्शाया ।**
- लॉर्ड इरविन ने गांधीजी से मुलाकात की और कई दिनों की बातचीत के बाद गांधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

16. भारत छोड़ो आंदोलन, 1942

- QIM को विभाजन और स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर **सबसे बड़े साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष के रूप में वर्णित किया गया है।**
- **लोकप्रिय राष्ट्रवाद में तीव्र वृद्धि** , बड़े पैमाने पर अकाल (बंगाल अकाल, 1943) के कारण बड़े पैमाने पर अभाव और **मौतें, बर्मा और मलाया में जापानी आक्रामकता में वृद्धि, सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज के** तहत सैन्य मुक्ति की उम्मीदें और सांप्रदायिक विभाजन तेज हो गया। QIM के लिए विभाजन प्रदान किया गया संदर्भ।
- इसे **8 अगस्त 1942 को गांधीजी द्वारा औपनिवेशिक शासन को समाप्त करने के लिए लॉन्च किया गया था** । शीर्ष राष्ट्रवादी नेतृत्व की गिरफ़्तारी के बावजूद लोगों ने सरकारी संस्थानों पर हमले में भारी संख्या में भाग लिया। कई स्थानों पर प्रशासन पर राष्ट्रवादियों का कब्ज़ा हो गया। लोगों ने राष्ट्रवादी विचारों की अपने-अपने ढंग से व्याख्या की और उसके अनुसार कार्य किया। क्यूआईएम को महत्वपूर्ण उग्रवाद द्वारा भी चिह्नित किया गया था।

कारण

- **क्रिप्स मिशन की विफलता (तत्काल कारण)** : भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग को समायोजित करने और प्रांतों को अलग होने का अधिकार देने में क्रिप्स मिशन की विफलता के परिणामस्वरूप संवैधानिक गतिरोध उत्पन्न हुआ।
- इस प्रकार, भारतीय नेताओं को यह स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिशों की ईमानदारी की कमी पर अब और चुप्पी भारतीयों से परामर्श किए बिना भारतीयों के भाग्य का फैसला करने के ब्रिटिश अधिकार को स्वीकार करने के बराबर होगी।
- **मुद्रास्फीति के खिलाफ लोकप्रिय असंतोष** : बढ़ती कीमतों और चावल, नमक आदि की कमी और बंगाल और उड़ीसा में नावों की कमान जैसे कारकों के कारण लोकप्रिय असंतोष था। इस बात की आशंका थी कि ब्रिटेन असम, बंगाल और उड़ीसा में जापान की संभावित बढ़त के खिलाफ झुलसी हुई पृथ्वी नीति अपनाएगा।
- **आसन्न ब्रिटिश पतन** : दक्षिण-पूर्व एशिया में अंग्रेजों की पराजय और आसन्न ब्रिटिश पतन की खबरों ने **भारतीयों को आत्मविश्वास दिया** और असंतोष को अभिव्यक्ति देने की लोकप्रिय इच्छा को बढ़ाया।
- ब्रिटिश शासन की स्थिरता में लोगों का विश्वास इतना कम था कि **लोग बैंकों और डाकघरों से जमा राशि निकाल रहे थे** ।

- **ब्रिटिश दक्षिण-पूर्व एशिया से बाहर चले गए,** अपनी प्रजा को उनके भाग्य पर छोड़ दिया और एक एशियाई शक्ति (जापान) द्वारा पराजय ने ब्रिटेन की प्रतिष्ठा को नष्ट कर दिया और **शासकों की नस्लवादी प्रवृत्ति को उजागर कर दिया** ।
- **शरणार्थियों की आमद: 1942 की शुरुआत में भारत पर जापानी आक्रमण के खतरे ने** युद्ध के बारे में भारतीयों की धारणा को बदल दिया। तब तक युद्ध एक दूर की घटना थी, भारतीय सीमा से बहुत दूर। लेकिन अब युद्ध एक हकीकत लग रहा था.
- भारत में जनता को युद्ध की प्रगति के बारे में पूरी तरह से तब पता चला जब 4,50,000 भारतीय शरणार्थी अपनी आँखों से अंग्रेजों को पराजित होते हुए देखकर, दर्द के साथ बर्मा से वापस चले आए।

आंदोलन की शुरुआत

- अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक **8 अगस्त 1942 को बंबई में गोवालिया टैंक के ऐतिहासिक मैदान** (बाद में इसका नाम बदलकर ' **अगस्त क्रांति मैदान' कर दिया गया**) में हुई । भारत छोड़ो प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया, और बैठक में संकल्प लिया गया:
- भारत में **ब्रिटिश शासन को तत्काल समाप्त करने की** मांग की ।
- भारत को स्वतंत्र करने की प्रतिबद्धता की घोषणा करें **ताकि वह सभी प्रकार के फासीवाद और साम्राज्यवाद से अपनी रक्षा स्वयं कर सके।**
- **ब्रिटिश वापसी के बाद भारत की एक अस्थायी सरकार का गठन** ।
- ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आंदोलन को मंजूरी देना।
- **एमके गांधी को संघर्ष का नेता नामित किया गया था।**

विभिन्न वर्गों के लिए गांधीजी के निर्देश

इन्हें गोवालिया टैंक बैठक में बताया गया लेकिन जारी नहीं किया गया। उन्हें समाज के विभिन्न वर्गों पर निर्देशित किया गया था:

- **सरकारी कर्मचारी:** इस्तीफा न दें बल्कि कांग्रेस के प्रति अपनी निष्ठा घोषित करें।
- **सैनिक:** सेना मत छोड़ो लेकिन हमवतन लोगों पर गोली मत चलाओ।
- **छात्र:** आत्मविश्वास है तो पढ़ाई छोड़ दें।

- **किसान:** यदि जमींदार सरकार विरोधी हैं, तो आपसी सहमति से लगान दें, और यदि जमींदार सरकार समर्थक हैं, तो लगान न दें।
- **राजकुमार:** जनता का समर्थन करें और अपने लोगों की संप्रभुता स्वीकार करें।
- **रियासतों के लोग:** शासक का तभी समर्थन करें जब वह सरकार विरोधी हो और स्वयं को भारतीय राष्ट्र का हिस्सा घोषित करें।

आंदोलन के तीन चरण

प्रथम चरण

- सबसे अधिक हिंसक और 9 अगस्त से 15 अगस्त तक चला। लगभग पूरे शीर्ष नेतृत्व की गिरफ्तारी ने सरकारी संस्थानों पर हमला करने वाले लोगों को नहीं रोका। इसकी **प्रकृति मुख्य रूप से शहरी थी और दिल्ली, मुंबई, पुणे, अहमदाबाद आदि में हिंसक विरोध प्रदर्शन हुए,** जहां प्रदर्शनकारियों ने रेल, टेलीग्राफ और डाक सेवाओं पर हमला किया। जगह-जगह पुलिस और सेना पर हमले किये गये। **इस चरण को 'महान अगस्त विद्रोह' के रूप में याद किया जाता है।**
- **भूमिगत प्रेस** : प्रेस सेंसरशिप ने जन भागीदारी को प्रेरित करने के लिए भड़काऊ भूमिगत साहित्य को प्रोत्साहित किया । **पूर्व। बॉम्बे कांग्रेस बुलेटिन, 10 अगस्त को अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, हिंदी और उर्दू में छपा। गुजराती में वंदे मातरम और बॉम्बे में उर्दू में इत्तेहाद , मेदिनीपुर में बंगाली में विप्लबी , फ्री इंडिया, वॉर ऑफ इंडिया बुलेटिन, करो या मरो न्यूज-शीट, फ्री स्टेट ऑफ इंडिया गजट और कांग्रेस गजट।**

दूसरे चरण

- दूसरे चरण में आंदोलन का केंद्र ग्रामीण **इलाकों में स्थानांतरित हो गया क्योंकि शीर्ष नेतृत्व की अनुपस्थिति** में आंदोलन का नेतृत्व करने वाले युवा नेताओं को शहरी केंद्रों पर कड़ी ब्रिटिश निगरानी के कारण ग्रामीण इलाकों की ओर जाने के लिए मजबूर होना पड़ा ।
- **पश्चिमी भारत में:**
- **गुजरात व्यायाम प्रचारक मंडल या (गुजरात सोसाइटी फॉर प्रोपेगेशन ऑफ फिजिकल ट्रेनिंग) ने अपने नेता छोटूभाई पुराणी के नेतृत्व में** पूरे गुजरात में व्यायामशालाओं का एक नेटवर्क स्थापित किया जिसमें लड़कों और युवाओं को अंग्रेजों से लड़ने के लिए अपने दिमाग और शरीर को प्रशिक्षित करना सिखाया जाता था। इन जिमों में लड़के ज्यादातर उच्च जाति के शहरी मध्यम वर्ग और अमीर ग्रामीण परिवारों से आते थे। गांधीजी ने इन गतिविधियों को मंजूरी दे दी क्योंकि ये जिम दक्षिणपंथी हिंदू और मुस्लिम

विरोधी भावनाओं को अनुमति नहीं देते थे। इस प्रकार, बड़ी संख्या में शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार युवा थे जो अंग्रेजों के खिलाफ हिंसक संघर्ष का समर्थन करने के लिए तैयार थे।

- **पूर्वी भारत में:**
- **क्षेत्र में क्यूआईएम का पहला फोकस शहर थे** । हालाँकि, ध्यान ग्रामीण क्षेत्रों पर केंद्रित हो गया।
- **डकैत गिरोह** : 1943 में बिहार में कई आतंकवादी संगठन और डकैत गिरोह बने। इनमें से कई समूहों का संबंध कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से था। उन्होंने ' **आजाद दस्ता'** नामक समाजवादी समूहों के साथ गठबंधन किया और कांग्रेस के नाम पर गतिविधियाँ चलायीं। वे ग्रामीणों के समर्थन से ग्रामीण इलाकों में घूमे और 1924-44 के बीच राजनीतिक शून्य को भरा।
- **भोजन के लिए की जाने वाली डकैतियों में वृद्धि** : अधिकतर डकैतियाँ खाद्य भंडारों पर हुईं लेकिन डाकघरों, पोस्ट बैग, सरकारी खजाने और गोला-बारूद डिपो को भी लूटने का प्रयास किया गया। इन कृत्यों के साथ अक्सर ' **गांधीजी की जय ' के नारे भी गूंजते थे।**
- **नेपाल में आज़ाद दस्ता** : 1942 में जयप्रकाश नारायण हज़ारीबाग़ की जेल से भाग निकले और नेपाल भागकर राममनोहर लोहिया की मदद से आज़ाद दस्ता के नाम से प्रशिक्षित क्रांतिकारी बने ।

तीसरा चरण

- यह चरण **अक्टूबर से दिसंबर तक चला और शिक्षित युवाओं द्वारा पुलिस और सेना प्रतिष्ठानों और संचार पर** हमलों तक सीमित था और आंदोलन के युवा नेताओं द्वारा की गई भूमिगत गतिविधियों द्वारा पहचाना गया था।
- **भूमिगत गतिविधि राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली, उषा शर्मा, बीजू पटनायक, छोटू भाई पुराणिक, अच्युत पटवर्धन, सुचेता कृपलानी और आरपी गोयनका द्वारा की गई थी। उषा शर्मा ने** बम्बई में एक भूमिगत रेडियो शुरू किया। भूमिगत गतिविधि के इस चरण का उद्देश्य **हथियारों और गोला-बारूद को वितरित करने के लिए कमांड और मार्गदर्शन की** एक पंक्ति प्रदान करके लोकप्रिय मनोबल बनाए रखना था।

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान समानांतर सरकारें

- **बलिया (अगस्त में, एक सप्ताह तक चला): कांग्रेसी चित्तू पांडे** के नेतृत्व में गठित । **इस भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान देश में पहली समानांतर सरकार का गठन होना था।**

- **तमलुक (मिदनापुर, दिसंबर 1942 से सितंबर 1944 तक): जातीय सरकार नाम से और बिप्लबी नाम से साप्ताहिक समाचार पत्र चलाते थे।** इस सरकार ने तुरंत चक्रवात राहत कार्य शुरू किया, स्कूलों को अनुदान स्वीकृत किया, **विद्युत वाहिनी आदि का आयोजन किया।**
- **सतारा (मध्य 1943 से 1945): प्रति सरकार नाम दिया गया और इसे वाईबी चव्हाण, नाना पाटिल आदि जैसे नेताओं के तहत संगठित किया गया। प्रति सरकार ने एक सुव्यवस्थित और प्रभावी सरकार के सभी गुणों का प्रदर्शन किया।**
    - **ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज ने** QIM को **आधार और मुख्य प्रहारक शक्ति प्रदान की।**
    - इसने तीन मोर्चों पर अपनी गतिविधियाँ चलायीं, अर्थात्, (i) **भारत छोड़ो आंदोलन के हिस्से के रूप में अंग्रेजों के खिलाफ, (ii) डकैती के खिलाफ (iii) किसान भूमि विवादों और ऋणग्रस्तता के निपटान की दिशा में।**
    - इसके लिए, इसने **तीन ग्राम-स्तरीय संगठनों की स्थापना की** (i) **न्यायदान मंडल: लोगों की अदालतें जो विवादों का निपटारा करती थीं। (ii) रचनात्मक कार्य और ग्राम कल्याण की देखभाल के लिए ग्राम समितियाँ। (iii) तूफ़ान सेनाएँ** , जो गाँव के कुश्ती समूहों से निकाली गई युवा सेनाएँ थीं, जो किसानों को साहूकारों के उत्पीड़न से बचाती थीं।
    - **तूफ़ान सेना ने न्यायदान मंडलों के साथ काम किया और अक्सर अपराधियों को दंडित किया।** इसके अलावा, ग्राम पुस्तकालयों का आयोजन किया गया, निषेध अभियान चलाए गए, और **'गांधी विवाह' आयोजित किए गए जिनमें दलित जातियों को आमंत्रित किया गया।**
    - भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बनी **सबसे लंबे समय तक चलने वाली समानांतर सरकार थी।**
- **समानांतर सरकार (जिसे आज़ाद सरकार के नाम से जाना जाता है) की** स्थापना की गई, जिसने प्रत्येक नगरपालिका वार्ड के प्रभारी भूमिगत नेताओं के साथ **मौजूदा प्रशासनिक मशीनरी की नकल की।** इसने विरोध प्रदर्शन आयोजित किए , कर लगाए, पत्रिकाओं में सूचनाएं जारी कीं , जासूसों के माध्यम से खुफिया जानकारी एकत्र की और कुख्यात पुलिसकर्मियों को दंडित किया। नेतृत्व युवा कांग्रेसी समाजवादियों के हाथ में था।

आंदोलन का सामाजिक आधार

इस आंदोलन में विभिन्न वर्गों की व्यापक भागीदारी देखी गई। विभिन्न स्तरों पर भागीदारी देखी गई-

- **युवा,** विशेषकर स्कूलों और कॉलेजों के छात्र, सबसे आगे रहे।
- **महिलाओं,** विशेषकर स्कूल और कॉलेज की लड़कियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और उनमें अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी और उषा मेहता शामिल थीं।
- **श्रमिकों ने** हड़तालें कीं और दमन का सामना किया।
- **किसान** आंदोलन के केंद्र में थे। यहाँ तक कि कुछ जमींदारों ने भी भाग लिया। इन किसानों ने अपना आक्रमण सत्ता के प्रतीकों पर केंद्रित कर दिया और जमींदारी विरोधी हिंसा का पूर्ण अभाव था।
- **सरकारी अधिकारियों,** विशेष रूप से नीति और प्रशासन के निचले स्तर से संबंधित लोगों ने भाग लिया, जिसके परिणामस्वरूप सरकार की वफादारी में कमी आई।
- **मुसलमानों ने भूमिगत कार्यकर्ताओं को आश्रय देकर मदद की।** आंदोलन के दौरान कोई सांप्रदायिक झड़प नहीं हुई।
- **कम्युनिस्टों ने** , अपनी युद्ध-विरोधी लाइन के बावजूद, आंदोलन के अप्रतिरोध्य खिंचाव को महसूस किया।
- **रियासतों ने** धीमी प्रतिक्रिया दिखाई।
- **हिंदू महासभा और आरएसएस ने खुद को पूरे आंदोलन से अलग रखा. डॉ अम्बेडकर ने भी इसका समर्थन नहीं किया । कम्युनिस्टों ने इसका समर्थन नहीं किया क्योंकि सोवियत रूस मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में शामिल हो गया था** , और इसलिए, कम्युनिस्ट पार्टियों को युद्ध प्रयासों में बाधा डालने से परहेज करने का निर्देश दिया गया था। वहीं **अलगाववादी आंदोलन में शामिल मुस्लिम लीग भी** आंदोलन **से** दूर रही.

सरकार की प्रतिक्रिया

- **क्रांतिकारी आंदोलन अध्यादेश, 1942 पर अगस्त, 1942 में वायसराय द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे। हालाँकि, इसे अधिसूचित होने से रोक दिया गया था क्योंकि अधिकांश प्रांतों ने तर्क दिया था कि वे** भारत की रक्षा नियमों के साथ काम कर सकते हैं।
- **भारत रक्षा नियम, 1942** सरकार को युद्ध प्रयास के नाम पर व्यक्तियों और संपत्ति के खिलाफ कोई भी मनमानी कार्रवाई करने की अनुमति देता है। इस प्रकार, अधिकारी दंडात्मक कार्रवाई कर सकते हैं जो कानून के दायरे में नहीं आती।
- **विशेष आपराधिक न्यायालय अध्यादेश, 1942:** मूल रूप से इसका उद्देश्य सीधे शत्रु (एक्सिस) संलग्नक से उत्पन्न होने वाले मामलों पर लागू होना था। हालाँकि, यह अध्यादेश QIM से संबंधित आंतरिक

गड़बड़ी से उत्पन्न मामलों पर लागू किया गया था। इस अध्यादेश ने सरकार को आपराधिक न्याय की प्रक्रिया को शॉर्ट-सर्किट करने की अनुमति दे दी। विशेष आपराधिक अदालतें स्थापित की जा सकती थीं, जिनके पास संदिग्ध अपराधियों पर संक्षिप्त अधिकार क्षेत्र होगा, जिन्हें अधिकतम दो साल की कैद हो सकती थी और उच्च न्यायालयों में अपील की गुंजाइश सीमित थी।

भारत छोड़ो आंदोलन का महत्व

- **राष्ट्रवाद की भावना** : लोगों में राष्ट्रवादी भावनाएँ अपने चरम पर देखी गई।
- **अंग्रेजों को अहसास** : ब्रिटिश सरकार को विश्वास हो गया कि भारत में उनके दिन अब गिनती के रह गए हैं। इसने भारत के स्वतंत्रता की ओर बढ़ने की प्रक्रिया को तेज़ कर दिया।
- हालाँकि आंदोलन को कुचल दिया गया था, लेकिन आंदोलन को रोकने के लिए अंग्रेजों को जितनी ऊर्जा और संसाधनों का उपयोग करना पड़ा, उससे **उन्हें जल्द ही भारत पर शासन करने की अव्यवहार्यता का एहसास हुआ।**
- आंदोलन के दौरान प्रदर्शित ब्रिटिश विरोधी और उपनिवेशवाद विरोधी भावना ने यह संदेश दिया कि भारतीय पूर्ण स्वतंत्रता से कम किसी भी राजनीतिक या संवैधानिक सुधार से संतुष्ट नहीं होंगे ।
- **वैश्विक समर्थन** : भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की तात्कालिकता के बारे में दुनिया को समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संयुक्त राज्य अमेरिका सहित मित्र राष्ट्रों में से कई राष्ट्र-राज्यों ने भारतीय स्वतंत्रता का समर्थन किया।
- **स्वतंत्रता की ओर अंतिम मार्च** : यद्यपि आंदोलन तुरंत अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल रहा, फिर भी इसने सामान्य संदेश दिया कि भारत को स्वतंत्रता देने की प्रक्रिया पर निर्णय लेना बस कुछ समय और प्रक्रिया की बात है।

17 भारतीय राष्ट्रीय सेना और युद्धोपरांत राष्ट्रवादी विद्रोह

- **1943 में सुभाष चंद्र बोस** के आगमन के साथ शुरू हुआ। उन्होंने 1940 में कांग्रेस छोड़कर **फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन किया था**। भारत की आज़ादी के लिए सहयोगियों की तलाश में उन्होंने 1941 में रूस की यात्रा की।
- इसके बाद वह जर्मनी गए **और छद्म नाम ऑरलैंडो मैज़ोट्टा के तहत हिटलर से मिले**। **हिटलर की सहायता से 'स्वतंत्रता सेना' (मुक्ति सेना) का** गठन किया गया जिसमें जर्मनी और इटली द्वारा पकड़े गए भारतीय मूल के सभी युद्धबंदियों को शामिल किया गया।

- जर्मनी के ड्रेसडेन को स्वतंत्रता सेना का कार्यालय बनाया गया। **जर्मनी के लोग बोस को 'नेताजी' कहने लगे। उन्होंने जर्मनी के फ्री इंडिया सेंटर से प्रसिद्ध नारा 'जय हिंद' दिया।**
- उन्होंने जनवरी 1942 में बर्लिन रेडियो से नियमित प्रसारण शुरू किया, जिससे भारतीय उत्साहित हुए। **1943 की शुरुआत में उन्होंने जर्मनी छोड़ दिया और जापान पहुँच गये।**
- **आख़िरकार वे 1943 में सिंगापुर पहुँचे। सुभाष बोस आईएनए के सुप्रीम कमांडर बने।**
- रासबिहारी बोस और अन्य लोगों की सहायता से , उन्होंने **रंगून और सिंगापुर में मुख्यालय के साथ** एक अस्थायी भारतीय सरकार की स्थापना की । **इसमें रानी झाँसी के नाम पर एक महिला रेजिमेंट भी थी।**
- आईएनए मुख्यालय को **रंगून (बर्मा में) में स्थानांतरित कर दिया गया था, और सेना के रंगरूटों को "चलो दिल्ली!" के युद्ध घोष के साथ वहां से मार्च करना था। उनके होठों पर.**
- 1944 में, **सुभाष बोस ने आजाद हिंद रेडियो से महात्मा गांधी को 'राष्ट्रपिता' कहकर संबोधित किया (गांधी को 'राष्ट्रपिता' कहने वाले पहले व्यक्ति)। उन्होंने "भारत की आखिरी आज़ादी की लड़ाई" के लिए गांधीजी का आशीर्वाद मांगा।**
- **द्वितीय विश्व युद्ध में जापान के आत्मसमर्पण के साथ** INA की मृत्यु हो गई।

महान स्वतंत्रता सेनानी

खुदीराम बोस

- पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में जन्म।
- **स्वदेशी आंदोलन के दौरान अरबिंदो घोष और सिस्टर निवेदिता के सार्वजनिक भाषणों ने उन्हें** स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।
- 1905 में, बंगाल विभाजन के दौरान, वह स्वतंत्रता आंदोलन में **सक्रिय स्वयंसेवक बन गये।**
- खुदीराम केवल 15 वर्ष के थे जब **उन्हें पहली बार ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ पर्चे बांटने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।**
- 1908 में, **खुदीराम अनुशीलन समिति में शामिल हो गये और अरबिंदो घोष तथा उनके भाई बरिन्द्र घोष के नेतृत्व में** वे पूरी तरह से ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में शामिल हो गये। इसके नेताओं ने तब बम हमले के माध्यम से डगलस एच किंग्सफोर्ड की हत्या के मिशन को संचालित करने के लिए खुदीराम बोस और प्रफुल्ल कुमार चाकी को नियुक्त करने का निर्णय लिया।
- हालाँकि, बाद में पता चला कि गाड़ी में प्रिंगल कैनेडी नामक एक बैरिस्टर की पत्नी और बेटी सवार थी, और किंग्सफोर्ड अपने जीवन पर एक और प्रयास से बच गया था।
- **खुदीराम को मौत की सजा सुनाई गई (जिससे वह भारत के सबसे कम उम्र के क्रांतिकारियों में से एक बन गए जिन्हें अंग्रेजों ने फांसी दी थी) और प्रफुल्ल कुमार चाकी ने आत्महत्या कर ली।**

भगत सिंह

- **'शहीद (शहीद) भगत सिंह' के नाम से जाने जाने वाले ,** उन्हें **औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम का राष्ट्रीय नायक माना जाता है।**
- एक किशोर के रूप में, भगत सिंह ने **'इंकलाब जिंदाबाद'** के नारे को लोकप्रिय बनाया जो अंततः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और क्रांतिकारी आदर्शवाद का नारा बन गया।
- उन्होंने 13 साल की उम्र में शिक्षा छोड़ दी और **लाहौर के नेशनल कॉलेज में दाखिला ले लिया,** जहाँ उन्होंने यूरोपीय क्रांतिकारी आंदोलनों का अध्ययन किया। जब उनके माता-पिता ने उनकी शादी कराने की कोशिश की, तो भगत सिंह घर छोड़कर कानपुर चले गये।

- 1926 में, **भगत सिंह ने ' नौजवान भारत सभा (भारत की युवा सोसायटी) की स्थापना की और हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (जिसे बाद में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के नाम से जाना गया) में शामिल हो गए** । उस दौरान उनकी मुलाकात कई उपनिवेशवाद-विरोधी कार्यकर्ताओं से हुई।
- **वे पश्चिम के समाजवादी विचारों से बहुत प्रभावित थे** । वह अन्य क्रांतिकारियों के साथ मिलकर भारत के संयुक्त राज्य संघीय गणराज्य की स्थापना करना चाहते थे।
- **दिसंबर 1928 में, भगत सिंह ने सुखदेव और राजगुरु के साथ मिलकर** भारतीय राष्ट्रवादी नेता लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने की योजना बनाई और लाहौर में पुलिस अधीक्षक जेम्स स्कॉट की हत्या की साजिश रची।
- हालाँकि, गलत पहचान के एक मामले में, **सहायक पुलिस अधीक्षक जॉन सॉन्डर्स को गोली मार दी गई।** अपराध के लिए पहचाने जाने और गिरफ्तार होने से बचने के लिए , भगत सिंह अपनी दाढ़ी और बाल कटवाकर लाहौर से कलकत्ता भाग गए।
- अप्रैल 1929 में, **सिंह और बटुकेश्वर** दत्त ने प्रतिगामी, सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक और व्यापार विवाद विधेयक के पारित होने और दिल्ली में प्रेस राजद्रोह विधेयक पेश करने की योजना के विरोध में सेंट्रल असेंबली हॉल पर बमबारी की और "इंकलाब जिंदाबाद!" का नारा लगाया । घटना के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उनके द्वारा गिराए गए पर्चे ' **द रेड पैम्फलेट ' के नाम से जाने गए।**
- **लाहौर षडयंत्र मामले** में अंग्रेजों ने फाँसी दे दी।

चंद्रशेखर आजाद

- उनका परिचय **राम प्रसाद बिस्मिल (हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के संस्थापक) से कराया।**
- एचआरए के सदस्य के रूप में, वह 1925 की **काकोरी ट्रेन डकैती** , 1928 में लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने के लिए लाहौर में जॉन पी. सॉन्डर्स की गोली मारकर हत्या और अंत में, भारत की ट्रेन के वायसराय को उड़ाने के प्रयास में शामिल थे। 1929.
- **उन्होंने इसके संस्थापक राम प्रसाद बिस्मिल की मृत्यु के बाद हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) को** उसके नए नाम हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए) के तहत **पुनर्गठित किया** ।

हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के बारे में (1924-40)

- यह एक **भारतीय क्रांतिकारी संगठन था जिसकी स्थापना राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्ला खान, सचिन्द्र नाथ बख्शी, सचिन्द्रनाथ सान्याल और जोगेश चंद्र चटर्जी ने की थी।**
- असहयोग आंदोलन के अचानक निलंबन से पैदा हुई राजनीतिक शून्यता के कारण एचआरए सहित क्रांतिकारी आंदोलनों का गठन हुआ।
- **पीला कागज: इस कागज पर** संगठन का नाम और उद्देश्य सचिन्द्रनाथ सान्याल ने लिखा था। यह एचआरए का संविधान बन गया।
- **क्रांतिकारी** : यह सान्याल द्वारा लिखित एचआरए का घोषणापत्र था और 1925 में लोगों के बीच वितरित किया गया था। इसमें ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को उखाड़ फेंकने और इसके स्थान पर " **संयुक्त राज्य अमेरिका के संघीय गणराज्य " का प्रस्ताव रखा गया था।** इसके अलावा, इसने सार्वभौमिक मताधिकार और "उन सभी प्रणालियों के उन्मूलन के समाजवादी-उन्मुख लक्ष्य की मांग की जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के किसी भी प्रकार के शोषण को संभव बनाती हैं"।
- **एचआरए ने आगरा, इलाहाबाद, बनारस, कानपुर, लखनऊ, सहारनपुर और शाहजहाँपुर में शाखाएँ स्थापित कीं।**
- **संबद्ध षडयंत्र: लाहौर और काकोरी षडयंत्र।**

वीडी सावरकर

- **महाराष्ट्र के नासिक** में जन्म।
- **1904 में भाई जीडी दामोदर के साथ अभिनव भारत सोसाइटी (प्रारंभ में मित्र मेला, 1899) की** स्थापना की। यह एक गुप्त सोसाइटी थी जिसका लंदन से भी संबंध था।
- वह **इंडिया हाउस (युवाओं के बीच राष्ट्रवादी विचारों को बढ़ावा देने के लिए लंदन में श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित) से जुड़े थे।**
- सावरकर 1906 में लंदन गए। उन्होंने जल्द ही इतालवी राष्ट्रवादी ग्यूसेप माज़िनी के विचारों के आधार पर मैडम **भीकाजी कामा के साथ फ्री इंडिया सोसाइटी की स्थापना की।**
- **1937 से 1943 तक हिंदू महासभा के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया**।
- उन्होंने **भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध किया**।

- सावरकर को दोषी ठहराया गया और **50 साल की कैद की सजा सुनाई गई, जिसे काला पानी भी कहा जाता है और 1911 में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की सेलुलर जेल में भेज दिया गया।** 1924 में रिलीज़ हुई।
- बाद में वह **तिलक की स्वराज पार्टी में शामिल हो गये।**
- उन्होंने **हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयोग करने की वकालत की।** उन्होंने छुआछूत और जाति-आधारित भेदभाव के खिलाफ भी लड़ाई लड़ी।
- **साहित्यिक कार्य**
    - **भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास (1857 के विद्रोह पर)**
    - **हिंदुत्व: हिंदू कौन है?'**

श्री अरबिंदो

भारत अरबिंदो की **150 वीं जयंती मना रहा है** .

1. उनके जीवन का पहला चरण **ब्रिटिश शासन से हमारी मातृभूमि की मुक्ति के लिए समर्पित था।**
2. उनके जीवन का दूसरा चरण **मानवता को अज्ञानता की दासता से मुक्ति दिलाने के लिए समर्पित था।**

स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

1. **पश्चिमी शिक्षा** : अरबिंदो की पूरी शिक्षा इंग्लैंड में हुई। वह कैंब्रिज गए और क्लासिक्स का अध्ययन किया। उनके पिता चाहते थे कि वह भारतीय सिविल सेवा में शामिल हों। हालाँकि, अरबिंदो पहले से ही भारत को स्वतंत्र देखने की इच्छा से प्रभावित थे और उन्होंने औपनिवेशिक प्रशासन में शामिल न होने का फैसला किया।
2. **बड़ौदा में:** भारत लौटने पर, वह बड़ौदा की सेवा में शामिल हो गए और 1906 तक वहीं रहे। **उन्होंने इंदु प्रकाश के लिए लेख लिखे, 'न्यू लैंप्स फॉर ओल्ड' नाम से कॉलम लिखे और स्वतंत्रता की राजनीति में सक्रिय रुचि लेना शुरू कर दिया। संघर्ष।** उन्होंने पर्दे के पीछे से काम किया क्योंकि बड़ौदा में उनकी स्थिति उन्हें प्रत्यक्ष राजनीतिक गतिविधि से रोकती थी। उन्होंने लोकमान्य तिलक और सिस्टर निवेदिता से संबंध स्थापित किये।

3. **कलकत्ता में** : वह बंगाल नेशनल कॉलेज के पहले प्रिंसिपल के रूप में लौटे **और भारतीय युवाओं के लिए राष्ट्रीय शिक्षा पर प्रभाव डालना शुरू किया।** स्वदेशी आंदोलन में उनकी बढ़ती भागीदारी के कारण उन्होंने इस पद से इस्तीफा दे दिया।

4. भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता पर जोर देने वाले पहले राष्ट्रवादी नेताओं में से एक। उन्होंने **चरमपंथी वैचारिक स्पेक्ट्रम की सदस्यता ली और निष्क्रिय क्रांति और असहयोग की वकालत की।** वह **अनुशीलन समिति से जुड़े थे और गुप्त क्रांतिकारी गतिविधि शुरू की थी।**

5. **अलीपुर बम षडयंत्र मामला** : उन्हें अलीपुर बम षडयंत्र में गिरफ्तार किया गया था, जिसके बाद उन्होंने **अपनी राजनीति को राष्ट्रीय लक्ष्य से मानवता की मुक्ति के लिए बदल दिया।** इस प्रकार, उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि कैसे जेलें मनुष्य को आध्यात्मिक पथ पर परिवर्तित कर सकती हैं।

उनके प्रारंभिक चरण के दौरान विचार

1. **सांस्कृतिक और आध्यात्मिक राष्ट्रवाद** : उनके लिए भारत उनकी माँ के समान था और इसलिए वे उसके प्रति अत्यधिक समर्पित थे। **उन्होंने भारत को मातृदेवी के रूप में महिमामंडित किया।** उनके लिए राष्ट्रवाद महज एक राजनीतिक आंदोलन नहीं था, बल्कि राष्ट्रवाद एक धर्म की तरह था।

2. **स्वराज और स्वदेशी के आदर्श** : भारतीयों द्वारा स्वराज अर्थात स्वशासन केवल आर्थिक और राजनीतिक प्रकृति का नहीं था, बल्कि अरबिंदो का मानना था कि दुनिया को भारतीय स्वतंत्रता की उतनी ही आवश्यकता है जितनी भारत को अपने लिए है। उन्होंने भौतिक प्रगति के लिए पश्चिम की सराहना की लेकिन उसे आध्यात्मिक रूप से वंचित पाया। इस प्रकार उन्होंने **न केवल अपने लिए बल्कि पश्चिम और समग्र विश्व की मुक्ति के लिए भारत की स्वतंत्रता की वकालत की।**

3. **उन्होंने निम्नलिखित कारणों से भारत की स्वतंत्रता की वकालत की** :

4. मनुष्य के विकास की प्रक्रिया भौतिक उन्नति की तुलना में आध्यात्मिक एवं नैतिक क्षेत्र में अधिक महत्वपूर्ण है।

5. **उन्होंने भौतिक प्रगति के लिए पश्चिम की सराहना की** लेकिन उसे आध्यात्मिक रूप से वंचित पाया।

6. इस प्रकार उन्होंने न केवल अपने लिए बल्कि पश्चिम और समग्र विश्व की मुक्ति के लिए भारत की स्वतंत्रता की वकालत की।

- **निष्क्रिय प्रतिरोध** : अरबिंदो अच्छी तरह से जानते थे कि ब्रिटिशों की सैन्य शक्ति को देखते हुए उन्हें सैन्य रूप से हटाना लगभग असंभव था। निष्क्रिय प्रतिरोध से उनका तात्पर्य ब्रिटिश प्रशासन पर भारत की निर्भरता को कम करके ब्रिटिश शासन के प्रति **' संगठित रक्षात्मक प्रतिरोध' से था। इसमें दो चीजें शामिल थीं:**
- **रचनात्मक गतिविधियाँ** जैसे सरकार के समानांतर ज़रूरत के संस्थान बनाना जैसे स्कूल खोलना, स्थानीय सामुदायिक अदालतें आदि।
- **विदेशी विद्यालयों एवं विदेशी न्यायालयों का विरोध आदि** ।
- इस प्रकार, निष्क्रिय प्रतिरोध का अर्थ केवल स्वदेशी की स्थापना नहीं था, बल्कि साथ ही विदेशियों का प्रतिरोध भी था। निष्क्रिय प्रतिरोध एक नए प्रकार का संघर्ष था जिसमें दंगों, हत्याओं या सशस्त्र विद्रोहों से जुड़े सक्रिय संगठित प्रतिरोध की तुलना में **अधिक साहस,** सहनशक्ति और सहन करने की क्षमता की आवश्यकता होती थी।
- **इस प्रकार, स्व-सहायता और बहिष्कार, दो पूरक रणनीतियाँ** , निष्क्रिय प्रतिरोध के तरीकों को जारी रखती हैं।

बाद के जीवन में विचार

1. **मानवीय एकता** : uHum **मानवीय एकता तर्क की विजय और विफलता दोनों का प्रतिनिधित्व करती है।** इस अवस्था में मनुष्य सामूहिक रूप से अधिक गहराई और उद्देश्यपूर्ण ढंग से जीना शुरू कर देता है। यहां से मानव जाति को आध्यात्मिक समाज की प्राप्ति की ओर आगे बढ़ना चाहिए। यह एकता राज्य या किसी अन्य संगठन द्वारा स्थापित यांत्रिक एकता नहीं होगी क्योंकि ऐसी यांत्रिक एकता विभिन्न समूहों की विविधता को नकारती है। यह एकता मानव समाज के नैतिक एवं आध्यात्मिक परिवर्तन से आयेगी।
2. **अभिन्न योग: अरबिंदो का तर्क है कि दिव्य ब्रह्म दिव्य खेल के माध्यम से अनुभवजन्य वास्तविकता के रूप में प्रकट होता है।** अरबिंदो का तर्क है कि मानव प्रजाति के महान प्राणियों में विकसित होने से दुनिया एक बेहतर जगह बन सकती है, जैसे मनुष्य जानवरों से विकसित हुए हैं। मानव विकास की वर्तमान स्थिति किसी प्राणी के विकास में एक मध्यवर्ती चरण है।
3. **सुपरमाइंड** : अरबिंदो के अनुसार, **सुपरमाइंड अव्यक्त ब्रह्म और व्यक्त जगत के बीच एक मध्यस्थ शक्ति है** । सुपरमाइंड हमारे लिए पूरी तरह से विदेशी नहीं है और इसे अपने भीतर महसूस किया जा सकता है क्योंकि यह हमेशा दिमाग के भीतर मौजूद रहता है क्योंकि सुपरमाइंड पहले के समान है और इसे अपने भीतर एक क्षमता के रूप में समाहित करता है।

4. **एक सार्वभौमिक शहर बनाने के लिए पुडुचेरी में ऑरोविले की स्थापना की** , जहां सभी देशों के पुरुष और महिलाएं सभी पंथों, राजनीति और राष्ट्रीयताओं से ऊपर शांति और प्रगतिशील सद्भाव में रह सकें। ऑरोविले का उद्देश्य मानवीय एकता को साकार करना है।

गांधी पर अरबिंदो के विचार

- **गांधीवादी रणनीति की आलोचना** , और विशेष रूप से, अहिंसा को राष्ट्रीय पंथ के रूप में गांधी के आग्रह की।
- **खिलाफत आंदोलन** : खिलाफत आंदोलन को गांधीजी के समर्थन की आलोचना, अरबिंदो का मानना था कि इसका अंत केवल हिंदुओं और मुसलमानों के बीच विभाजन को मजबूत करने में ही हो सकता है।
- **द्वितीय विश्व युद्ध और क्रिप्स प्रस्ताव:** अरबिंदो ने दोनों पर ब्रिटिश स्थिति का समर्थन किया।
- **भगवद्गीता में वर्णित क्षत्रिय धर्म की प्राचीन अवधारणा की व्याख्या में तीव्र विरोधाभास था** । अरबिंदो का मानना था कि यदि कारण धर्म के अंतर्गत हो तो बल का प्रयोग पूरी तरह से उचित है। स्वतंत्रता संग्राम और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान गांधी की स्थिति के विपरीत, जिसके दौरान गांधी ने अंग्रेजों से आगे बढ़ती जर्मन सेना के सामने हथियार डालने की अपील की थी।

राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े महत्वपूर्ण व्यक्तित्व

आनंद मोहन बोस

- **इंडियन एसोसिएशन ऑफ कलकत्ता (1876), इंडियन नेशनल कॉन्फ्रेंस (1883) और इंडियन नेशनल कांग्रेस (1885) के संस्थापक सदस्य।**
- कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन (1898) की अध्यक्षता की।

अरुणा आसफ अली

- उपनाम **अरुणा गांगुली** , उन्होंने **अमेरिका में भारत के पहले राजदूत आसफ अली से शादी की।**
- उन्हें **सविनय अवज्ञा आंदोलन** (1930, 1932) के दौरान और व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940) में भाग लेने के कारण जेल में डाल दिया गया था।
- 1942 में , उन्होंने **मुंबई के गोवालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का झंडा तिरंगा फहराया।**
- **1958 में दिल्ली के पहले मेयर** के रूप में चुने गए।

- 1964 में अंतर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- **समाचार पत्र- लिंक और पैट्रियट।**

बदरुद्दीन तैयबजी

- वह **बंबई के पहले बैरिस्टर थे** ।
- **बॉम्बे बेंच** में नियुक्त हुए और **दूसरे भारतीय मुख्य न्यायाधीश बने।**
- **उन्होंने तिलक की** पत्रिका केसरी में उनके देशद्रोही लेखों के मामले की वकालत की।
- (1882) और कांग्रेस (1885) **के संस्थापक सदस्य** ।
- **मद्रास में कांग्रेस के तीसरे अधिवेशन की** अध्यक्षता की ।
- मुसलमानों के आधुनिकीकरण पर जोर दिया और बॉम्बे स्थित अंजुमन-ए-इस्लाम के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

सीआर दास

- **पेशे से वकील** , उन्होंने अलीपुर बम षडयंत्र मामले में अरबिंदो का बचाव किया।
- जलियांवाला बाग हत्याकांड की जांच के लिए गठित **कांग्रेस जांच समिति के सदस्य थे** ।
- उन्होंने **1923 में अखिल भारतीय स्वराज पार्टी की स्थापना की।**
- उन्हें **1924 में कलकत्ता को-ऑपरेशन के पहले मेयर के रूप में चुना गया था** ।
- हिंदू-मुस्लिम सहयोग के लिए दास फॉर्मूला तैयार किया।
- **उनका उपनाम देशबंधु चित्तरंजन रखा गया।**
- **लिखा** : **मालंचा (कविताएं), माला, अंतर्यामी , किशोर-किशोरी और सागर-संगीत।**
- **समाचार पत्र: नारायण (बंगाली मासिक) और फॉरवर्ड** ।

दादाभाई नौरोजी

- **1906 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में 'स्वराज' की मांग करने वाले प्रथम व्यक्ति।**
- **शीर्षक - "इंडियन ग्लैडस्टोन," "ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया।"**
- **लिबरल पार्टी के टिकट पर "हाउस ऑफ कॉमन्स" के लिए चुने जाने वाले पहले भारतीय।**

- **"पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया" (1901)** में अंग्रेजों द्वारा भारत से धन की निकासी और इसके प्रभाव पर प्रकाश डाला।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

- **स्वदेशी आंदोलन (बिहारी छात्र सम्मेलन की स्थापना), चंपारण सत्याग्रह, एनसीएम, सीडीएम और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया।**
- **पटना में नेशनल कॉलेज की स्थापना की।**
- अंतरिम सरकार में खाद्य और कृषि के प्रभारी मंत्री (1946)।
- **संविधान सभा के अध्यक्ष.**
- **भारतीय गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति.**
- **1962 में 'भारत रत्न' से सम्मानित।**
- **समाचार पत्र - देश (हिन्दी साप्ताहिक)।**

गोपाल कृष्ण गोखले

- **गांधीजी उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते थे।**
- **1905 में कांग्रेस के बनारस अधिवेशन के अध्यक्ष** , जिसने स्वदेशी आंदोलन का समर्थन किया।
- राष्ट्रीय मिशनरियों के रूप में काम करने वाले लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए **1905 में सर्वेंट्स ऑफ इंडियन सोसाइटी की स्थापना की।**

मदन मोहन मालवीय

- **पेशे से एक उदारवादी नेता और वकील** , उन्होंने कई कार्यकालों तक प्रांतीय और केंद्रीय विधायिका में सेवा की।
- **उनके प्रयासों से जलियांवाला बाग स्थल पर एक स्मारक बनाया गया।**
- **1926 में नेशनलिस्ट पार्टी की स्थापना की।**
- बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त।
- **हिंदुस्तान, अभ्युदय एवं इंडियन यूनियन पत्रों के संपादक**

मोतीलाल नेहरू

- **पेशे से वकील** , मोतीलाल 1916 में होम रूल आंदोलन के सक्रिय समर्थक बन गए और उन्होंने '**द इंडिपेंडेंट' पत्रिका शुरू की।**
- जलियांवाला बाग नरसंहार की जांच करने वाले **कांग्रेस आयोग का नेतृत्व किया ।**
- **उन्होंने एनसीएम के दौरान अपनी प्रैक्टिस छोड़ दी और प्रिंस वेल्स की यात्रा के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।**
- **उन्होंने सीआर दास के साथ मिलकर स्वराज पार्टी की स्थापना की।**
- **उन्होंने आनंद भवन का नाम बदलकर स्वराज भवन कर दिया और इसे कांग्रेस को उपहार में दे दिया।**

मोहम्मद अली जिन्ना

- **गोपाल कृष्ण गोखले के विचारों** से प्रेरित ।
- 1906 में, **उन्होंने मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों के खिलाफ एक ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए** ।
- 1913 में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग में शामिल हुए और लखनऊ समझौते पर हस्ताक्षर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 1917 में एनी बेसेंट के होम रूल आंदोलन में शामिल हुई।
- कांग्रेस से उनके मतभेद गांधीजी के कांग्रेस में प्रवेश के बाद शुरू हुए। **उन्होंने गांधीजी के एनसीएम का विरोध किया।**
- **1929 में उन्होंने अपनी चौदह सूत्रीय माँगें प्रस्तावित कीं।**
- **मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन (1940) में** मुसलमानों के लिए एक अलग राज्य की मांग करते हुए पाकिस्तान प्रस्ताव पारित किया गया। जिन्ना ब्रिटेन के साथ सभी वार्ताओं में लीग की मांग पर अड़े रहे।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

- वह एक **कवि, दार्शनिक, शिक्षाविद्, अंतर्राष्ट्रीयवादी और देशभक्त थे** ।
- उनके बड़े भाई, **सत्येन्द्र नाथ टैगोर, आईसीएस बनने वाले पहले भारतीय हैं** ।

- **उनकी पहली कविता 'अमृत बाज़ार पत्रिका' में प्रकाशित हुई और फिर उन्होंने ' बनाफुल ' (कहानी और ' भानुसिंहेर' लिखी) पदावली ' (गीत की श्रृंखला)।**
- **1901 में शांतिनिकेतन की** स्थापना की।
- **' लिखी** , जिसके लिए उन्हें 1913 में नोबेल पुरस्कार दिया गया।
- बंगाल विभाजन (1905) का विरोध करने के लिए **रक्षा बंधन उत्सव का उद्घाटन किया।**
- **विश्व भारती विश्वविद्यालय की** स्थापना की।
- 1915 में, **ब्रिटिश क्राउन ने उन्हें 'नाइटहुड' की उपाधि दी, जिसे उन्होंने जलियांवाला बाग नरसंहार के बाद त्याग दिया।**
- उनकी रचनाओं को दो देशों के राष्ट्रगान के रूप में चुना गया:
    - **भारत - जन गण मन**
    - **बांग्लादेश - आमार शोनार बांग्ला**

रासबिहारी बोस

- **बंगाल के एक क्रांतिकारी** बोस ने कम उम्र में ही उत्तर प्रदेश, दिल्ली और पंजाब में कई गुप्त गतिविधियाँ आयोजित कीं।
- **हार्डिंग बम केस और लाहौर षडयंत्र केस से जुड़े जिसके बाद वह जापान भाग गए।**
- **इंडिया इंडिपेंडेंस लीग की** स्थापना की और 1942 में बैंकॉक में इसका पहला सत्र आयोजित किया।
- **आईएनए के गठन के लिए कार्रवाई परिषद के अध्यक्ष के** रूप में कार्य किया और बाद में इसे सुभाष चंद्र बोस को सौंप दिया।
- बोस की मृत्यु 21 जनवरी, 1945 को टोक्यो में हुई।

सचिन्द्र नाथ सान्याल

- **रासबिहारी बोस के सहयोगी** , सान्याल ने संयुक्त प्रांत में 7वीं राजपूत रेजिमेंट के सैनिकों द्वारा विद्रोह का आयोजन किया।
- **हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के संस्थापक सदस्य** । 1925 में काकोरी षड़यंत्र केस में उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

सुभाष चंद्र बोस

- कटक, उड़ीसा डिवीजन, बंगाल प्रांत में जन्म।
- सरकार ने घोषणा की है कि **23 जनवरी** , सुभाष चंद्र बोस की जयंती, **हर साल साहस के दिन "पराक्रम दिवस" के रूप में मनाई जाएगी** ।
- **जर्मनी में आज़ाद हिंद फ़ौज के भारतीय सैनिकों से** उन्हें 'नेताजी' की उपाधि मिली ।
- बोस को प्रसिद्ध नारे का श्रेय दिया जाता है, " **तुम मुझे खून दो, और मैं तुम्हें आजादी दूंगा!" साथ ही "जय हिंद।"**
- **सिंगापुर से अपने संबोधन में महात्मा गांधी को "राष्ट्रपिता"** कहने वाले पहले व्यक्ति होने का श्रेय भी दिया जाता है ।
- सेवा छोड़ने के बाद सुभाष असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए लेकिन गांधीजी के अहिंसा के सिद्धांत से संतुष्ट नहीं थे **और उन्होंने स्वराजवादी पार्टी को संगठित करने के उद्यम में मोतीलाल और सीआर दास का समर्थन किया ।**
- 1921 में, बोस ने **बंगाल के एक शक्तिशाली राजनीतिज्ञ चित्तरंजन दास के अधीन काम किया। उन्होंने दास के अखबार फॉरवर्ड के संपादक के रूप में काम किया और बाद में अपना अखबार स्वराज शुरू किया।**
- वह **1927 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और पूर्ण स्वतंत्रता (पूर्ण स्वराज) के विचार का समर्थन किया।** उनके समर्थन से जवाहरलाल नेहरू ने 1929 में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित किया।
- 1930 के दशक के मध्य में बोस ने यूरोप की यात्रा की। उन्होंने शोध किया और अपनी पुस्तक **द इंडियन स्ट्रगल** का पहला भाग लिखा , जिसमें 1920-1934 के वर्षों में देश के स्वतंत्रता आंदोलन को शामिल किया गया था।
- अपनी वापसी के बाद, बोस ने 1938 (**हरिपुरा) में कांग्रेस के निर्वाचित अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला** और अयोग्य स्वराज (स्वशासन) और अंग्रेजों के खिलाफ बल के उपयोग के लिए खड़े हुए, जिसने तब महात्मा गांधी और उनके विचारों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- **बोस 1939 (त्रिपुरी) में फिर से चुने गए, लेकिन जल्द ही उन्होंने राष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया और ऑल-इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन किया** , जो कांग्रेस के भीतर एक गुट था, जिसका उद्देश्य राजनीतिक वामपंथ को मजबूत करना था।

- **1938 में जब बंगाल के हरिपुर में वार्षिक सत्र बुलाया गया तो** उन्हें कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में चुना गया। **उन्होंने विभिन्न वर्गों के बीच धन का समान वितरण सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय योजना समिति की स्थापना की। इस समिति ने भारत में आर्थिक नियोजन के युग की शुरुआत की।**
- उन्होंने महात्मा गांधी के साथ मतभेदों के कारण 1939 में इस्तीफा दे दिया और अखिल भारतीय फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की। इसके माध्यम से वह अपने आसपास के सभी कट्टरपंथी तत्वों को इकट्ठा करना चाहते थे, जो स्वतंत्रता संग्राम में उनकी सहायता करेंगे।

जय प्रकाश नारायण

- **बिहार के सिताब दियारा नामक** गांव में हुआ था , जहां अक्सर बाढ़ आती रहती थी, जिसके बाद उनका परिवार उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के एक गांव में चला गया।
- कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले में अध्ययन करने जाने से पहले, उन्होंने असहयोग आंदोलन में शामिल होने के लिए कॉलेज छोड़ दिया, **जहां वे कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रभावित थे** ।
- वह 1929 में भारत लौट आए और जवाहरलाल नेहरू के निमंत्रण पर और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के भाषण से आकर्षित होकर स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए।
- **जेपी आगे चलकर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (सीएसपी) के संस्थापक सदस्य बने, लेकिन आजादीके बाद उन्होंने इसे कांग्रेस से अलग कर लिया और सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया, जिसका जेबी कृपलानी की किसान मजदूर प्रजा पार्टी** के साथ विलय कर **प्रजा सोशलिस्ट पार्टी बनाई गई ।**
- **जबकि नेहरू चाहते थे कि जेपी केंद्र सरकार में शामिल हों, जेपी ने खुद को चुनावी राजनीति से दूर रखने की कोशिश की और इसके बजाय सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने का विकल्प चुना** उनका राजनीतिक दलों से मोहभंग हो गया और उन्होंने सामुदायिक लोकतंत्र का आह्वान किया। उनका मानना था कि पार्टियाँ केंद्रीकृत थीं और नैतिक तथा वित्तीय भ्रष्टाचार के प्रति संवेदनशील थीं।

सरदार वल्लभभाई पटेल

- 1913 में स्नातक कानून पाठ्यक्रम के बाद, पटेल भारत लौट आए और फिर **गोधरा में अपना अभ्यास स्थापित किया।**
- महात्मा गांधी के संपर्क में आने के बाद **वह उनके प्रबल अनुयायी बन गए** ।
- जल्द ही **, वह कांग्रेस पार्टी की गुजरात शाखा के सचिव बन गए और बाद में** किसानों पर कराधान के खिलाफ खेड़ा अभियान में भाग लिया **और** जल्द ही एक प्रमुख नेता बन गए।

- **खेड़ा अभियान (1918):** पटेल और उनके सहयोगियों ने किसानों को तब तक कर देने से इनकार करने के लिए राजी किया जब तक सरकार उनकी मांगें पूरी नहीं कर लेती। पटेल ने स्वयंसेवकों की एक सेना खड़ी की जिन्होंने इस काम में ग्रामीणों की मदद की। परिणामस्वरूप, सरकार पटेल से बात करने के लिए सहमत हुई और करों को एक वर्ष के लिए निलंबित कर दिया।

- **1920 में उन्हें गुजरात प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष चुना गया।**

- **पटेल ने असहयोग आंदोलन में गांधीजी का समर्थन किया और इसे संगठित करने का अथक प्रयास किया। चौरी** चौरा (1922) के मद्देनजर आंदोलन को स्थगित करने के फैसले पर उन्होंने गांधी का भी समर्थन किया।

- **झंडा सत्याग्रह** : उन्होंने 1923 में भारतीय ध्वज फहराने पर प्रतिबंध लगाने वाले कानून के खिलाफ **नागपुर** में सत्याग्रह का नेतृत्व किया।

- **बारडोली सत्याग्रह (1928):** पटेल ने क्षेत्र में बाढ़ और अकाल और सरकार द्वारा करों में भारी वृद्धि के मद्देनजर किसानों को कर देने से इनकार करने के लिए राजी किया। इस आंदोलन की सफलता के बाद उनके सहयोगियों द्वारा उन्हें 'सरदार' की उपाधि प्रदान की गई।

- **कराची अधिवेशन (1931) में कांग्रेस के अध्यक्ष:** नमक मार्च में भाग लेने पर पटेल को गिरफ्तार कर लिया गया (1930)। रिहाई के बाद और गांधी-इरविन समझौते का पालन करते हुए, उन्हें 1931 में कराची सत्र में कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। कराची सत्र के दौरान, 'मौलिक अधिकार और आर्थिक नीति' पर एक प्रस्ताव पारित किया गया।

- **विशेष रूप से केंद्रीय और प्रांतीय विधानसभाओं के लिए उम्मीदवारों के चयन में कांग्रेस के मुख्य धन संचयक और आयोजक थे।**

- उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन का भी समर्थन किया और 7 अगस्त 1942 को दिए एक भावनात्मक भाषण से लोगों को लड़ने के लिए प्रेरित किया।

- **उन्होंने विभाजन परिषद में भारत का प्रतिनिधित्व किया** जहां दो नए राष्ट्रों के बीच सार्वजनिक संपत्ति के विभाजन की देखरेख की गई।

- विभाजन के बाद, उन्होंने प्रभावित क्षेत्रों में व्यवस्था बहाल करने के लिए भारतीय सेना की दक्षिण भारतीय रेजिमेंटों को बुलाया, यह अच्छी तरह से जानते हुए कि पंजाब और दिल्ली की पुलिस बल, जो त्रासदी के बहुत करीब थे, पर भरोसा नहीं किया जा सकता था।

दक्षिण भारत की महत्वपूर्ण हस्तियाँ

दक्षिण भारत का योगदान ब्रिटिश उपनिवेश के अन्य हिस्सों से कम नहीं था। चूंकि दक्षिण भारत भी स्वतंत्रता के बारे में शिक्षा और राजनीतिक विचारों के समान विकास के दौर से गुजर रहा था, इस क्षेत्र के लोगों ने विभिन्न माध्यमों से **स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर भाग लिया।** निम्नलिखित कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तित्व हैं जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता में भाग लिया और योगदान दिया।

सी. राजगोपालाचारी (1879-1972)

- वह तमिलनाडु के एक राजनीतिज्ञ और वकील थे।
- उन्होंने एनसीएम के दौरान अपनी प्रैक्टिस छोड़ दी।
- **1921-1922 तक कांग्रेस के महासचिव और 1922 से 1924 तक कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य रहे** ।
- **उन्होंने तमिलनाडु में सीडीएम फहराया और** तंजौर तट पर त्रिचिनोपोली से वेदारन्नियम तक नमक मार्च का नेतृत्व करने के लिए गिरफ्तार किया गया ।
- 1937 के चुनावों में उन्हें मद्रास के मुख्यमंत्री के रूप में चुना गया।
- **क्रिप्स प्रस्ताव को स्वीकार न करने के कारण उन्होंने 1942 में कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया** ।
- उन्होंने **कांग्रेस-लीग सहयोग के लिए सीआर फॉर्मूला तैयार किया** ।
- उन्होंने बंगाल के राज्यपाल (अगस्त-नवंबर 1947) के रूप में कार्य किया और **भारत के पहले और आखिरी भारतीय गवर्नर-जनरल (1948-50) थे।**
- **वह देश की पहली कैबिनेट में गृह राज्य मंत्री बने।**
- उन्होंने **1959 में स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की।**
- **सत्यमेव जयते** संग्रह में परिलक्षित होते हैं ।
- **1954 में** उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया ।

सरोजिनी नायडू (1879-1949)

- **भारत की कोकिला "** के नाम से लोकप्रिय , उत्तर प्रदेश की एक राष्ट्रवादी और कवयित्री थीं।
- उन्होंने 1893 में डॉ. गोविंदराजुलु नायडू से शादी की।

- गोपाल कृष्ण गोखले के मार्गदर्शन में, **वह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली पहली महिला बनीं।**
- उन्होंने गांधीजी के साथ दांडी मार्च में भाग लिया और 1925 में कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- वह **उत्तर प्रदेश राज्य की राज्यपाल बनने वाली पहली महिला थीं।**
- **उनकी प्रसिद्ध कविताओं में शामिल हैं - द गोल्डन थ्रेशोल्ड (1905), द फेदर ऑफ द डॉन; द बर्ड ऑफ़ टाइम (1912) और द ब्रोकन विंग (1917)।**

सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1888-1975)

- **तमिलनाडु के एक शिक्षाविद्। वह भारत के कई शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े रहे।**
- **आंध्र विश्वविद्यालय (1931) और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (1942) के कुलपति के** रूप में कार्य किया।
- लंदन और ऑक्सफ़ोर्ड सहित अन्य विश्वविद्यालयों में धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र पर व्याख्यान दिए।
- 1946-50 तक यूनेस्को में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता, 1948 में इसके अध्यक्ष और 1952 में यूनेस्को के विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष।
- अंतर्राष्ट्रीय PEN के उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया।
- 1962 में, **उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र कांग्रेस में कलकत्ता विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।**
- वह दो बार भारत के उपराष्ट्रपति (1952-56 और 1957-62) चुने गए और 1962 से 1967 तक देश के राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया।
- **उनके जन्मदिन (5 सितम्बर) को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है।**
- **उनके कार्यों में शामिल हैं - वेदांत की नैतिकता और इसकी सामग्री पूर्वधारणा (1908); रवीन्द्रनाथ टैगोर का दर्शन (1918): जीवन का आदर्शवादी दृष्टिकोण (1932); पूर्वी धर्म और पश्चिमी विचार: भारतीय दर्शन और सभ्यता के भविष्य पर कल्कि।**

पिंगली वेंकैया

- **राष्ट्रीय ध्वज के डिजाइनर, वह महात्मा गांधी के कट्टर अनुयायी थे।**

- **राष्ट्रीय ध्वज को डिज़ाइन करने के बाद, इसे पहले संशोधित किया गया और कांग्रेस ध्वज के रूप में अपनाया गया और फिर इसे भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में संशोधित किया गया।**
- शिक्षा, भूविज्ञान और कृषि में एक प्राधिकारी।

तंगुतुरी प्रकाशम

- वह एक राजनीतिज्ञ और स्वतंत्रता सेनानी थे और मद्रास प्रेसीडेंसी के पहले मुख्यमंत्री थे।
- वह आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री भी रहे।
- वह एक स्थापित वकील थे लेकिन **स्वतंत्रता आंदोलन की ओर आकर्षित होने के कारण उन्होंने वकालत छोड़ दी ।**
- उन्हें 1928 में **साइमन कमीशन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के दौरान ब्रिटिश पुलिस के साथ बहादुरी से मुकाबला करने के लिए भी जाना जाता था।**

Veerapandiya कट्टाबोम्मन

- **18वीं शताब्दी में तमिलनाडु में एक बहादुर पोलिगार सरदार** , उन्होंने 60 साल पहले अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड़ा था जब भारत के उत्तरी हिस्से में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम शुरू हुआ था।
- **उन्हें पकड़ लिया गया और 1799 में फाँसी दे दी गई।**
- **Veerapandiya कट्टाबोम्मा करुथैया नायककर भारत के तमिलनाडु के पंचालंकुरिची के 18वीं सदी के एक साहसी पलायकरर ('पोलिगार') सरदार थे , जिन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की संप्रभुता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था।**

पुली थेवर

- दक्षिण भारत में ब्रिटिश शासन के शुरुआती विरोधियों में से एक।
- **अर्कोट के नवाब के साथ प्रतिशोध में शामिल थे,** जिन्हें अंग्रेजों का समर्थन प्राप्त था। थेवर के प्रमुख कारनामे मरुधनायगम के साथ उनके टकराव थे , जिन्होंने बाद में 1750 के दशक के अंत और 1760 के दशक की शुरुआत में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया था। नेलकातुमसेवल पुली थेवर का मुख्यालय था, जो अंग्रेजों का विरोध करने वाले भारत के पहले सरदार थे।

मारुथु पांडियार बंधु

- **पेरिया मारुथु और चिन्ना मारुथु ने 18वीं शताब्दी के अंतिम भाग के दौरान तमिलनाडु के शिवगंगई पर शासन किया और 10 जून, 1801 को त्रिची तिरुवरंगम मंदिर** , तमिलनाडु **से ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता की घोषणा करने वाले पहले व्यक्ति थे - उत्तर भारतीय विद्रोह से 56 साल पहले -** 1857 का सिपाही विद्रोह

भारत के बाहर भारतीयों का योगदान

व्यापार संबंधों में वृद्धि के साथ कई भारतीय विदेश में रहने लगे। हालाँकि, ब्रिटिश सत्ता द्वारा मूल भारतीयों पर कठिनाइयों की गंभीरता के परिणामस्वरूप यूरोप, **अमेरिका और अफ्रीका में अनिवासी भारतीयों में नफरत और पीड़ा पैदा हुई** । उन्होंने निरंकुश शासन के तहत भारतीयों के बारे में चिंताएँ बढ़ाने के लिए खुद को विभिन्न समूहों में एकजुट किया। **इनमें से कुछ व्यक्तित्व और उनके योगदान इस प्रकार हैं:**

इंडिया हाउस (इंडियन होम रूल सोसायटी)

- **यह एक अनौपचारिक भारतीय राष्ट्रवादी संगठन था** जो **1905 और 1910 के बीच लंदन में अस्तित्व में था।**
- इसकी शुरुआत **श्यामजी कृष्ण वर्मा ने की थी** .
- **मदन लाल ढींगरा** नाम के इंडिया हाउस के एक सदस्य द्वारा **विलियम हट कर्जन वायली की हत्या** के बाद इसके परिसमापन के बाद इंडिया हाउस एक शक्तिशाली संगठन नहीं रह गया ।
- इस घटना से हाउस की गतिविधियों पर लंदन पुलिस की कार्रवाई की शुरुआत हुई और श्यामजी कृष्ण वर्मा और भीकाजी कामा सहित इसके कई कार्यकर्ता और संरक्षक यूरोप चले गए जहां उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद के समर्थन में काम किया।
- **हरदयाल** सहित कुछ भारतीय छात्र संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए।
- सदन द्वारा स्थापित नेटवर्क प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारत में राष्ट्रवादी क्रांतिकारी साजिश में महत्वपूर्ण था।

ग़दर पार्टी

- ग़दर पार्टी मुख्य रूप से एक सिख संगठन था जिसका गठन **सोहन सिंह भकना और लाला हरदयाल ने** 1913 में सैन फ्रांसिस्को में किया था।
- पार्टी ने भारत के अंदर क्रांतिकारियों के साथ सहयोग किया और उन्हें हथियार और गोला-बारूद प्राप्त करने में मदद की।

- **सोहन सिंह भकना ग़दर पार्टी के पहले अध्यक्ष थे। पार्टी ने उर्दू और पंजाबी भाषा में हिंदुस्तानी ग़दर अखबार प्रकाशित किया।**
- **1914 में कोमागाटा मारू घटना ने** संयुक्त राज्य अमेरिका में रहने वाले कई हजार भारतीयों को अपना व्यवसाय बेचने और भारत में ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में भाग लेने के लिए घर जाने के लिए प्रेरित किया।
- **पार्टी के भारत, मैक्सिको, जापान, चीन, सिंगापुर, थाईलैंड, फिलीपींस, मलाया, इंडोचीन और पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका में सक्रिय सदस्य थे।**

बर्लिन समिति

- **भारतीय स्वतंत्रता के लिए बर्लिन समिति की** स्थापना **1915 में वीरेंद्र नाथ चट्टोपाध्याय द्वारा की गई थी, जिसमें जर्मन विदेश कार्यालय के पूर्ण समर्थन के साथ ज़िम्मरमैन योजना के तहत भूपेन्द्र नाथ दत्त और लाला हरदयाल शामिल थे।**
- **उनका लक्ष्य मुख्यत: निम्नलिखित चार उद्देश्यों को प्राप्त करना था:**
    - विदेशों में भारतीय क्रांतिकारियों को संगठित करना।
    - तैनात भारतीय सैनिकों के बीच विद्रोह भड़काना। विदेश।
    - भारत में स्वयंसेवक और हथियार भेजें।
    - यहां तक कि भारत की स्वतंत्रता हासिल करने के लिए ब्रिटिश भारत पर एक सशस्त्र आक्रमण का आयोजन करना भी

कोमागाटा मारू घटना

- **इसमें जापानी स्टीमशिप कोमागाटा मारू शामिल था,** जिस पर ब्रिटिश राज के नागरिकों के एक समूह ने 1914 में कनाडा में प्रवास करने का प्रयास किया था, लेकिन उन्हें प्रवेश से वंचित कर दिया गया और भारत के **कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) में जबरन लौटने पर, ब्रिटिश पुलिस द्वारा उन पर गोलीबारी की गई, जिसके परिणामस्वरूप** 20 सिखों की हत्या में. जहाज को **एक समृद्ध पंजाबी व्यवसायी (सिंगापुर के मछुआरे) गुरदित सिंह** द्वारा किराए पर लिया गया था।
- 1914 में पंजाब, ब्रिटिश भारत से 376 यात्रियों को लेकर **ब्रिटिश हांगकांग से शंघाई, चीन और योकोहामा, जापान होते हुए वैंकूवर, ब्रिटिश कोलंबिया, कनाडा के लिए रवाना हुआ।**

- उनमें से 24 को कनाडा में प्रवेश दिया गया, लेकिन अन्य 352 यात्रियों को कनाडा में उतरने की अनुमति नहीं दी गई और जहाज को भारत लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- यात्रियों में 340 सिख, 24 मुस्लिम और 12 हिंदू, सभी ब्रिटिश नागरिक शामिल थे।
- **यह 20वीं सदी की शुरुआत की कई घटनाओं में से एक थी जिसमें कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में बहिष्करण कानूनों का इस्तेमाल एशियाई मूल के अप्रवासियों को बाहर करने के लिए किया गया था।**

अन्य

- **प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, राजा महेंद्र प्रताप ने 1915 में अफगानिस्तान के काबुल में भारत की पहली अस्थायी सरकार की** स्थापना की। वह सरकार के अध्यक्ष थे और मौलवी बरकतुल्लाह प्रधान मंत्री थे। जर्मनी और रूस ने इस सरकार को मान्यता दी।
- **भीकाजी कामा एक स्वतंत्रता सेनानी और राजनीतिक कार्यकर्ता थीं** । उनका जन्म एक अत्यंत धनी पारसी परिवार में हुआ था। **उन्होंने भारत की आज़ादी के लिए अमेरिका और यूरोप से लेकर क्रांतिकारी आंदोलन का नेतृत्व किया। 1907 में स्टटगार्ट (जर्मनी) में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट कांग्रेस में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का पहला संस्करण फहराया** । उन्हें 'भारतीय क्रांति की जननी ' कहा जाता था। उन्होंने दादाभाई नौरोजी के निजी सचिव के रूप में कार्य किया।